

शोधनिर्देशक  
कृष्णप्रसाद घिमिरे  
(उपप्राध्यापक)

## आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिताको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र  
सङ्घायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुरको  
स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको  
प्रयोजनका लागि  
प्रस्तुत

### शोधपत्र

शोधार्थी

अञ्जु कोइराला  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर  
काठमाडौँ  
२०६५

# त्रिभुवन विश्वविद्यालय

नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रि.वि., कीर्तिपुर ।

मिति : २०६५।१।२

## स्वीकृतिपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय, नेपाली केन्द्रीय विभागकी छात्रा अञ्जु कोइरालाले स्नातकोत्तर तहको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पारेको आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिता शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र सोही प्रयोजनका लागि स्वीकृत गरिएको छ ।

.....  
(कृष्णप्रसाद घिमिरे)  
शोधनिर्देशक

.....  
(गङ्गाप्रसाद उप्रेती)  
बाह्य परीक्षक

.....  
(प्रा.राजेन्द्र सुवेदी)  
विभागीय प्रमुख

## मूल्याङ्कनका लागि सिफारिस

प्रस्तुत आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिता शीर्षकको शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्घायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभाग, नेपाली विषयको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको परिपूर्तिका लागि अञ्जु कोइरालाले मेरो निर्देशनमा तयार पार्नुभएको हो । यस शोधपत्रबाट म सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि नेपाली केन्द्रीय विभागसमक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०६५।९।.....

.....  
(कृष्णप्रसाद घिमिरे)  
शोधनिर्देशक

## कृतज्ञताज्ञापन

मैले आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिता शीर्षकको शोधपत्र शोधनिर्देशक कृष्णप्रसाद घिमिरेको निर्देशनमा गरेकी हुँ । प्रस्तुत शोधपत्र स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनार्थ तयार गरिए पनि सत्यताको नजिक रहेर गरिएकोले नेपाली साहित्य जगत्मा ठूलो महत्त्व राख्ने छ भन्ने मलाई लागेको छ ।

शोधको मर्मलाई नजिकबाट पहिचान गराई आफ्नो व्यस्त र अमूल्य समयको पनि पर्वाह नगरी उत्साहपूर्वक आवश्यक निर्देशन दिँदै अपूर्व सहयोग गर्नुहुने निर्देशक आदरणीय गुरु उपप्रा. कृष्णप्रसाद घिमिरेज्यूप्रति सर्वप्रथम हार्दिक कृतज्ञताज्ञापन गर्दछु । प्रस्तुत शीर्षकमा शोध गर्न सहज रूपमा स्वीकृति दिनुहुने त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाली केन्द्रीय विभागका विभागीय प्रमुख आदरणीय गुरु प्रा. राजेन्द्र सुवेदीज्यूप्रति म हार्दिक आभार व्यक्त गर्दछु । शोधपत्रको निम्ति प्रेरणा दिनुहुने नेपाली केन्द्रीय विभागका गुरुहरूप्रति म शब्दश्रद्धा व्यक्त गर्दछु ।

प्रस्तुत शोधपत्र तयार पार्ने क्रममा आवश्यक सामग्री सङ्कलन गर्ने सिलसिलामा चासो राखेर हरतरहबाट सहयोग गर्नुहुने शोधनायक आनन्ददेव भट्टज्यू प्रति म पूर्णतः आभारी छु । यसै गरी शोधपत्रकालागि प्रेरणा तथा उचित वातावरण उपलब्ध गराइदिने बुबा कृष्णप्रसाद कोइराला र आमा सीता कोइरालाप्रति हार्दिक कृतज्ञता-ज्ञापन गर्दछु ।

शोधकार्यको सन्दर्भमा विभिन्न किसिमका सहयोग गर्नुहुने मेरा मित्रहरू बन्दना शर्मा, देवेन्द्र नेपाल र मानबहादुर बोहोराप्रति आभार व्यक्त गर्दछु । यसै गरी प्रस्तुत शोधपत्रलाई यथासम्भव छिटोछरितो शुद्धतापूर्वक कम्प्युटर गरी सहयोग गर्नुहुने दाजु चिरञ्जीवी खड्काप्रति म कृतज्ञ छु ।

अन्त्यमा म प्रस्तुत शोधपत्रको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाली केन्द्रीय विभाग कीर्तिपुर समक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

शैक्षिक सत्र : ०६२/०६४

क्रमाङ्क : १०

मिति : २०६५।०।२८

.....

(अञ्जु कोइराला)

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर

# विषयसूची

मूल्याङ्कनका लागि सिफारिस  
स्वीकृतिपत्र  
कृतज्ञताज्ञापन

## परिच्छेद - एक

### शोधपरिचय

|      |                              |   |
|------|------------------------------|---|
| १.१  | शोधशीर्षक .....              | १ |
| १.२. | शोधपत्रको प्रयोजन .....      | १ |
| १.३. | विषय परिचय .....             | १ |
| १.४. | समस्याकथन .....              | २ |
| १.५. | शोधकार्यका उद्देश्यहरू ..... | २ |
| १.६. | पूर्वकार्यको समीक्षा .....   | ३ |
| १.७. | शोधकार्यको औचित्य .....      | ४ |
| १.८. | शोधविधि .....                | ५ |
| १.९. | सीमाङ्कन .....               | ५ |
| १.१० | शोधपत्रको रूपरेखा .....      | ५ |

## परिच्छेद - दुई

### आनन्ददेव भट्टको जीवनी र व्यक्तित्व

|       |  |    |
|-------|--|----|
| २.१.  | जीवनी .....                            | ७  |
| २.१.१ | जन्म, जन्मस्थान र बाल्यकाल .....       | ७  |
| २.१.२ | शिक्षा-दीक्षा .....                    | ८  |
| २.१.३ | दाम्पत्य जीवन र पारिवारिक स्थिति ..... | ९  |
| २.१.४ | लेखन प्रेरणा .....                     | १० |
| २.१.५ | लेखनको आरम्भ र प्रकाशनको थालनी .....   | ११ |

|         |                                  |    |
|---------|----------------------------------|----|
| २.१.६   | पुरस्कार/सम्मान .....            | ११ |
| २.१.७   | निष्कर्ष .....                   | १२ |
| २.२     | व्यक्तित्व .....                 | १२ |
| २.२.१   | शारीरिक व्यक्तित्व .....         | १३ |
| २.२.२   | साहित्यकार व्यक्तित्व .....      | १३ |
| २.२.२.१ | कवि व्यक्तित्व .....             | १४ |
| २.२.२.२ | निबन्धकार व्यक्तित्व .....       | १५ |
| २.२.२.३ | समीक्षक समालोचक व्यक्तित्व ..... | १५ |
| २.२.२.४ | अनुवादक व्यक्तित्व .....         | १६ |
| २.२.३   | प्राध्यापक व्यक्तित्व .....      | १६ |
| २.२.४   | राजनैतिक व्यक्तित्व .....        | १७ |
| २.२.५   | निष्कर्ष .....                   | १८ |

### परिच्छेद - तीन

#### निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय र आनन्ददेव भट्टको निबन्धयात्रा

|         |  |    |
|---------|--|----|
| ३.१.    | निबन्धको व्युत्पत्ति र अर्थ .....            | १९ |
| ३.१.१   | निबन्ध सम्बन्धी पूर्वीय दृष्टिकोण .....      | १९ |
| ३.१.२   | निबन्ध सम्बन्धी पाश्चात्य दृष्टिकोण .....    | २० |
| ३.२     | निबन्धको परिभाषा .....                       | २१ |
| ३.२.१   | पाश्चात्य विद्वान्हरूका विचारमा निबन्ध ..... | २१ |
| ३.२.२   | पूर्वीय विद्वान्हरूका विचारमा निबन्ध .....   | २३ |
| ३.३     | निबन्धका तत्त्वहरू .....                     | २६ |
| ३.३.१   | वस्तु .....                                  | २६ |
| ३.३.२   | शैली .....                                   | २७ |
| ३.३.२.१ | संयत शैली .....                              | २८ |
| क)      | भावुक शैली .....                             | २८ |
| ख)      | व्यङ्ग्य शैली .....                          | २८ |
| ग)      | समस्त शैली .....                             | २९ |
| घ)      | सरल शैली .....                               | २९ |

|         |   |    |
|---------|---|----|
| ३.३.३   | उद्देश्य .....                            | २९ |
| क)      | आत्मप्रकाशन .....                         | ३० |
| ख)      | सूचनात्मकता .....                         | ३० |
| ३.३.४   | निबन्धको वर्गीकरण .....                   | ३० |
| ३.४.१   | आत्मपरक निबन्ध .....                      | ३२ |
| क)      | भावात्मक निबन्ध .....                     | ३३ |
| ख)      | विचारात्मक निबन्ध .....                   | ३३ |
| ग)      | वैयक्तिक निबन्ध .....                     | ३४ |
| ३.४.२   | वस्तुपरक निबन्ध .....                     | ३४ |
| क)      | वर्णनात्मक .....                          | ३५ |
| ख)      | विवरणात्मक .....                          | ३५ |
| ३.५     | नेपाली निबन्धको विकासक्रम .....           | ३६ |
| ३.५.१   | नेपाली निबन्धको इतिहास .....              | ३६ |
| ३.५.२   | प्राथमिक काल (१८३१-१९५७) .....            | ३७ |
| ३.५.३   | माध्यमिक काल (१९५८-१९९१) .....            | ३८ |
| ३.५.४   | आधुनिक काल (१९९२-हालसम्म) .....           | ४० |
| ३.५.४.१ | पहिलो चरण (१९९२-२००३) .....               | ४१ |
| ३.५.४.२ | दोस्रो चरण (२००४-२०१९) .....              | ४२ |
| ३.५.४.३ | तेस्रो चरण (२०२०-हालसम्म) .....           | ४४ |
| ३.६     | आनन्ददेव भट्टको आगमन र निबन्धयात्रा ..... | ४७ |
| ३.६.१   | प्रथम चरण (२०१५-२०२९) .....               | ४८ |
| ३.६.२   | दोस्रो चरण (२०३०-२०५१) .....              | ४९ |
| ३.६.३   | तेस्रो चरण (२०५२-हालसम्म) .....           | ५० |
| ३.७     | निष्कर्ष .....                            | ५१ |

## परिच्छेद - चार

### विषयवस्तुका आधारमा निबन्धको वर्गीकरण र अध्ययन

|          |  |    |
|----------|--|----|
| ४.१.     | केही आत्मपरक निबन्धहरू कृति भित्रका निबन्धहरूको अध्ययन ..... | ५२ |
| ४.१.१    | भावप्रधान निबन्धहरू .....                                    | ५२ |
| ४.१.१.१  | नौलो विहान .....   | ५३ |
| ४.१.१.२  | निद्रा .....   | ५४ |
| ४.१.१.३  | कुरा काट्नु .....  | ५६ |
| ४.१.१.४  | आफ्नै मायाले छोएर .....                                      | ५८ |
| ४.१.१.५  | दरिद्र लेखक .....  | ५९ |
| ४.१.१.६  | खोइ के लेखुँ ? .....   | ६१ |
| ४.१.१.७  | समय .....  | ६२ |
| ४.१.१.८  | मनको एकाग्रता .....  | ६४ |
| ४.१.१.९  | आत्मसम्मान .....   | ६६ |
| ४.१.२    | विचारप्रधान निबन्धहरू .....                                  | ६७ |
| ४.१.२.१  | जीवनको आगो .....   | ६८ |
| ४.१.२.२  | परिचित अपरिचित .....   | ६९ |
| ४.१.२.३  | स्मरण-शक्ति .....  | ७१ |
| ४.१.२.४  | शिशिलता र घचघच्याइ .....                                     | ७२ |
| ४.१.२.४  | इमानदारी .....   | ७४ |
| ४.१.२.६  | के हामी आशावादी पाइलो सार्न सक्छौँ ? .....                   | ७५ |
| ४.१.२.७  | सेवा र सङ्घर्ष .....   | ७६ |
| ४.१.२.८  | एकाग्रता .....   | ७८ |
| ४.१.२.९  | प्रेरणाको स्रोत .....  | ७९ |
| ४.१.२.१० | इतिहास .....   | ८० |
| ४.१.२.११ | एउटा महत्त्वपूर्ण कुरा .....                                 | ८२ |
| ४.१.३    | राष्ट्रियतासम्बन्धी निबन्धहरू .....                          | ८३ |
| ४.१.३.१  | देशको माया .....   | ८३ |
| ४.१.३.२  | राष्ट्र वन्दना .....   | ८५ |
| ४.१.३.३  | देश निर्माण .....  | ८६ |

|          |  |     |
|----------|--|-----|
| ४.१.४    | व्यङ्ग्यात्मक निबन्धहरू .....                        | ८७  |
| ४.१.४.१  | गोम सर्प किन दूलोभित्र बस्छ ? .....                  | ८८  |
| ४.१.४.२  | आलु .....  | ८९  |
| ४.१.५    | प्रकृति चित्रण सम्बन्धी निबन्धहरू .....              | ९०  |
| ४.१.५.१  | सिमेन्ट .....  | ९०  |
| ४.१.५.२  | भर्री .....  | ९२  |
| ४.१.६    | प्रेम विषयक निबन्धहरू .....                          | ९३  |
| ४.१.६.१  | बासनाको भेल .....                                    | ९३  |
| ४.१.६.२  | प्रेम .....  | ९४  |
| ४.१.७    | शिक्षामूलक निबन्ध .....                              | ९६  |
| ४.१.७.१  | अध्ययन .....   | ९६  |
| ४.१.८    | नारी समस्या प्रधान निबन्ध .....                      | ९७  |
| ४.१.८.१. | लोग्ने मान्छे स्वास्नी मान्छे .....                  | ९७  |
| ४.२      | दृष्टिबिन्दु पुस्तक भित्रका निबन्धहरूको अध्ययन ..... | ९९  |
| ४.२.१    | वास्तविक ज्ञानको स्रोत .....                         | ९९  |
| ४.२.२    | व्यक्तित्व विकास .....                               | १०१ |
| ४.२.३    | चरित्र निर्माणको आवश्यकता .....                      | १०२ |
| ४.२.४    | आमा .....  | १०४ |
| ४.२.५    | बाहिरी किताब पढ्ने बानी .....                        | १०५ |
| ४.२.६    | परीक्षा र चोरी .....                                 | १०६ |
| ४.२.७    | विद्यार्थीकालको सम्झना .....                         | १०८ |
| ४.२.८    | पढ्ने बानी .....                                     | १०९ |
| ४.२.९    | खाजा .....   | १११ |
| ४.२.१०   | हामी बालक बालिकाहरू .....                            | ११२ |
| ४.२.११   | नयाँवर्ष .....                                       | ११२ |
| ४.२.१२   | भन्नु र गर्नु .....                                  | ११३ |
| ४.२.१३   | प्रजातन्त्र .....                                    | ११३ |
| ४.२.१४   | स्वागत छ, नयाँ युगलाई .....                          | ११४ |
| ४.२.१५   | मेरो देश .....                                       | ११४ |
| ४.२.१६   | संयम, सच्चरित्रता र विवेक .....                      | ११५ |
| ४.२.१७   | विद्यार्थी हृदय .....                                | ११५ |

|        |   |     |
|--------|---|-----|
| ४.२.१८ | प्यारा मुनाहरूलाई .....                               | ११६ |
| ४.२.१९ | पुरानो नीति .....                                     | ११६ |
| ४.२.२० | अनुशासन .....   | ११७ |
| ४.२.२१ | नानी शोभालाई पत्र .....                               | ११७ |
| ४.२.२२ | बालक .....  | ११८ |
| ४.२.२३ | मचाहिँ के बन्ने ? .....                               | ११९ |
| ४.२.२४ | विनय वा नम्रता .....                                  | ११९ |
| ४.२.२५ | प्रतिभाको खानीले पनि परिश्रमको बाइसै धारा खोज्छ ..... | १२० |
| ४.२.२६ | ठूलो मान्छे .....                                     | १२० |
| ४.२.२७ | दृष्टिबिन्दु .....                                    | १२१ |
| ४.२.२८ | योग्यताको जग हाल्नु .....                             | १२१ |
| ४.२.२९ | वीरत्व र सच्चरित्रता .....                            | १२२ |
| ४.२.३० | असल मानिस .....                                       | १२२ |
| ४.२.३१ | विद्यार्थी वर्ग र व्यक्तित्व विकास .....              | १२३ |
| ४.२.३२ | व्यक्तित्व विकास .....                                | १२३ |
| ४.२.३३ | जातीय एकता र राष्ट्रिय विकास .....                    | १२४ |
| ४.३.   | फुटकर निबन्धहरूको अध्ययन .....                        | १२४ |
| ४.३.१  | नमस्कार.....  | १२५ |
| ४.३.३  | अध्यात्म .....  | १२६ |
| ४.३.३  | गतिशीलता र चञ्चलता .....                              | १२७ |
| ४.३.४  | ब्रतबन्ध .....  | १२८ |
| ४.३.५  | कामवासना र जीवन .....                                 | १२९ |
| ४.३.६  | नदीका वारपार .....                                    | १२९ |
| ४.३.७  | एउटा प्रश्न .....                                     | १३० |
| ४.३.८  | त्यो तारा जो मेरो पोल्टोमा ओर्लिहाल्यो .....          | १३० |
| ४.३.९  | प्रतिभा र जीवन पद्धति.....                            | १३१ |
| ४.३.१० | बन्धन र मुक्ति .....                                  | १३१ |
| ४.३.११ | कुण्ठाका विरुद्ध .....                                | १३२ |
| ४.३.१२ | काम, माम र नाम .....                                  | १३२ |
| ४.३.१३ | उपवास .....   | १३३ |
| ४.३.१४ | सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् .....                         | १३४ |

|        |   |     |
|--------|---|-----|
| ४.३.१५ | मृत्यु पनि यति सरल हुन सक्तो रहेछ ..... | १३४ |
| ४.३.१६ | मानवसमूह .....                          | १३५ |
| ४.३.१७ | साहित्यमा चिन्तन .....                  | १३५ |
| ४.३.१८ | रूख र जङ्गल .....                       | १३६ |
| ४.३.१९ | लेखक बन्ने इच्छा .....                  | १३६ |
| ४.३.२० | जीवनको लक्ष्य .....                     | १३७ |
| ४.३.२१ | एउटा लोकतान्त्रिक छलफल .....            | १३८ |
| ४.३.२२ | काम गर तर फलको आशा नराख .....           | १३८ |
| ४.३.२३ | न खाइ सक्के, न थाइ सक्के .....          | १३९ |
| ४.४    | निष्कर्ष .....                          | १३९ |

### परिच्छेद - पाँच

|               |     |
|---------------|-----|
| उपसंहार ..... | १४१ |
|---------------|-----|

#### परिशिष्ट

- क) फोटो
- ख) व्यक्तिवृत्त
- ग) आनन्ददेव भट्टसँग सोधिएका प्रश्नहरू

#### सन्दर्भग्रन्थसूची

- क) पुस्तकसूची
- ख) पत्रिकासूची
- ग) शोधसूची

ख) व्यक्तिवृत्त

१. नाम : आनन्ददेव भट्ट
२. जन्मस्थान : सदरमुकाम खलङ्गा, जुम्ला जिल्ला, कर्णाली अञ्चल, नेपाल
३. जन्ममिति : संवत् १९९३ साल आश्विन २५ गते शनिवार  
सन् १९३६ सेप्टेम्बर १९
४. ठेगाना :  
क) स्याथी : अञ्चल वागमती जिल्ला काठमाडौँ इचंगुनारायण गा.वि.स. वडा नं.  
९ एराहिटी  
ख) पत्राचार गर्ने ठेगाना : टेलिफोन नं. ४८८०७४६  
४ (क) बमोजिमको ठेगानामा काठमाडौँमा पत्राचार गर्ने  
ग) पुख्र्यौली थलो : महाकाली अञ्चल, बैतडी जिल्ला, दशरथचन्द्र नगरपालिका वडा नं.  
४ पल्ला चौडली
५. आमाबाबुको नाम :  
क) आमा : हिरादेवी (भद्र) भट्ट  
ख) बाबुको नाम : स्व. जयदेव भट्ट (सर्वोच्च अदालतका न्यायाधीश)
६. विवाहित भए पति वा पत्नीको नाम : श्रीमती सुशीला (खरेल) भट्ट (सहप्राध्यापक (स्वे.  
अवकाश प्राप्त २०५८)
७. शिक्षा : एम्.ए. (अङ्ग्रेजी साहित्य) पटना विश्वविद्यालय, विहार, भारतबाट  
सन् १९६० संवत् २०१६ मा पोष्ट ग्राजुएट डिप्लोमा (पाठ्यक्रमबारे)  
सन् १९८२ मा लीड्स विश्वविद्यालयबाट (संयुक्त अधिराज्य)  
एम्.एड. (पाठ्यक्रम तथा विकासोन्मुख देशमा शिक्षा विषयमा) सन्  
१९८३ मा लण्डन विश्वविद्यालयबाट (संयुक्त अधिराज्य)
८. अनुभव सेवा
- ८.१ विश्व निकेतन हाई स्कूल, काठमाडौँको अङ्ग्रेजी विषयको शिक्षक (सं. २०१५ र २०१६)
- ८.२ प्राध्यापन : क) धनकुटा डिग्री कलेज (२०१७-२०१८) धनकुटा  
ख) महेन्द्र डिग्री कलेज (२०१८-२०२२) धरान, सुनसरी,  
ग) प्राचार्य, वीरेन्द्र इन्टर कलेज, भरतपुर, चितवन (२०२२ माघ-  
२०३० असार),

- घ) त्रि.वि. पाठ्यक्रम विकास केन्द्रमा काज (उपप्राध्यापक, २०३०  
श्रावण-२०३५ सम्म)
- ङ) त्यही उपनिर्देशक (२०३६-२०४५)
- च) अंग्रेजी केन्द्रीय शिक्षण विभाग, कीर्तिपुर, त्रि.वि.मा सहप्राध्यापक  
(२०४५-२०५०)
- छ) २०५० चैत ७ गतेदेखि स्वेच्छिक अवकास प्राप्त  
यसरी उच्च शिक्षामा शैक्षिक सेवा अवधि जम्मा ३३ वर्ष

९. प्रथम प्रकाशित रचना (प्रकाशन वर्षसहित)

कविता : 'म तैयार छु' इन्द्रेणी, वर्ष १, अङ्क ८, २०१३ वा कविता नौलो  
पाइलो बनारस, भारत २०१३

१०. कृतिहरू सिर्जनाहरू

क) प्रकाशित पुस्तक (प्रकाशन वर्षसहित)

- १) अब हिमालय बोल्छ (कवितासङ्ग्रह), २०१५
- २) ०९७ साल (खण्डकाव्य), २०१५
- ३) गुराँस (कवितासङ्ग्रह), २०१५
- ४) ओमर खैयामलाई जवाफ (काव्य), २०१६
- ५) जोवनकै थुम्कोबाट (काव्य), २०१६
- ६) आमा बोलाउँछिन (कवितासङ्ग्रह), २०१६
- ७) तिमीलाई देख्दा (काव्य), २०१७
- ८) साँहिली मैया (खण्डकाव्य), २०१८
- ९) यरो एलेक्साएभिन्न गागारिन (काव्य), २०१०
- १०) रामालोचनाका बाटोतिर, २०१९
- ११) हाम्रा प्रतिभाहरू (जीवनोपरक समीक्षा सङ्ग्रह), २०१९
- १२) जनताका शत्रु (हनरिक इब्सेनको नाटकका अनुवाद), २०२० (नेराप्रप्र)
- १३) जगतको सृष्टि र संचालन प्रक्रिया (दर्शन), सं. २०४६ सन् १९८९
- १४) प्रतिभा पहिचान (जीवनीपरक समीक्षा सङ्ग्रह), २०४७
- १५) जनताको साहित्य (साहित्य सिद्धान्त), २०४८ आश्विन
- १६) स्वतन्त्रता र कम्युनिष्टहरू (राजनीति), २०४८ कार्तिक

- १७) दृष्टिबिन्दु (किशोर साहित्य), २०४८) मंसिर
- १८) व्यावहारिक समालोचना, २०४८ माघ
- १९) केही आत्मपरक निबन्धहरू, २०४९ (साभा प्रकाशन)

#### पुस्तिकाहरू

- १) राष्ट्रिय राजनैतिक सहमति, २०४४
  - २) भाषिक अधिकार, २०४४
  - ३) नेपालको भाषा नीति, २०४४
  - ४) नेपाली र नेपालका अन्य भाषामाभको सम्बन्ध, २०४४
११. सम्पादन
- १) प्रेरणा : (साहित्यिक पत्रिका), २०२० धरान
  - २) पाठ्यक्रम विकास (पाठ्यक्रम विकास केन्द्र) त्रि.वि.को प्रकाशन (२०३५-२०४५)
  - ३) उत्साह (साहित्यिक पत्रिका) (२०४०-२०४६)
१२. अनुसन्धान विद्वद्वृत्ति
- १) शिक्षा दर्शनबारे त्रि.वि.प्रा.वि.केन्द्रमा १ वर्षे सेवाटिकल छुट्टी लिंदा प्रस्तुत गरेको शोधग्रन्थ (अप्रकाशित), २०४३
१३. सङ्घसंस्थामा संलग्नता
- १) प्रगतिशील लेखक संघ, नेपालको अध्यक्ष (२०५९ फागुनदेखि ३ वर्षको निमित्त)
  - २) नेपाल बुद्धिजीवी परिषद्को उपाध्यक्ष (२०५७-२०५९ सम्म)
  - ३) प्रगतिशील प्राध्यापक समूहको अध्यक्षको रूपमा (२०४९-२०५०)
  - ४) श्री पद्मकन्या विद्याश्रम (मा.वि.) (डिल्लीबजार, वडा नं. ३२, का.म.पा. काठमाडौँको संचालन समितिको अध्यक्ष (२०४७-२०४९) ३ वर्ष
  - ५) प्रतिगमनविरोधी स्रष्टाहरूको मञ्च (२०५९)
  - ६) लोकतान्त्रिक स्रष्टाहरूको संयुक्त मञ्च (२०६०)
  - ७) मानव अधिकार संरक्षण मञ्च, २०४७-२०५०
१४. पुरस्कार सम्मान -पुरस्कार सम्मान पाएको वर्षसहित)
- १) नेपाल नेशनल कलेज छात्रवृत्ति (एम.ए. तहको निमित्त) (२०१५ र २०१६)
  - २) प्रगतिशील प्राध्यापक समूहको सम्मानपत्र (२०५२)

- ३) युद्धप्रसाद मिश्र सम्मान पुरस्कार (२०५९-२०६०)
- ४) पद्मकन्या विद्याश्रम सम्मान (२०५९)
- ५) नेपाल सम्मान, २०६० (एभरेष्ट फाउन्डेसन नेपालद्वारा)
- ६) राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार (साहित्यतर्फ) २०६३)

१५. विदेशभ्रमण

- १) बेलाइत (संयुक्त अधिराज्य) (सन् १९८१-८३)
- २) पूर्व सोभियत संघ, फ्रान्स, बेल्जियम, हल्याण्ड (सबै १९८२)
- ३) दक्षिण अफ्रिका (सन् १९९६ र सन् २००१)
- ४) संयुक्त राज्य अमेरिका (सन् १९९८ र सन् २००१)
- ५) भारत (सन् १९६० र सन् १९७१)

१६. अन्य केही भए

- १) स्वदेशमा पचासभन्दा बढी जिल्लामा पैदल भ्रमण गरेको

मिति : २०६५।५।५

.....  
आनन्ददेव भट्ट

ग) आनन्ददेव भट्टसँग सोधिएका प्रश्नहरू

- १) तपाईंको जन्म कहिले र कहाँ भएको हो ?
- २) तपाईंका मातापिताको नाम के हो ?
- ३) तपाईंका दाजुभाइ र दिदीबहिनीहरू कति छन् ?
- ४) तपाईंका पिताजीको मुख्य पेशा के थियो ?
- ५) तपाईंले आफ्नो बाल्य र युवाकाल कुन कुन ठाउँमा कसरी बिताउनु भयो ?
- ६) तपाईंले प्राथमिक र माध्यमिक तहको शिक्षा कहिले, कहाँ र कसरी प्राप्त गर्नुभयो ।
- ७) उच्च शिक्षाका क्रममा तपाईंले कहाँबाट कुन स्तरसम्मको औपचारिक अध्ययन गर्नुभयो ?
- ८) औपचारिक अध्ययनका अतिरिक्त तपाईंले आफ्नो स्वाध्ययनलाई कसरी अधि बढाउनु भयो ?
- ९) तपाईंका छोराछोरी एवं नातिनातिनाहरू कति छन् ?
- १०) राजनीतितिर कहिलेदेखि लाग्नु भयो र त्यसमा लागेर केके गर्नुभयो ।
- ११) साहित्य सिर्जनामा कसरी लाग्नु भयो ? यसको प्रेरणा स्रोत के हो ?
- १२) आफ्ना निबन्धका बारेमा तपाईंको के टिप्पणी छ ?
- १३) तपाईंका निबन्धहरू कस्ता प्रकारका छन् ?
- १४) तपाईंका हालसम्म कतिओटा फुटकर निबन्धहरू प्रकाशित भएका छन् ?
- १५) तपाईंलाई आफ्ना निबन्धहरूमा सबभन्दा मनपर्ने निबन्ध कुन हो र किन ?

.....  
आनन्ददेव भट्ट

## परिच्छेद - एक

### शोधपरिचय

#### १.१ शोधशीर्षक

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिता रहेको छ ।

#### १.२. शोधपत्रको प्रयोजन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह नेपाली दोस्रोवर्ष दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पारिएको हो ।

#### १.३. विषयपरिचय

आनन्ददेव भट्ट नेपाली साहित्यका सुपरिचित व्यक्तित्व हुन् । उनको जन्म वि.सं. १९९३ साल आश्विन महिनाको २५ गते जुम्ला जिल्लाको सदरमुकाम खलङ्गामा भएको हो । भट्टको व्यक्तित्वको पाटो मुख्य गरी साहित्यिक र राजनैतिक खालको छ । सानै उमेरदेखि साहित्यतर्फ रुचि भएपनि वि.सं. २०१३ सालमा **इन्द्रेणी** पत्रिकाको वर्ष १ अङ्क ८ मा प्रकाशित 'म तैयार छु' (२०१३) कविताहरूबाट नै उनको औपचारिक रूपमा साहित्यिक प्रतिभा प्रस्फुटित भएको हो । कविताबाट साहित्यिक लेखनको शुरुआत गरेका भट्टले कविता काव्य, कथा, एकाङ्कीनाटक, निबन्ध, समीक्षा, समालोचना र अनुवादका क्षेत्रमा योगदान दिएका छन् । भट्टका पुस्तकाकार कृतिका रूपमा अहिलेसम्म उन्नाइसओटा कृतिहरू प्रकाशित भैसकेका छन् ।

आनन्ददेव भट्टको हालसम्म एकमात्र निबन्धसङ्ग्रह **केही आत्मपरक निबन्धहरू** (२०४९) का साथै २०४८ सालमा 'दृष्टिबिन्दु' नामक विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित फुटकर निबन्धहरूको सङ्कलन गरिएको पुस्तक पनि प्रकाशित भएको छ । भट्टले प्रशस्त मात्रामा फुटकर निबन्धहरूको पनि रचना गरेका छन् । उनको पहिलो प्रकाशित निबन्ध 'व्रतबन्ध' (धरती २०१५) हो । भट्टका **केही आत्मपरक निबन्धहरू** निबन्धसङ्ग्रहमा जम्मा एकतीस ओटा निबन्धहरू र **दृष्टिबिन्दु**

पुस्तकभित्र जम्मा तेतीसओटा निबन्धहरू सङ्कलित छन् । उनका निबन्धहरू समसामयिक सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित प्रगतिशील विचारमा आस्थावान देखिन्छन् । उनले आफ्ना निबन्धहरूमा विषयवस्तुलाई निजात्मक ढङ्गले गतिशीलता प्रदान गरेका छन् भने भौतिकवादी यथार्थवादी र जीवनवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् । सरल, सहज, स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोगका साथै उनका निबन्धहरू लघु आकारका रहेका छन् ।

#### १.४ समस्याकथन

आधुनिक नेपाली साहित्यको क्षेत्रमा ख्यातिप्राप्त साहित्यकार आनन्ददेव भट्ट निजात्मक निबन्धकार हुन् । भट्टको निबन्धकारिता र उनका निबन्धहरूको विस्तृत व्याख्या, विश्लेषण र विवेचनामा केन्द्रित रहने यो शोधपत्र निम्नलिखित मुख्य शोधसमस्याको विवेचनामा केन्द्रित रहेको छ :

- क) निबन्धकार आनन्ददेव भट्टको निबन्धात्मक यात्रा कस्तो रहेको छ ?
- ख) विषयवस्तु, भाषाशैली र उद्देश्यका आधारमा भट्टका निबन्धहरू कुन स्तरका मानिन्छन् ?
- ग) आधुनिक नेपाली निबन्धका फाँटमा उनको स्थान कस्तो रहेको छ ?
- घ) भट्टको समग्र निबन्धकारिताको प्राप्ति के हो ?

#### १.५. शोधकार्यको उद्देश्यहरू

यस शोधकार्यका मूलभूत उद्देश्यहरूलाई यसरी बुँदागत रूपमा देखाउन सकिन्छ :

- क) आनन्ददेव भट्टको निबन्धात्मक यात्रालाई चरणबद्ध रूपमा अङ्कित गर्नु,
- ख) भट्टका निबन्धलाई विषयवस्तु, भाषाशैली र उद्देश्यका आधारमा स्तरनिर्धारण गर्नु,
- ग) आधुनिक नेपाली निबन्धका फाँटमा भट्टको स्थान अङ्कन गर्नु,
- घ) भट्टको समग्र निबन्धकारिताको मूल्याङ्कन गर्नु

## १.६ पूर्वकार्यको समीक्षा

आनन्ददेव भट्टले साहित्यिक लेख रचनाहरूका अतिरिक्त विभिन्न पत्रपत्रिकाको सम्पादन कार्यद्वारा नेपाली भाषा र साहित्यको विकासमा महत्त्वपूर्ण योगदान गरेका छन् । भट्टको निबन्धको समग्र मूल्याङ्कन र विश्लेषण हालसम्म हुन सकेको छैन । भट्टका निबन्ध, निबन्धकार भट्ट र उनका साहित्यिक लेख रचनाका सम्बन्धमा भएका अध्ययन र विश्लेषणका सामग्रीलाई कालक्रमिक रूपमा यसरी प्रस्तुत गरिएको छ :

- भैरव अर्यालले 'साभा निबन्ध' (२०२५) मा आनन्ददेव भट्टको "नमस्कार" निबन्ध सङ्कलित गरेका छन् ।
- रामलाल अधिकारीले 'नेपाली निबन्धयात्रा' (२०३२) मा आनन्ददेव भट्टको 'नमस्कार' निबन्धलाई राम्रो निबन्धको कोटीमा राखेका छन् ।
- तारानाथ शर्माले 'नेपाली निबन्धको पच्चीस वर्ष' (२०३९) मा निबन्धको फाँट शीर्षक दिएर आनन्ददेव भट्टलाई तेस्रो फाँटमा यथार्थवादी निबन्ध परम्परालाई अघि बढाउने निबन्धकारको रूपमा उल्लेख गरेका छन् ।
- राजेन्द्र सुवेदीले 'स्रष्टा सृष्टि : द्रष्टा दृष्टि' (२०४३) मा नेपाली निबन्धकारहरूको परिचय दिने क्रममा आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिताको बारेमा सङ्क्षिप्त चर्चा गरेका छन् ।
- इन्दिरा अधिकारीले 'आनन्ददेव भट्ट : जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्व' (२०४६) को अप्रकाशित शोधपत्रमा भट्टको जीवनी व्यक्तित्वको साथै २०४६ पूर्वको कृतित्वको बारेमा सङ्क्षिप्त रूपमा चर्चा गरेकी छन् ।
- शिव रेग्मीले 'केही आत्मपरक निबन्धहरू' (२०४९) निबन्ध सङ्ग्रहको भूमिकामा समसामयिक र प्रगतिशील विचारका यी निबन्धहरू अत्यन्त सफल, सारगर्भित र चिन्तनशील छन् भनेका छन् ।
- घटराज भट्टलाईले 'नेपाली साहित्यकार परिचय कोश' (२०५१) मा साहित्यकारहरूको परिचय दिने क्रममा आनन्ददेव भट्टको छोटो परिचयका साथै उनका प्रकाशित कृतिहरूको नाम पनि उल्लेख गरेका छन् ।

- खगेन्द्रप्रसाद लुइटेले र देवीप्रसाद गौतमले 'नेपाली निबन्ध' (२०५४) मा आनन्ददेव भट्टको 'नमस्कार' निबन्ध सङ्कलित गरेका छन् । यसमा आनन्ददेव भट्टको सङ्क्षिप्त जीवनी, उनका प्रकाशित कृतिहरू र उनको निबन्धकारिताको बारेमा छोटो चर्चा गरिएको छ ।
- रविलाल अधिकारीले 'गरिमा' वर्ष ९, अङ्क ४ पूर्णाङ्क १००, वि.सं. २०४७ मा 'नेपाली निबन्धको विकास' शीर्षकमा आनन्ददेव भट्टलाई दार्शनिक तत्त्व भएका निबन्धकारका कोटिमा राखेका छन् ।
- धर्मराज अधिकारीले, 'आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन' (२०६४) मा 'आनन्ददेव भट्ट : जीवनीपरक अध्ययन' भन्ने शीर्षकमा भट्टलाई प्रगतिवादी निबन्ध परम्परामा स्थापित निबन्धकारका रूपमा परिचित गराएका छन् ।
- रविकिरण निर्जीवले 'आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन' (२०६४) मा 'एउटा ठूलो फाँटको खलेगरो : आनन्ददेव भट्ट' भन्ने शीर्षकमा भट्टलाई एउटा सिद्धहस्त निबन्धकारको रूपमा चिनाएका छन् ।

### १.७ शोधकार्यको औचित्य

आनन्ददेव भट्ट कवि, कथाकार, नाटककार, समालोचकका साथसाथै सशक्त निबन्धकार पनि हुन् तर भट्टका निबन्धमा विस्तृत र व्यवस्थित अध्ययन गरिएको छैन । यसकारण निबन्धकारिताका समग्रतामा उनलाई चिनाउने अध्ययनको आवश्यकता टड्कारो रूपमा देखिन्छ । यस शोधकार्यले यो आवश्यकताको पूर्तिमा सहयोग पुऱ्याउने छ । नेपाली साहित्यका पाठकहरूलाई भट्टका निबन्धका प्रवृत्तिहरूबारे जानकारी गराउँदै उनको आधुनिक नेपाली निबन्ध परम्परामा स्थान निरूपण गरिने हुँदा यस शोधकार्यबाट भट्टका निबन्धकलामा इच्छा राख्ने सबै पाठक लाभान्वित हुन सक्नेछन् ।

### १.८ शोधविधि

प्रस्तुत शोधकार्यलाई सम्पन्न गर्नको लागि मुख्य रूपमा पुस्तकालयीय विधिलाई नै सामग्री सङ्कलनको मूल आधार बनाइने छ । यसका अतिरिक्त शोध

निर्देशक, सम्बन्धित स्रष्टा, प्राध्यापकहरूसँग सम्पर्क राखी तथा अन्तर्वार्ता, प्रश्नाली आदि विधिबाट सामग्रीहरू जम्मा गरेर त्यसको विश्लेषणद्वारा निष्कर्ष निकालिनेछ ।

## १.९ सीमाङ्कन

प्रस्तुत शोधपत्रमा आनन्ददेव भट्टले केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्कलन गरेका एकतीस निबन्धहरूको विस्तृत रूपमा गर्नु नै यस शोधपत्रको क्षेत्र हो । उनको उक्त सङ्ग्रहका निबन्धहरूको विषयवस्तु, उद्देश्य र भाषाशैली आदिको अध्ययन नै यसको सीमा हो । यसका साथै उनका अन्य फुटकर निबन्धहरूको सामान्य अध्ययन गर्नु पनि यसको सीमा हो ।

## १.१० शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रलाई पाँच परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ । ती सबै परिच्छेदलाई दशमलव प्रणालीमा अङ्क मिलाई शीर्षक र उपशीर्षकमा विभाजन गरिएको छ । यस शोधपत्रको मुख्य रूपरेखा वा सङ्गठन यसप्रकार रहेको छ :

|               |   |   |
|---------------|---|---|
| परिच्छेद एक   | : | शोध परिचय   |
| परिच्छेद दुई  | : | आनन्ददेव भट्टको जीवनी र व्यक्तित्व                        |
| परिच्छेद तीन  | : | निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय र आनन्ददेव भट्टको निबन्धयात्रा |
| परिच्छेद चार  | : | विषयवस्तुका आधारमा भट्टका निबन्धको वर्गीकरण र अध्ययन      |
| परिच्छेद पाँच | : | निष्कर्ष  |

यसरी प्रस्तुत शोधपत्रलाई पाँच परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ र आवश्यकता अनुसार यसका प्रत्येक परिच्छेदलाई विविध शीर्षक र उपशीर्षकमा विभाजन गरी विषयको व्यापकतालाई समेट्ने प्रयत्न गरिएको छ ।

## परिच्छेद - दुई

### आनन्ददेव भट्टको जीवनी र व्यक्तित्व

#### २.१ जीवनी

कुनै पनि व्यक्तिको जीवन भोगाइलाई सिलसिलाबद्ध रूपमा प्रस्तुत गर्नु जीवनी हो । जीवनीमा इतिहासमा जस्तो कोरा विवरण र कथामा जस्तो कल्पनाको प्रबलता नभएर तटस्थता, वस्तुगतता र संयमितता हुनुपर्दछ । मानव प्राणीको जन्मदेखि मृत्युसम्मको समयावधि र त्यस अवधिभित्र घटेका घटनाक्रमलाई सामान्यतया जीवनी, जिन्दगी वा जिन्दगानी भनिन्छ । यही जीवनका घटनाक्रमको समष्टिलाई नै जीवनी भन्ने गरिन्छ ।<sup>१</sup> यसरी कुनै पनि व्यक्तिको जीवनसँग सम्बन्धित घटनाहरूको तथ्यपूर्ण प्रस्तुति नै जीवनीको मूल मर्म हो । यहाँ जीवनी अन्तर्गत साहित्यकार आनन्ददेव भट्टका जीवनक्रमसँग सम्बन्धित घटनाहरूको अध्ययन गरिएको छ ।

#### २.१.१ जन्म, जन्मस्थान र बाल्यकाल

आनन्ददेव भट्टको जन्म जुम्ला जिल्लाको सदरमुकाम खलङ्गामा वि.सं. १९९३ असोज २५ गते शनिबारका दिन पिता जयदेव भट्ट र माता हीरादेवी भट्टको कोखबाट जेठो सन्तानका रूपमा भएको हो ।<sup>२</sup> यिनको पुख्यौली थलो बैतडी जिल्लाको पल्ला चौडली (हालको दशरथचन्द्र नगरपालिका वडा नं. ४) हो । उनका बाबु जुम्ला अदालतमा मुखिया पदमा जागिरे भएका बेला त्यहीं नै उनको जन्म भएको थियो । यिनका चारजना भाइहरू एवम् दुईजना बहिनीहरू र आफू समेत गरी पाँच जना दाजुभाइ र दुई बहिनीहरू छन् । ती बाहेक एउटा भाइ भरत सानै उमेरमा बितेका थिए ।<sup>३</sup> यसरी सबैभन्दा जेठा सन्तानका रूपमा जन्मिएका आनन्ददेव भट्टको न्वारनको नाम डम्बरदेव भट्ट हो ।<sup>४</sup> पिता जयदेव भट्ट नेपाल

<sup>१</sup> भिक्टर प्रधान, नेपाली जीवन र आत्मकथाको सैद्धान्तिक तथा ऐतिहासिक विवेचना, (काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, २०४४), पृ. २८ ।

<sup>२</sup> आनन्ददेव भट्टले मिति २०६५।१।५ गते 'व्यक्तिवृत्त' मा दिएको लिखित जानकारीअनुसार ।

<sup>३</sup> आनन्ददेव भट्टले मिति २०६५।१।५ गते उहाँको निवास कालिकास्थानमा दिउँसो दिएको मौखिक जानकारी अनुसार ।

<sup>४</sup> ऐजन ।

सरकारको जागिरे भएर विभिन्न ठाउँमा सरुवा हुँदा भट्टले आफ्नो वाल्यकालीन जीवन एकै ठाउँमा बिताउन पाएनन् । सुशिक्षित, सुसंस्कृत पितामाताको रेखदेख एवं अभिभावकत्वमा हुर्किएका भट्टको पाँच वर्षसम्मको वाल्यकालमा तीनवर्ष जन्मस्थान खलङ्गामै र बाँकी दुई वर्ष बैतडी पल्ला चौडलीमा व्यतीत हुन्छ भने त्यसपछिको वाल्यकाल बाबु पाल्पा सरुवा भएकाले पाल्पा जिल्लामा सुख, सुविधाका साथ बितेको पाइन्छ ।<sup>५</sup>

## २.१.२ शिक्षादीक्षा

भट्टको अक्षराम्भ पाँच वर्षको उमेरमा घरैमा पण्डितजीको हातबाट भएको हो । उनका पिता न्यायधीश जयदेव भट्टको १९९८ सालमा पाल्पा सरुवा भएकाले उनी पनि बाबुसँगै पाल्पा आएको बेला उनको अक्षराम्भ भएको थियो । शिक्षित पिताको रेखदेखमा हुर्कन पाएका भट्टले वि.सं. १९९८ देखि नै पाल्पा तानसेनको भाषा पाठशालामा प्राथमिक शिक्षा हासिल गर्न थालेका हुन् ।<sup>६</sup> त्यसपछि उनले वि.सं. १९९९-२००० सम्म भाषा पाठशालामा अङ्ग्रेजी पढाउने प्राइभेट मास्टरहरूका घरदलानमा चलने स्कूलमा अङ्ग्रेजी शिक्षाको अनौपचारिक अध्ययनको आरम्भ गरे ।<sup>७</sup> वि.सं. २००४ सालमा पाल्पाको तानसेनमा पद्मोदय पाल्पा पब्लिक हाइस्कूल खुल्यो । त्यहाँ उनी ६ कक्षामा भर्ना गरिए र त्यहीँबाट २००६ सालमा उनले आठकक्षा पास गरे ।<sup>८</sup> आनन्ददेव भट्ट अध्ययनको निरन्तरताको लागि तेह्र वर्षको उमेरमा २००६ साल मार्गमा काठमाडौँ आए । अनि २००७ सालमा उनले काठमाडौँमा पनि पद्मोदय हाइस्कूलबाट नौ कक्षा पास गरे भने २००८ सालमा दरबार स्कूलमा भर्ना भई प्रवेशिकाको परीक्षा पास गरे ।<sup>९</sup> वि.सं. २००९ र २०१० सालमा उनी त्रिचन्द्र कलेजमा प्रवीणता प्रमाणपत्र तहमा अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र र नेपाली मूल विषय लिएर पढ्छन् र भारतको पटना विश्वविद्यालयबाट यो तह पास गर्छन् ।<sup>१०</sup> त्यसपछि उनले नेपाल नेशनल कलेज (हालको शंकरदेव क्याम्पस)

---

<sup>५</sup> ऐजन ।

<sup>६</sup> ऐजन ।

<sup>७</sup> ऐजन ।

<sup>८</sup> ऐजन ।

<sup>९</sup> ऐजन ।

<sup>१०</sup> ऐजन ।

बाट २०१४ सालमा स्नातकको पढाइ गरी भारतको पटना विश्वविद्यालयबाट अङ्ग्रेजी विषयमा स्नातकोत्तर तहको परीक्षा उत्तीर्ण गर्छन्।<sup>११</sup> उनले सन् १९८२ मा वेलायतको लिड्स विश्वविद्यालयबाट पाठ्यक्रम बारे पोष्ट ग्राजुयट डिप्लोमा र सन् १९८३ मा लन्डन विश्वविद्यालयबाट पाठ्यक्रम तथा विकासोन्मुख देशमा शिक्षा विषयमा स्नातकोत्तर (एम.एड्.) को डिग्री हासिल गर्छन्।<sup>१२</sup>

### २.१.३ दाम्पत्य जीवन र पारिवारिक स्थिति

आनन्ददेव भट्टको विवाह उनी अट्ठाइस वर्षको हुँदा वि.सं. २०२१ मङ्सिर २८ गतेका दिन पिता बालकृष्ण खरेल र माता टिकाकुमारी खरेलकी सुपुत्री सुश्री सुशीला खरेलसँग सुसम्पन्न भएको थियो।<sup>१३</sup> भट्टको विवाह धरानको बराह क्षेत्रमा सरल रूपमा कलश र गणेशको स्थापना गरेर दियोको प्रकाशमा माला, सिन्दुर र औठीको आदान प्रदानगरी प्रगतिशील दृष्टिकोण र पद्धति अनुरूप भएको थियो।<sup>१४</sup> विवाह पश्चात् उनको दाम्पत्य जीवन अतिनै राम्ररी बित्न थाल्यो। सुशील, शान्त र समझदार पत्नी सुशीलाको सहयोग र मायाका कारण जस्तोसुकै परिस्थितिसँग सामना गर्न परेपनि भट्ट सफल हुन्थे। भट्टको विवाह भएको एक वर्ष पछि २०२२ साल मार्ग एक गते पहिलो सन्तानका रूपमा सुशीलाका कोखबाट निर्भरदेव भट्टले जन्म लिन्छन् भने २०२३ साल माघ २१ गते कान्छो छोराको रूपमा सौरबदेव भट्टले जन्म लिन्छन्।<sup>१५</sup> दाम्पत्यको लामो अवधिमा उनका दुबै छोरा तर्फका गरी तीन नातिनी र एक नाति छन्।<sup>१६</sup> उनका दुई छोरा मध्ये जेठा निर्भरदेव भट्ट मेडिकल डाक्टर हुन् भने कान्छा सौरबदेव भट्ट पी.एच.डी उपाधिप्राप्त व्यक्ति हुन्।<sup>१७</sup>

यसरी वैवाहिक सम्बन्धपछिका दिनहरूमा यी दुई पतिपत्नी बीचको सम्बन्ध आपसी समझदारीमा पूर्ण र सुमधुर अवस्थामा रहेको देखिन्छ।

<sup>११</sup> आनन्ददेव भट्ट, व्यक्तिवृत्त, पूर्ववत्।

<sup>१२</sup> ऐजन।

<sup>१३</sup> आनन्ददेव भट्ट, पूर्ववत्।

<sup>१४</sup> सुशीला भट्ट, “वहत्तरौं वर्ष प्रवेशमा हार्दिक मंगलमय शुभकामना” आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन, सम्पा. शेषराज शिवाकोटी (काठमाडौं : ज्ञानगुण साहित्य प्रतिष्ठान, २०६४), पृ. ३८।

<sup>१५</sup> आनन्ददेव भट्ट, पूर्ववत्।

<sup>१६</sup> ऐजन।

<sup>१७</sup> ऐजन।

## २.१.४ लेखन प्रेरणा

पाल्पा बसाइँको समयमा भट्टले पाल्पाको भाषा पाठशाला र पद्मोदय पाल्पा पब्लिक हाइस्कूलमा पढाउने गुरु कवि माधवप्रसाद देवकोटा जस्ता साहित्य सिर्जनामा रूचि राख्ने व्यक्तिको शिक्षक र साहित्यिक व्यक्तित्वको छहारी प्राप्त गर्ने अवसर पाए । यसरी गुरुका रूपमा कवि देवकोटाको सामीप्य पाएका भट्टको किशोर मानसिकतामा साहित्य प्रतिको रूचि जाग्रत हुँदै गयो । आनन्ददेव भट्टले सर्वप्रथम यिनै कवि माधवप्रसाद देवकोटाबाट साहित्यिक प्रेरणा प्राप्त गरेका हुन् ।<sup>१८</sup> पाल्पामा पढ्दा गुरुका प्रेरणाले गर्दा फुर्सदको समयमा भट्ट त्यहाँको धवल पुस्तकालयमा जाने गर्दथे ।<sup>१९</sup> भट्टको २००६ सालमा काठमाडौँ आगमन पछि र विशेष गरी २००७ साल पछि नेपालका प्रसिद्ध साहित्यकारहरू लेखनाथ पौड्याल, बालकृष्ण सम, लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, सिद्धिचरण श्रेष्ठ, भवानी भिक्षु, हृदयचन्द्रसिंह प्रधान, माधवप्रसाद घिमिरे, महानन्द सापकोटा, श्यामदास वैष्णव जस्ता साहित्यकारहरूको सत्सङ्गतले गर्दा नै आनन्ददेव भट्ट साहित्य सिर्जनातर्फ प्रवृत्त भएको बुझिन्छ ।<sup>२०</sup>

---

<sup>१८</sup> ऐजन ।

<sup>१९</sup> इन्दिरा अधिकारी, आनन्ददेव भट्टको जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्व, अप्रकाशित, स्नातकोत्तर शोधपत्र, (त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभाग, २०४६), पृ. ३ ।

<sup>२०</sup> भीमदेव भट्ट, “आनन्द दाइ बारे मेरो अभिव्यक्ति”, आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन, पूर्ववत्, पृ. १४ ।

## २.१.५ लेखनको आरम्भ र प्रकाशनको थालनी

आनन्ददेव भट्टले वि.सं. २००८ देखिनै आफ्ना अनुभूतिहरू लेख्ने अभ्यास गर्न थालेको बुझिन्छ। अनि उनको सृजनाको प्रकाशन आरम्भ भने २०१३ सालमा पद्य विधाबाट सुरु भएको पाइन्छ। भट्टको सबैभन्दा पहिलो प्रकाशित कविताहरू वि.सं. २०१३ सालमा इन्द्रेणी पत्रिकाको वर्ष १ अङ्क ८ मा प्रकाशित 'म तैयार छु' र वनारसबाट प्रकाशित हुने 'नौलो पाइलो' २०१३ नामक पत्रिकामा प्रकाशित छन्।<sup>२१</sup> जे होस् २०१३ देखि उनले आफ्ना रचनाहरू विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित गर्न थाले। त्यसपछि उनले निरन्तर आफूलाई सृजनात्मक गतिविधिमा संलग्न तुल्याउँदै आएका छन्। उनको सृजना यात्रा कविता लेखनबाट आरम्भ भएर क्रमशः कथा, एकाङ्की नाटक, निबन्ध, समीक्षा, समालोचना अनुवादमा केन्द्रित हुन पुगेको देखिन्छ।

## २.१.६ पुरस्कार/सम्मान

भाषा, साहित्य र समाजसेवामा समर्पित व्यक्तिलाई राष्ट्रले सम्मानित र पुरस्कृत गर्ने गर्दछ। २१ वर्षको युवा अवस्थादेखि आफ्नो साहित्यिक प्रतिभाको प्रकाशन गर्न थालेका आनन्ददेव भट्टले केही पुरस्कार र सम्मान प्राप्त गरेका छन्। सर्वप्रथम उनले २०१५-२०१६ को शैक्षिक सत्रमा स्नातेकोत्तर तहको अध्ययन गर्दा नेशनल कलेज छात्रवृत्ति प्राप्त गर्दछन् भने प्रगतिशील प्राध्यापक समूहमा रही महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेका भट्टलाई २०५२ मा 'प्रगतिशील प्राध्यापक समूह सम्मान' प्राप्त गर्छन्।<sup>२२</sup> त्यस्तै गरी भट्ट 'युद्धप्रसाद मिश्र सम्मान पुरस्कार' (२०५९/६०), 'पद्मकन्या विद्याश्रम सम्मान' (२०५९) एभरेष्ट फाउन्डेसन नेपालद्वारा प्रदान गरिने 'नेपाल सम्मान' (२०६०) र 'राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार' (साहित्यतर्फ २०६३) बाट सम्मानित भएका छन्।<sup>२३</sup>

यसरी विभिन्न पुरस्कार/सम्मानद्वारा सम्मानित भट्टले युद्धप्रसाद मिश्र सम्मान पुरस्कारबाट प्राप्त पाँचहजार रुपैयाँ युद्धप्रसाद मिश्र प्रतिष्ठानलाई नै अध्यक्ष जनक हुमागाईको हातमा प्रदान गरेका थिए भने राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार (२०६३ मा घोषणा भए पनि २०६५ मा प्राप्त) बाट प्राप्त भएको रु. एकलाख पनि आफू

<sup>२१</sup> आनन्ददेव भट्ट, व्यक्तिवृत्त, पूर्ववत् ॥

<sup>२२</sup> ऐजन ।

<sup>२३</sup> ऐजन ।

सम्बद्ध रहेको प्रगतिशील लेखक संघलाई प्रलेस अध्यक्ष निनु चापागाईको हातमा प्रदान गरेर एउटा राम्रो उदाहरण प्रस्तुत गरेका छन् ।

## २.१.७ निष्कर्ष

नेपालको सुदुर पश्चिम जुम्ला जिल्लाको खलङ्गामा जन्मिएका भट्टको पुख्यौली थलो वैतडी हो । भट्ट एक सु-संस्कृत परिवारमा जन्मिएका थिए । अध्ययनको सिलसिलामा उनी पाल्पा, काठमाडौं, पटना (भारत) तथा अन्तर्राष्ट्रिय (वेलायत) सम्म पुगेर अध्ययन पूरा गर्छन् । वि.सं. २०१३ मा कविता विधाबाट प्रकाशन आरम्भ गरेका भट्टले आफ्नो कलमको गतिलाई तीब्र पाउँदै नेपाली साहित्यका विविध विधामा केही मूल्यवान् कृतिहरूको रचना गरेका छन् । जीवन सङ्गिनी सुशीला र दुई छोराका बाबु बनेका भट्ट सामान्य र सरल जीवन बिताउने चाहना राख्छन् र पहिले काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. ३२ कालिकास्थान केशरीमार्गमा बसोवास गरेका भए पनि हाल उनी काठमाडौं जिल्ला इचंगुनारायण गा.वि.स. वडा नं. ९ एराहिटीमा स्थायी बसोवास गरिरहेका छन् ।

## २.२ व्यक्तित्व

व्यक्ति विशेषका सन्दर्भमा स्पष्टरूपमा देखिने वाह्य रूपकृति र मानसिक धरातलबाट उपार्जित ज्ञानका विविध पक्षहरूको समष्टि नै व्यक्तित्व हो । व्यक्ति विशेषका अनुभव, ज्ञान, आस्था, भुकाउ, शिक्षादीक्षा मूल प्रवृत्ति तथा आर्जित गुण एवम् प्रवृत्तिहरूले व्यक्तित्व निर्माणमा सघाउ पुऱ्याउँदछ ।<sup>२४</sup> व्यक्ति जीवनीका विभिन्न पक्षको व्यक्तित्वको निर्माण गर्दछ । यिनै विभिन्न कोणबाट हेर्दा आनन्ददेव भट्टको व्यक्तित्वका विभिन्न पाटाहरूलाई तलका उपशीर्षकहरूमा हेर्न सकिन्छ ।

### २.२.१ शारीरिक व्यक्तित्व

आनन्ददेव भट्टको शारीरिक बनौट मझौला किसिमको देखिन्छ । पाँचफिट चार इन्च उचाइ भएका, पातलो पातलो खालको मझौला शरीर, भावुक अनुहार गहुँगोरो वर्ण, ठूलो निधार माथि फर्काएर कोरिएको केश चम्किला आँखा भएका भट्ट

<sup>२४</sup> दशरथ ओझा, समीक्षाशास्त्र, (दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्स, ई. १९७५), पृ. ३१ ।

स्वस्थ, गम्भीर र ओजिला देखिन्छन् ।<sup>२५</sup> सधैँ शान्त रहने, चाकडी चाप्लुसी गर्न पटककै मन नपराउने र अध्ययनशील स्वभाव यिनको सानैदेखिको बानी रहँदै आएको छ ।<sup>२६</sup> यिनी आडम्बरी प्रकृतिका छैनन् । यिनी राष्ट्रियताप्रति समर्पित भावना भएका साधा जीवन र उच्च विचार राख्ने, साँचो कुरा गर्न नडराउने र पदलोलुपता नभएका व्यक्ति हुन् ।<sup>२७</sup> केही बोल्नु पर्‍यो भने विचार गरेर मात्र बोल्ने र आफूलाई चित्त नबुझेका कुरा भनिहाल्ने तथा कहिले कहिले अलि झङ्ग रिसाए पनि चाँडै खुसी हुने भट्ट ज्यादै शिष्ट र विनयी स्वभावका छन् ।<sup>२८</sup> आफ्नै कुरामा जिद्धी गर्ने, अरूको कुरा सुनेर त्यसमा मनन गरी काम गर्नुको सट्टा आफ्नै कुरा मात्र भन्नु उहाँका कमजोरीहरू हुन् ।<sup>२९</sup> भावुक तथा अध्ययनशील स्वभावले होला उनी कैयन आवश्यक कुराहरू पनि बिर्सने बानीका पाइन्छन् ।

## २.२.२ साहित्यकार व्यक्तित्व

सामान्यतया कुनै पनि व्यक्तिका कृतिका आधारमा त्यस व्यक्तिको साहित्यिक व्यक्तित्व निर्धारण गरिएको पाइन्छ । साहित्यका विविध विधागत योगदानबाट स्रष्टा व्यक्तित्वको पहिचान दिलाएका भट्टले साहित्यका विविध विधामा कलम चलाएका छन् । कविताका अतिरिक्त निबन्ध, समालोचना अनुवादका क्षेत्रमा यिनको मुख्य योगदान रहेको छ । भट्टको साहित्यिक व्यक्तित्वलाई पनि उनका प्रकाशित कृतिहरूको विधागत सापेक्षताका आधारमा छुट्टयाउँदा सान्दर्भिक देखिन्छ ।

### २.२.२.१ कवि व्यक्तित्व

वि.सं. २०१३ मा **इन्द्रेणी**, वर्ष १ अङ्क ८ मा प्रकाशित 'म तैयार छु' र २०१३ मै बनारस भारतमा **नौलो पाइलो** पत्रिकामा प्रकाशित कविताहरूनै आनन्ददेव भट्टका पहिला प्रकाशित कविताहरू हुन् ।<sup>३०</sup> त्यसैले साहित्यिक व्यक्तित्व अन्तर्गत उनको कवि व्यक्तित्व नै प्रथम व्यक्तित्व हो । उनका अब **हिमालय बोल्छ** कवितासङ्ग्रह (२०१५), **०९७ साल खण्डकाव्य** (२०१५), **गुराँस** कवितासङ्ग्रह (

<sup>२५</sup> आनन्ददेव भट्ट, पूर्ववत् ।

<sup>२६</sup> ऐजन ।

<sup>२७</sup> सुशीला भट्ट, पूर्ववत्, पृ. ३९ ।

<sup>२८</sup> इन्दिरा अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. १२ ।

<sup>२९</sup> सुशीला भट्ट, पूर्ववत्, पृ. ४० ।

<sup>३०</sup> आनन्ददेव भट्ट, व्यक्तित्व, पूर्ववत् ।

२०१५), ओमर खैयामलाई जवाफ काव्य (२०१६), आमा बोलाउँछिन् कवितासङ्ग्रह (२०१६), तिमिलालाई देख्दा काव्य (२०१७), साहिँली मैया खण्डकाव्य (२०१८), युरी एलेक्सएभिच गागरिन काव्य (२०१९) जस्ता कवितासङ्ग्रह र काव्यहरू प्रकाशित छन् । यसका अतिरिक्त उनका अनेक फुटकर कविताहरू पनि विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित भएका छन् ।

उनका कविता काव्यहरूले प्रगतिवादी धारा र चिन्तनलाई पछ्याएका छन् र परम्पराका सापेक्षतामा नामाङ्कन गर्दै विद्रोही अनि क्रान्तिकारी प्रवृत्ति मार्फत् समाज रूपान्तरणको अभियानमा उद्देश्यपूर्ण उपस्थिति जनाएका छन् ।<sup>३१</sup> सामाजिक असमानता, अन्याय, अत्याचार शोषण, दमन, धार्मिक कुसंस्कार, अन्धविश्वास जस्ता विषयमा विद्रोहात्मक अभिव्यक्ति दिँदै राष्ट्रियताका पक्षमा उभिएका भट्ट प्रगतिवादी कवि हुन् । वीर, श्रृङ्गार, करुण आदि रसहरूले भरिएका उनका कविताहरू देशभक्ति, प्रकृतिप्रेम, प्रणयभाव आदिले ओतप्रोत छन् ।<sup>३२</sup>

यिनका कविताले समसामयिक राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, अन्धविश्वास, चाकडी, चाप्लुसी गर्ने प्रवृत्ति, रुढिवादी चिन्तनपट्टि विद्रोहात्मक स्वर व्यक्त गर्दै समाजलाई सही बाटोमा ल्याउन समेत प्रयत्न गरिएको पाइन्छ ।

### २.२.२.२ निबन्धकार व्यक्तित्व

नेपाली साहित्यमा आनन्ददेव भट्टको अर्को व्यक्तित्व निबन्धकार व्यक्तित्व हो । उनको निबन्ध लेखनको सुरुवात २०१५ को धरती पत्रिकामा प्रकाशित 'ब्रतबन्ध' शीर्षकको निबन्धबाट भएको हो । उनको हालसम्म एउटामात्र निबन्ध सङ्ग्रह 'केही आत्मपरक निबन्धहरू (२०४९ साभा प्रकाशन) प्रकाशित भएको छ । भट्टको यस सङ्ग्रह भित्र जम्मा एकतीस ओटा निबन्धहरू सङ्कलित छन् । भट्टले समसामयिक सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित रहेर निबन्धको सिर्जना गरेका छन् । उनले वस्तुपरक र आत्मपरक दुबैखाले निबन्ध लेखेका भएता पनि उनी मूलतः वैचारिक निबन्धकार हुन् र प्रगतिशीलता नै उनका निबन्धको मूल वैचारिक धरातल हो ।<sup>३३</sup> उनको किशोर साहित्यसँग सम्बन्धित 'दृष्टिविन्दु' (२०४८) नामक विभिन्न

<sup>३१</sup> धर्मराज अधिकारी : 'आनन्ददेव भट्ट : जीवनीपरक अध्ययन', आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन, पूर्ववत्, पृ. ८३ ।

<sup>३२</sup> रविकिरण निर्जीव, "एउटा ठूलो फाँटको खले गरो", आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन, पूर्ववत्, पृ. १९ ।

<sup>३३</sup> इन्दिरा अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. १६ ।

पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित निबन्धहरूको सङ्कलन गरिएको पुस्तक पनि प्रकाशित छ । विचारको प्रस्तुति पाउने उनका निबन्धहरूमा बौद्धिक, तार्किक र वैचारिक अभिव्यक्ति भित्र पनि निजात्मकता पाइन्छ । उनले आफ्ना निबन्धमा सामाजिक आडम्बर, रूढी, अन्धपरम्परा आदिलाई प्रस्तुत गर्दै यथार्थवादी र जीवनवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् ।

### २.२.२.३ समीक्षक समालोचक व्यक्तित्व

आनन्ददेव भट्टले साहित्यको सृजना क्षेत्रमा जति योगदान दिन सके त्यति नै समीक्षा र समालोचनाका क्षेत्रमा पनि योगदान दिएका छन् । उनको ख्याति साहित्य सिर्जनाका साथै समालोचनाको क्षेत्रमा समेत रहेको पाइन्छ । उनका **समालोचनाको बाटोतिर** (२०१९), **हाम्रा प्रतिभाहरू** (जीवनीपरक समीक्षा सङ्ग्रह, २०१९), **प्रतिभा पहिचान** (जीवनीपरक समीक्षा सङ्ग्रह, २०४७), **जनताको साहित्य** (सैद्धान्तिक समीक्षा सङ्ग्रह, २०४८) र **व्यवहारिक समालोचना** (२०४८) जस्ता समालोचनात्मक कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् । विषयगत दृष्टिले उनका उक्त कृतिहरू जीवनीपरक, सैद्धान्तिक र व्यवहारिक गरी तीन किसिमका देखिन्छन् ।<sup>३४</sup> स्रष्टाहरूको कृतिको मूल्याङ्कन गर्दा कसैलाई काखा र पाखा नगरी तिनका दुर्बल तथा सबल दुबै पक्षहरूको विश्लेषणात्मक समालोचना गर्नु भट्टको समालोचकीय विशेषता हो ।<sup>३५</sup> भट्टका समालोचनात्मक रचनाहरू विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा पनि प्रकाशित भएको पाइन्छ ।

### २.२.२.४ अनुवादक व्यक्तित्व

आनन्ददेव भट्ट अनुवादकका रूपमा पनि परिचित छन् । उनले हेनरिक इब्सेनको नाटकलाई नेपालीमा **जनताको शत्रु** (२०२० नेपाल एकेडेमी) शीर्षकमा अनुवाद गरेका छन् । उनले सरल सम्प्रेष्य भाषामा मूल ग्रन्थको भाव नखज्मजिने गरी अनुवाद गरेका छन् । यस कृतिको अनुवाद मार्फत उनमा विश्वका अन्य भाषामा रचिएका महत्त्वपूर्ण कृतिलाई नेपाली भाषामा अनुवाद गर्नुपर्छ र फैलाउनु

<sup>३४</sup> धर्मराज अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. ८३ ।

<sup>३५</sup> रविकिरण निर्जीव, पूर्ववत्, पृ. २३ ।

पछ्छ भन्ने संचेतना रहेको अनुभव हुन्छ भने अर्कोतिर यसले उनको कुशल अनुवादक व्यक्तित्वको परिचय दिन्छ ।<sup>३६</sup>

### २.२.३ प्राध्यापक व्यक्तित्व

अङ्ग्रेजी विषयमा २०१६ सालमा पटना विश्वविद्यालय -भारत) बाट स्नातकोत्तर पास गरेका आनन्ददेव भट्टले २०१५ देखि नै काठमाडौँ स्थित विश्व निकेतन हाइस्कूलबाट अध्यापन आरम्भ गरेका हुन् ।<sup>३७</sup> २०१७-२०१८ सम्म धनकुटा डिग्री कलेजमा अध्यापन गरेका भट्ट २०१८-२०२२ सालसम्म धरानको महेन्द्र डिग्री कलेजमा कार्यरत रहन्छन् ।<sup>३८</sup> त्यसपछि उनले २०२२-२०३० साल असारसम्म भरतपुर चितवनको वीरेन्द्र इन्टर कलेजमा प्राचार्य भई काम गर्छन् भने २०३० श्रावण देखि २०३५ सम्म त्रि.वि. पाठ्यक्रम विकास केन्द्रमा उनी उपप्राध्यापकको रूपमा काजमा खटाइन्छन् । २०३६-२०४५ सम्म त्यहीँ ठाउँमा उपनिर्देशक बनेर आफ्नो थप जिम्मेवारी सम्हाल्छन् ।<sup>३९</sup> अन्तमा २०४५-२०५० सम्म उनी त्रि.वि.को अङ्ग्रेजी केन्द्रीय शिक्षण विभाग कीर्तिपुरमा सहप्राध्यापकको रूपमा कार्यरत रहन्छन् ।<sup>४०</sup>

यसरी पैतीस वर्षको लामो समयसम्म शैक्षिक प्राज्ञिक क्षेत्रमा संलग्न रहेका भट्टले २०५० चैत सातगतेदेखि यस क्षेत्रबाट स्वेच्छिक अवकाश लिएका छन् । यसरी प्राध्यापन पेशासँगको संलग्नताका कारणले गर्दा नै उनले सफलतापूर्वक आफ्नो प्राज्ञिक व्यक्तित्वको स्थापना गरेको पाइन्छ ।

### २.२.४ राजनैतिक व्यक्तित्व

नेपाल कम्युनिष्ट पार्टीमा संलग्न रहेका आनन्ददेव भट्ट २००८ देखि कम्युनिष्ट पार्टीको सम्पर्कमा रही काम गर्न थाल्छन् भने २००९ साल मंसिरसम्ममा

---

<sup>३६</sup> धर्मराज अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. २३ ।

<sup>३७</sup> आनन्ददेव भट्ट, व्यक्तिवृत्त, पूर्ववत् ।

<sup>३८</sup> ऐजन ।

<sup>३९</sup> ऐजन ।

<sup>४०</sup> ऐजन ।

एउटा प्रतिबद्ध कम्युनिष्ट सदस्य बन्छन् ।<sup>४१</sup> यसरी उनले २००९ देखि २०१७ सालसम्म विधिवत रूपमा नेपाल कम्युनिष्ट पार्टीको राजनीतिक यात्रा गरेका हुन् तर २०१७ सालपछि उनी प्राध्यापन पेसासँग सीमित रहे र कम्युनिष्ट सङ्गठनबाट छुटे । राजनीतिमा संलग्न भएकाले उनले धेरै पटक (एघारपटक) जेलयात्रा र बन्धन दुबै भोग्नु पर्यो ।<sup>४२</sup> २०४६ सालको जनआन्दोलनमा उनले एक देशभक्त वामपन्थी बुद्धिजीविको रूपमा उत्साहजनक सक्रियता रहेको पाइन्छ । उनी २०५० साल असार १५ गते चाहिँ उनी ने.क.पा. एमाले पार्टीको संगठित सदस्य बने ।<sup>४३</sup> वि.सं. २०५१-२०५६ का बीचमा उनी आफ्नो गृह जिल्ला बैतडीमा पार्टी सचिव मात्र भएर रहन्छन् अनि फेरि २०५५-२०५६ मा उनी पुनः सचिव बन्छन् ।<sup>४४</sup> यस बीचमा उनले २०५१ र २०५६ मा सांसद पदका लागि चुनाव पनि लड्छन् तर दुबै पटक उनले पहिलो स्थान भने हासिल गर्न सक्दैनन् ।<sup>४५</sup> त्यस्तै गरी भदौले २०५९ असोज १८ देखि २०६३ वैशाख ११ गतेसम्मको जनआन्दोलनमा पनि सङ्घर्षपूर्ण सहभागिता देखाएका थिए । यसरी २००८-२०१७ सम्म र २०५० असारदेखि २०६३ असारसम्म गरी बाईस वर्ष भदौले सक्रिय रूपमा जनतामाथि नै एकाकारभई राजनीतिमा समर्पित भएका भदौ हाल राजनीतिबाट पूर्णविराम लिएर अध्ययन चिन्तन मनन र लेखनमा सीमित भएका छन् । भदौको राजनैतिक विषयसँग सम्बन्धित एउटा पुस्तक प्रकाशित भएको छ त्यो हो **स्वतन्त्रता र कम्युनिष्टहरू** (२०४८) ।

## २.२.५ निष्कर्ष

यसरी आनन्ददेव भदौले अब **हिमालय बोलछ** (२०१५) कवितासङ्ग्रह देखि **केही आत्मपरक निबन्धहरू** (२०४९) निबन्धसङ्ग्रहसम्म आइपुग्दा जम्मा उन्नाइस ओटा साहित्यिक र साहित्येतर पुस्तकाकार कृतिहरू प्रकाशित गरेका छन् । यिनको लेखनमा मार्क्सवादी चिन्तनद्वारा निर्देशित, प्रभावित प्रगतिवादी स्वर मुखरित भएको पाइन्छ । भदौ आफ्नो देश, जाति, भाषा, साहित्यप्रति गहिरो स्नेह राख्ने साहित्यकार

<sup>४१</sup> आनन्ददेव भदौ, पूर्ववत् ।

<sup>४२</sup> सुशिला भदौ, पूर्ववत्, पृ. ३९ ।

<sup>४३</sup> धर्मराज अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. ८२ ।

<sup>४४</sup> आनन्ददेव भदौ, पूर्ववत् ।

<sup>४५</sup> धर्मराज अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. ८१ ।

हुन् र आफ्नो लेखनीलाई क्रमिक रूपमा स्तरीयता प्रदान गर्दै विविध विधामा अधि बढिरहेका एक अग्रज नेपाली साहित्यकार हुन् ।

## परिच्छेद - तीन

### निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय र आनन्ददेव भट्टको निबन्धयात्रा

#### ३.१ निबन्धको व्युत्पत्ति र अर्थ

आधुनिक सन्दर्भमा साहित्यको गद्य विधा विशेषलाई जनाउने 'निबन्ध' शब्दको अर्थ पूर्वीय तथा पाश्चात्य जगत्मा विभिन्न विद्वान्हरूले आ-आफ्नै किसिमले दिँदै आएका छन् । यहाँ निबन्ध शब्दको व्युत्पत्तिमूलक अर्थ र निबन्ध सम्बन्धी पूर्वीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोणको छुट्टा छुट्टै चर्चा गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

#### ३.१.१ निबन्ध सम्बन्धी पूर्वीय दृष्टिकोण

'निबन्ध' तत्सम शब्दका रूपमा नेपालीमा आएको शब्द हो । संस्कृतमा यसको प्रयोग विभिन्न अर्थमा गरिएको पाइन्छ । संस्कृतको 'बन्ध' धातुमा 'नि' उपसर्ग र धञ् । प्रत्येय लागेर (नि+बन्ध+धञ् =निबन्ध) निबन्ध शब्दको निर्माण भएको हो जसको अर्थ राम्ररी बाध्नु भन्ने हुन्छ ।<sup>४६</sup>

संस्कृतमा निबन्ध शब्दको प्रयोग निकै पुरानो देखिन्छ । कृष्णले अर्जुनलाई उपदेश दिने क्रममा 'दैवी सम्पद् विभोक्षाय निबन्धायासुरी म ता'<sup>४७</sup> भनेर आत्मालाई सांसारिक मायाजालमा बाँधेर राख्ने आसुरी सम्पदाका रूपमा निबन्ध शब्दको प्रयोग गरेका छन् । यसपछि सातौँ र आठौँ शताब्दीका वासवदत्ता र कादम्बरी काव्यमा निबन्ध शब्दको प्रयोग ग्रन्थरचना, अर्थटीका, व्याख्या, भाष्य र शाब्दिक कला आदि अर्थमा गरेको पाइन्छ ।<sup>४८</sup> यज्ञवल्क्य स्मृतिमा द्रव्यको अर्थमा निबन्धलाई लिइएको छ ।<sup>४९</sup> क्रमिक रूपमा अर्थ विस्तार हुँदै जाँदा एघारौँ शताब्दी पश्चात् यस शब्दको प्रयोग सूत्र, वृत्ति, भाष्य तथा समीक्षात्मक सङ्ग्रहका अर्थमा हुन थालेको देखिन्छ ।

<sup>४६</sup> भट्टोजिदीक्षित, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, छैटौँ संस्करण, (वाराणसी : चौखम्ब अमरभारती प्रकाशन, २०४३), सूत्रसङ्ख्या ३२०० ।

<sup>४७</sup> वेदवति वैदिक (सम्पा.), श्रीमद्भगवद् गीता, तेस्रो संस्करण, (नयाँ दिल्ली : ऋचा प्रकाशन, ई. १९९८), पृ. ६१३ ।

<sup>४८</sup> राजेन्द्र सुवेदी, स्रष्टा-सृष्टि : द्रष्टा-दृष्टि, द्वितीय संस्करण, (काठमाडौँ : साभा प्रकाशन, २०४९), पृ. ।

<sup>४९</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, साहित्य प्रकाश, छैटौँ संस्करण, (काठमाडौँ : रत्न पुस्तक भण्डार, २०५९), पृ. १६० ।

<sup>५०</sup> प्रथमतः यो शब्द हस्तलिखित भोजपत्र आदिलाई समेटेर बाधने तात्पर्यमा प्रयोग भएको थियो । <sup>५१</sup> अहिले आएर यो शब्दले साहित्यको विशिष्ट किसिमको गद्यविधालाई बुझाउन थाल्यो ।

संस्कृत वाङ्मयमा विभिन्न अर्थमा प्रयुक्त निबन्ध शब्दले आजको साहित्यिक गद्य विधा विशेषलाई समेट्न सकेको छैन । आजको निबन्धको प्रयोग संस्कृत साहित्यकलामा भएको पाइँदैन । <sup>५२</sup> यसर्थ निबन्धले साहित्यको खास विधाविशेषलाई बुझाउने सामर्थ्य पाश्चात्य साहित्यकै उपादान स्वरूप प्राप्त गरेको हो भन्ने कुरा पनि प्रष्ट हुन्छ । यसर्थ निबन्धका बारेमा पाश्चात्य दृष्टिकोणको अध्ययन गर्नु आवश्यक देखिन्छ ।

### ३.१.२ निबन्ध सम्बन्धी पाश्चात्य दृष्टिकोण

निबन्धलाई बुझाउने अङ्ग्रेजी शब्द 'एस्से' हो । 'एस्से' शब्द फ्रान्सेली शब्द एसाइबाट आएको हो । यही एसाइबाट नै अङ्ग्रेजीमा एस्से शब्द बन्न पुग्यो जसको अर्थ प्रयास वा प्रयत्न हुन्छ । <sup>५३</sup>

सौह्रौं शताब्दीका फ्रान्सेली साहित्यकार मिसल द मोन्तेनले आफ्ना रचनालाई 'एसाई' नाम दिए र निबन्धको विधागत आरम्भ गरे । <sup>५४</sup> सत्रौं शताब्दीमा वेलायतका साहित्यकार फ्रान्सिस वेकनले आफ्ना चिन्तनमूलक रचनालाई निबन्धको संज्ञा दिए । निबन्धको परिभाषा गर्ने क्रममा सत्रौं र अठारौं शताब्दीमा आएर गद्यमा लेखिएका छोट्टा रचनाकै तात्पर्यमा 'एस्से' शब्दको प्रयोग भएको छ । <sup>५५</sup> विस्तारै एस्सेको परिभाषा गर्ने सन्दर्भमा विभिन्न विद्वान् र कोशकारहरूले यसको अर्थ दिन थालेपछि यसले साहित्यिक विधा विशेषलाई बुझाउन थाल्यो । <sup>५६</sup>

---

<sup>५०</sup> धीरेन्द्र वर्मा (सम्पा.) हिन्दी शब्दकोश, दोस्रो संस्करण, (दिल्ली : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, २०२०), पृ. ४४५ ।

<sup>५१</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १६० ।

<sup>५२</sup> राजेन्द्र सुवेदी, पूर्ववत्, पृ. ७ ।

<sup>५३</sup> हिमांशु थापा, साहित्य परिचय, दोस्रो संस्करण, (काठमाडौं : साभा प्रकाशन, २०३०), पृ. १० ।

<sup>५४</sup> ईश्वर बराल (सम्पा.), सयपत्री, तेस्रो संस्करण, (काठमाडौं : साभा प्रकाशन, २०३०), पृ. १० ।

<sup>५५</sup> हरिनाथ द्विवेदी, निबन्ध सिद्धान्त और प्रयोग, (पटना विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, ई. १९७१), पृ. १३ ।

<sup>५६</sup> रोबर्ट पिग्विन, द न्यू इन्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिका, भोलम ४, पन्ध्रौं संस्करण, (अमेरिकी युनिभर्सिटी अफ सिकागो, ई. १९९०), पृ. ५६२ ।

नेपालीमा गद्य विधा विशेषलाई जनाउने निबन्ध शब्द पाश्चात्य 'एस्से' को तात्पर्यसँग नजिक रहेको पाइन्छ । पूर्वीय साहित्यमा निबन्ध शब्दको प्रयोग गद्य विधा विशेषको रूपमा भएको पाइँदैन । यसको प्रयोग भाष्य टीका आदिमा मात्र भएको पाइन्छ तर पाश्चात्य 'एस्से' शब्दले आरम्भ देखिनै साहित्यिक रचनाकै अर्थ बहन गर्ने गद्य विधा विशेषलाई व्यापक अर्थमा लिन थालेको पाइन्छ । त्यसैले नेपाली निबन्ध शब्दको अर्थ पूर्वीय व्युत्पत्तिमूलक अर्थभन्दा पाश्चात्य एस्सेसँग बढी निकट रहेको देखिन्छ ।

### ३.२ निबन्धको परिभाषा

निबन्ध विश्वसाहित्यको इतिहासका सन्दर्भमा अत्यन्त नयाँ र पहिलो विधा हो । एउटा विशेष विधाको रूपमा रहेको निबन्धको परिभाषा खोज्नु त्यति सजिलो छैन र पनि विश्वका केही चिन्तकहरूले विषयवस्तु, आकारप्रकार, भाषाशैली जस्ता विभिन्न आधारमा निबन्धलाई परिभाषित गरेका छन् । यसैकारण यो एउटै परिभाषामा स्थिर छैन र साहित्यका अन्य विधाको जस्तो यसको पनि सहज र स्पष्ट परिभाषा भएको पाइँदैन ।

#### ३.२.१ पाश्चात्य विद्वान्हरूका विचारमा निबन्ध

पाश्चात्य साहित्यको इतिहासमा निबन्धको प्रारम्भिक उत्पत्ति र पथम प्रयोग फ्रान्सेली निबन्धकार मोन्तेनका प्रयासबाटै भएको हो । यस सम्बन्धी प्रथम परिभाषा पनि उनले नै दिएका छन् । 'म नै मेरा निबन्धको विषयवस्तु हुँ : किनभने मलाई सबभन्दा बढ्ता चिन्ने व्यक्ति म स्वयं मात्र हुँ ।'<sup>५७</sup> मोन्तेनले आफ्ना निबन्धको विषयवस्तु आफैलाई ठानी निबन्धलाई आत्मप्रकाशन मानेका छन् । उनका विचारमा निबन्ध निजात्मक व्यक्तित्वको अभिव्यक्ति हो । उनी आत्मपरक निबन्धकारका रूपमा देखापरेका छन् ।

फ्रान्सिस वेकनले 'निबन्ध विकीर्ण चिन्तन हो ।'<sup>५८</sup> भनेका छन् अङ्ग्रेजी साहित्यका पहिला निबन्धकार फ्रान्सिस वेकनले निबन्धलाई छरिएको चिन्तन

<sup>५७</sup> राजेन्द्र सुवेदी, पूर्ववत्, पृ. १८ ।

<sup>५८</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १६३ ।

मानेका छन् । वेकनका परिभाषाबाट निबन्ध चिन्तन प्रधान हुन्छ, त्यसमा कल्पना र अनुभूतिको कोमल अभिव्यक्ति नभएर गम्भीर ज्ञान र बौद्धिक अभिव्यक्ति रहेको हुन्छ ।

जोन्सनले 'निबन्ध भनेको मानसिक जगत्को त्यो थाकेको बुद्धिविलास हो, जसमा न कुनै क्रम छ न कुनै नियम । यो विचारहरूको अपरिपक्व र अव्यवस्थित रचना हो' ।<sup>५९</sup> भनेका छन् । यस कथनबाट निबन्ध भनेको क्रमनियमहीन अपरिपक्व र अव्यवस्थित रचनाको रूपमा देखिन आउँछ ।

जोहन मरेले जोन्सनको परिभाषालाई परिमार्जित गरेका छन् । 'कुनै एक विषयमा सुगठित र सुव्यवस्थित दृष्टिकोण राखेर लेखिएको रचना निबन्ध हो ।'<sup>६०</sup> जोन्सनले अपरिपक्व र अव्यवस्थित भनिएको निबन्ध विधालाई मरेले सुगठित र सुव्यवस्थित रचना हो भनेर जोन्सनको परिभाषालाई परिमार्जन गरेका छन् ।

सेन्टव्युभले 'निबन्ध श्रमसाध्य विधा हो, यसमा स्रष्टाको आत्मप्रतिपादन भएको हुन्छ ।'<sup>६१</sup> भनेका छन् । उपयुक्त कथनबाट के स्पष्ट हुन्छ भने निबन्ध आत्मपरक विधा भइकन पनि श्रमपूर्ण साधनबाट रचिन्छ, कठिनतम भएर पनि उच्चकोटिको विशिष्ट हुन्छ ।

विलियम हेनरी हड्सनका विचारमा 'मोटा मोटी रूपमा कुनै पनि विषयमा लेखिएको रचनालाई सच्चा निबन्ध मान्न सकिन्छ । यसको मुख्य विशेषता हो अपेक्षाकृत संक्षिप्तता र पट्यारिलोपनको अभाव ।'<sup>६२</sup> यिनले निबन्धलाई जुनसुकै विषयमा पनि लेख्न सकिने निबन्धकारको वैयक्तिक अनुभव र दृष्टिकोण व्यक्त भएको आत्माभिव्यक्तिको साधन मानेका छन् ।

ह्युवाकरले 'हलुका पारा तथा सरल ढङ्ग र लेखक तथा पाठक माझको विश्वस्त सम्बन्ध रहेको निबन्ध आदर्श निबन्ध हो ।'<sup>६३</sup> भनेका छन् भने 'तारादेखि

---

<sup>५९</sup> रामलाल अधिकारी, नेपाली निबन्धयात्रा, (दार्जीलिङ : नेपाली साहित्य सञ्चयिका ई. १९७५), पृ. ६ ।

<sup>६०</sup> राजेन्द्र सुवेदी, पूर्ववत्, पृ. २० ।

<sup>६१</sup> राजेन्द्र सुवेदी, पूर्ववत्, पृ. १९ ।

<sup>६२</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, नेपाली निबन्ध परिचय, चौथो संस्करण, (काठमाडौं रत्नपुस्तक भण्डार, २०४६), पृ. १२ ।

<sup>६३</sup> पूर्ववत्, पृ. ११ ।

लिए धूलोसम्म र अभिबादेखि लिएर मानिससम्म निबन्धको विषय हुन सकछ ।<sup>६४</sup> भनेर निबन्धको क्षेत्रलाई स्पष्ट पारेका छन् ।

रवर्ट स्कल्सले 'विशुद्ध रूपमा निबन्ध भनेको निबन्धकारका विचारहरू प्रत्यक्ष रूपमा पाठक समक्ष पुऱ्याउने विधा हो ।'<sup>६५</sup> भनेका छन् ।

द न्यू इन्साइक्लोपेडिया वृतानिकामा 'कुनै एक विषयमा केन्द्रित भई गद्यमा लेखिएको छोटो लेख नै निबन्ध हो ।'<sup>६६</sup> भनिएको छ ।

### ३.२.२ पूर्वीय विद्वान्हरूका विचारमा निबन्ध

पाश्चात्य साहित्यमा मात्र होइन, पूर्वीय साहित्यमा पनि निबन्ध साहित्यको लेखन, अध्ययन, मनन भएको पाइन्छ । यसै क्रममा निबन्धको परिभाषा दिने काम पनि भएको छ ।

#### आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

'यदि गद्य कविहरूको कसी हो भने निबन्ध गद्यको कसी हो' ।<sup>६७</sup> हिन्दी साहित्यका विशिष्ट चिन्तक तथा इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्लले निबन्धलाई गद्यको विशिष्ट विधा मानेका छन् ।

#### गुलावराय

'निबन्ध त्यो गद्य रचनालाई भनिन्छ जसमा एउटा सीमित आकार भित्र कुनै विषयको वर्णन वा प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्द सौष्ठव र सजीवता तथा आवश्यक सङ्गति र सम्बकृताका साथ गरिएको हुन्छ ।'<sup>६८</sup> रायको परिभाषामा निबन्ध सानो आकारमा लेखिने गद्य रचना हो । यसको विषयवस्तु जुनसुकै हुन

<sup>६४</sup> पूर्ववत् ।

<sup>६५</sup> रवर्ट स्कल्स (सम्पा.), इलिमेण्ट अफ लिटरेचर, चौथो संस्करण, (दिल्ली : अक्सफोर्ड युनिभर्सिटी प्रेस, १९७९), पृ. XXX.

<sup>६६</sup> रोवर्ट पिपिन, पूर्ववत्, पृ. ५६२ ।

<sup>६७</sup> आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्यका इतिहास, तेह्रौं संस्करण, (काशी : नागरी प्रचारिनीसभा, २०१८), पृ. ५०५ ।

<sup>६८</sup> जयनाथ 'नलिन', हिन्दी निबन्धकार, दोस्रो संस्करण, (दिल्ली : आत्मराम एण्ड सन्स, ई. १९६४), पृ. १० ।

सकछ र त्यसको वर्णन र प्रतिपादन गर्दा स्रष्टाको व्यक्तित्व मुछिनु पर्छ । स्वच्छन्द भाव विचरण भए पनि सङ्गति र सम्बद्धतालाई कायम राख्नु निबन्धको वास्तविक प्राण हो भन्ने कुरा देखिएको छ ।

### ईश्वर बराल

‘निबन्ध एक किसिमको कुरा गराइ हो । यो हो लेखकका मनमा भावहरूलाई स्वगत कथनका रूपमा उद्गृह्य गराउने विधा विशेष । आफ्नो गुनासो अरूलाई सुनाउनु, मनको बह पोख्नु, हृदयलाई सकेसम्म छर्लङ्ग्याइदिनु आन्तरिक सन्देशलाई फिजाइदिनु मानिसका आद्य तिसर्ना हुन् । त्यसो हुनाले निबन्धकार जहिले पनि पाठकसित गफ गर्न चाहन्छ, साउती गरेर तिनलाई आफ्ना प्रति सहानुभूतिशील बनाउन खोज्छ ।’<sup>६९</sup>

बरालले निबन्धलाई सामान्यकुरा गराइ मान्दै यसले सामान्य मानव प्रवृत्तिलाई बहन गर्नुपर्ने कुरा बताएका छन् ।

### लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा

‘यो रौचिरा दर्शन होइन न हो पाण्डित्य दर्शनको व्यास्फु ! यसमा गृहित विषयलाई सर्वदृष्टिकोण समीक्षणको जरूरत छैन । यो एक किसिमको धूर्त बदमास ठिटो हो, जो सडकमा हिड्दा कहिले ढुङ्गो हान्छ कतै, कतै आनन्दले फुलेर हेर्छ तर घोरिदैँन पाठघोकुवा हलन्तेको मिजासले ।’<sup>७०</sup> ‘यो टेविल गफमात्र हो, शास्त्र होइन । यो एउटा फुर्सदको मनोरञ्जन हो । ... यहाँ एउटा रसिलो हँसिलो, गफाडी, चुड्किलो कुराकानी छ, जसको नाम प्रबन्ध हो ।’<sup>७१</sup>

नेपाली साहित्यका मूर्धन्य निबन्धकार लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाले प्रबन्धलाई निबन्धकै सामानार्थमा प्रयोग गरेका छन् । उनका विचारमा निबन्ध अनौपचारिक वार्तालाप हो । यसमा बौद्धिकताको भारी होइन आत्मपरकता हुन्छ । यसमा नियम र शैली कसैको बन्धन हुँदैन ।

<sup>६९</sup> ईश्वर बराल (सम्पा.), पूर्ववत्, पृ. ७ ।

<sup>७०</sup> लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, लक्ष्मी निबन्धसङ्ग्रह, बाह्रौँ संस्करण, (काठमाडौँ: साभा प्रकाशन, २०४९), पृ. ख ।

<sup>७१</sup> ऐजन, पृ. ५ ।

## रामलाल अधिकारी

‘निबन्ध त्यो काव्यविधा हो जसमा लेखकको व्यक्तित्व पाठकसमक्ष पूर्णतया प्रकाशमान हुन्छ । यसमा लेखकले उपदेवता नभई आत्मप्रकाशनको लक्ष्यमै केन्द्रीत हुनुपर्दछ ।’<sup>७२</sup> अधिकारी निबन्धलाई निजात्मक गद्यको विधा विशेषको रूपमा स्विकारेका छन् जसमा वैयक्तिक भावना वा विषयलाई संयतपूर्ण तरिकाले प्रस्तुत गरिएको हुन्छ भनेका छन् ।

## गोपीकृष्ण शर्मा

‘कुनै विषयबारे आफू रङ्गिएर वा तटस्थ रहेर गरिएको संक्षिप्त गद्यमय अभिव्यक्ति ।’<sup>७३</sup>

शर्माले निबन्ध निजी चिन्तनधारा घोकेको संक्षिप्त गद्यविधालाई मानेका छन् ।

### ३.३ निबन्धका तत्त्वहरू

सोह्रौं शताब्दीमा पाश्चात्य साहित्य जगत्मा विकसित भएको साहित्यको गद्य विधा निबन्ध विधा हो । निबन्धको परिभाषा गर्न यसका अनेक रूप र रङ्गले गर्दा जति समस्या हुन्छ त्यतिनै विषयको व्यापकता र आकारप्रकारको विविधताले गर्दा निबन्धका तत्त्व यति नै हुन्छन् र यिनै हुन् भन्न कठिन हुन्छ । निबन्ध विधा समयानुकूल परिवर्तनशील विधा भएको हुनाले समयानुसार यसको तत्त्वमा पनि परिवर्तन हुँदै आइरहेको पाइन्छ ।

निबन्धात्मक तत्त्व भन्नाले निबन्ध संरचनाका लागि नभई नहुने आवश्यक कुरा हो । निबन्ध तत्त्वका बारेमा विद्वान्हरूका बीच मतैक्य नभए तापनि आवश्यक तत्त्वहरू तीन किसिमका देखिन्छन्- वस्तु, शैली, उद्देश्य ।<sup>७४</sup>

<sup>७२</sup> रामलाल अधिकारी, पूर्ववत्, पृ. १२ ।

<sup>७३</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ६ ।

<sup>७४</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १७ ।

### ३.३.१ वस्तु

वस्तु निबन्धको प्रमुख तत्त्व हो । वस्तु तत्त्वनै निबन्धको प्राण भएकाले वस्तुविना निबन्धको रचना हुन सक्दैन । जीवनजगत्का जुनसुकै विषयमा पनि निबन्ध लेख्न सकिने हुँदा यसको विषय क्षेत्र ज्यादै व्यापक र विस्तृत हुन्छ । ह्युवाकरले भनेभै निबन्धको क्षेत्र व्यापक छ, एककोषीय जीवदेखि लिएर मानिससम्म वा घुल राशि देखि लिएर आकाशका तारामण्डलसम्म कुनै पनि विषयलाई निबन्धकारले छनोट गर्न सक्छ । विषय जे जस्तो भएपनि स्रष्टाको व्यक्तित्वको प्रभावमा आइसकेपछि निबन्धले पूर्णता प्राप्त गर्दछ ।

निबन्धको वस्तुतत्त्व भित्र खासगरी चिन्तन, विचार, कार्यकारण तर्क गहिराइ र औचित्य रक्षा पर्दछन् ।<sup>५५</sup> भने भावतत्त्व अन्तर्गत सुकुमार संवेदन, रागात्मक ध्वन्यात्मकता र चित्तको तरलता पर्दछन् ।<sup>५६</sup>

राम्रा निबन्धमा बुद्धितत्त्व र भावतत्त्व दुवैको समन्वय गरिएको हुन्छ । निजात्मक निबन्धमा भावतत्त्वको प्रबलता रहन्छ । कल्पनाको आवरणले भावतत्त्वलाई सजाइएको हुन्छ । भावलाई बुद्धिले उछिन्न हुँदैन र भावमा बुद्धिको रमरम स्पर्श रहेकै हुनु पर्दछ । तसर्थ बुद्धि र भाव दुवै निबन्धका अनिवार्य तत्त्व हुन् । बुद्धि मानव मस्तिष्कको खारिएको प्रतिभा हो । बुद्धि जति तीव्र हुन्छ त्यति नै चिन्तन विचार आदि निबन्धमा सशक्त भएर आउँछ । यसका लागि अध्ययन र अभ्यासको त्यत्तिकै आवश्यकता पर्दछ ।

### ३.३.२ शैली

अन्य साहित्यिक विधाका तुलनामा निबन्धमा शैलीको महत्त्व विशेष हुन्छ । शैलीले निबन्धलाई प्राणवान र जीवन्त बनाउन सक्छ । निबन्धकारको निजीपन र व्यक्तित्वको परिचायक शैली नै हो । यो भाव र भाषाको संगमबाट निर्मित हुन्छ । विचार वा भाव निबन्धको आत्मा, भाषा शरीर र शैली निबन्धको जीवन वा प्राण हो ।<sup>५७</sup> अर्को पक्षमा शैलीका लागि निरन्तर प्रवाह पनि त्यत्तिकै अपेक्षित हुन्छ । क्रम

<sup>५५</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १७१ ।

<sup>५६</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १७ ।

<sup>५७</sup> जयनाथ 'नलिन', पूर्ववत्, पृ. २९ ।

सङ्गति, सङ्गठन र अन्विति शैलीका आन्तरिक गुण हुन् ।<sup>५८</sup> प्रत्येक निबन्धकारका शैली आ-आफ्नै प्रकारको हुन्छ । निबन्धको भाषा सरल, सहज, कोमल, हार्दिक, हृदयस्पर्शी हुनु पर्दछ । निबन्धकार जुन भाषामा निबन्ध लेख्छ त्यस भाषालाई उसले राम्रोसँग खेलाउन सक्ने हुनुपर्दछ । कही कतै उखान-टुक्का, कतै गहन तथ्य तथा भावप्रधान भाषाको प्रयोग गर्न सकिन्छ । निबन्धमा प्रयोग गरिने शब्द विषयानुकूल, रोचक र अर्थबोधक हुनुपर्दछ ।

भाषाका दृष्टिले निबन्धका मूलतः तीनवटा शैली हुन्छन् : संयत शैली, भावुकशैली र व्यङ्ग्य शैली ।<sup>५९</sup>

#### क) संयत शैली

संयत र नियन्त्रणको मात्रा बढी रहने शैली संयत शैली हो । यसमा भावको अधीनमा निबन्धकार नभएर निबन्धकारको अधीनमा भाव रहन्छ । संयत शैलीले पाठकलाई विस्तार विस्तार प्रभाव पार्दछ । यस शैलीले पाठकलाई एकै साथ भयाप्य छोपेर अन्यौलमा पार्दैन । यसमा ठट्टा मजा र हार्दिकता रहन्छन् । कुनै विचार वा अनुभूतिलाई उत्कर्षमा पुऱ्याउन यसमा क्रमिक प्रभावको व्यवस्था हुन्छ र प्रायः बुद्धिले काम गरेको हुन्छ ।<sup>६०</sup>

#### ख) भावुक शैली

भावुकताको अधिकाधिक प्रस्तुति भावुक शैलीको गुण हो । यस्तो शैलीमा विगतका अनुभवहरूलाई कल्पनाले सिँगारेर अतिरञ्जित किसिमले व्यक्त गरिएको हुन्छ ।<sup>६१</sup> यसमा अनुभव, अनुभूति र कल्पना घुलमिल भएर आउँछन् । भावुकशैलीको भाषा कवितात्मक संवेदनशीलताले भरिएको हुन्छ । यस शैलीमा निबन्धकार कुनै बाधा अवरोधविना र प्रायः अव्यवस्थित ढङ्गले आफ्ना कुरा प्रकट गर्दछ ।

<sup>५८</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १८

<sup>५९</sup> पूर्ववत् ।

<sup>६०</sup> पूर्ववत्, पृ. १९ ।

<sup>६१</sup> पूर्ववत् ।

### ग) व्यङ्ग्य शैली

भावलाई भाषामा चमत्कारपूर्ण ढङ्गले प्रस्तुत गर्ने शैलीलाई व्यङ्ग्य शैली भनिन्छ । व्यङ्ग्य शैलीमा एउटा कुरा भनेभैँ अर्को कुरा भनिन्छ । यसमा ठट्टा मजा एवम् छेडछाड पनि रहन्छन् । व्यङ्ग्यले रुढी र विसङ्गत सम्पूर्ण तत्त्वको उछितो पार्ने क्षमता प्राप्त गरेको हुन्छ ।<sup>५२</sup> व्यङ्ग्य शैलीमा निबन्धकारको भाषा र भावमाथि एकाधिकार हुन्छ ।

भाषाका आधारमा शैली मूलतः दुई प्रकारका छन् - समस्त शैली र सरल शैली ।<sup>५३</sup>

### ग) समस्त शैली

समस्त शैलीलाई समास शैली पनि भन्दछन् । साधारण नभएर विशिष्ट भाषाको प्रयोग गर्न समास शैलीको लक्षण हो । यसमा भाषाको विस्तार र भावको शून्यता बढी रहन्छ । कठिन शब्द लामा वाक्य, दुरुह संरचना समास शैलीका विशेषता हुन् ।<sup>५४</sup> यसमा मिश्र र संयुक्त वाक्यको आधिकाधिक प्रयोग गरिन्छ । भाषिक शब्द जाल विछ्याएर पाठकलाई अलमल्ल पार्नु समास शैलीको निजी विशेषता हो ।

### घ) सरल शैली

सरल शैलीलाई प्रसाद शैली पनि भनिन्छ । यसको भाषा सहज र सरल हुन्छ । साधारण र बहुप्रचलित शब्द छोटो वाक्य र सुबोध अभिव्यक्ति यो शैलीका विशेषता हुन् ।<sup>५५</sup> आधुनिक निबन्धमा प्रसाद शैली बहुप्रचलित छ । जस्तो सुकै गहन विषयवस्तु पनि सामान्य किसिमले सुमधुर र सहज भाषामा प्रस्तुत गर्ने शैली सरल शैली हो ।

---

<sup>५२</sup> राजेन्द्र सुवेदी, पूर्ववत्, पृ. ३९ ।

<sup>५३</sup> मोहनप्रसाद तिमल्सिना, नेपाली निबन्धको चरण निर्धारण र चरणगत वैशिष्ट्यको विश्लेषण, अप्रकाशित, लघुअनुसन्धान प्रतिवेदन, (त्रि.वि. मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र अध्ययन संस्थान, २०४९), पृ. ९ ।

<sup>५४</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. २० ।

<sup>५५</sup> पूर्ववत्, पृ. २० ।

### ३.३.३ उद्देश्य

निबन्ध रचनाको कुनै न कुनै उद्देश्य हुन्छ । निबन्धकारले आफ्ना निबन्धका माध्यमबाट आफ्ना भावना, विचार, अनुभव र अनुभूतिलाई पाठकसमक्ष प्रस्तुत गर्नु नै निबन्धकारको मुख्य उद्देश्य रहेको हुन्छ तर निबन्ध लेखनको मूल उद्देश्य पाठकलाई उपदेश दिनु नभई सूचना दिनु र आत्मप्रकाशन गर्नु हो ।<sup>५६</sup> निबन्ध रचनाका दुई प्रकारका उद्देश्य हुन्छन् - आत्मप्रकाशन र सूचनात्मकता ।<sup>५७</sup>

#### क) आत्मप्रकाशन

निबन्धकारले गृहित विषयभित्रैबाट पनि आफ्नो निजी दृष्टिकोण र अनुभूतिका तरङ्गरूप प्रस्तुत गर्दछन् । निबन्ध व्यक्तित्वको परिचायक हुन्छ र यसका माध्यमबाट निबन्धकारको 'स्व'को चिनारी निर्भिकतापूर्वक निबन्धमा प्रकट भएको हुन्छ । आत्माभिव्यक्तिको यो प्रवृत्ति आत्मपरक निबन्धमा बढी सक्रिय रहन्छ भने वस्तुपरक निबन्धमा कम रहन्छ ।

#### ख) सूचनात्मकता

निबन्धमा रचनाकारको अनुभव सम्बन्धी सूचनाहरू रहन्छन् । एउटा असल मित्रले भैं निबन्धकार आफ्ना पाठकलाई निबन्धको माध्यमबाट केही भनिरहेको हुन्छ, सूचना प्रदान गरिरहेको हुन्छ । जीवन र जगत्का यथार्थ वा काल्पनिक जुनसुकै पक्षका बारेमा पनि छोटो गद्यविधाका माध्यमबाट निबन्धले सूचना दिने काम गर्दछ । निबन्धकार आफ्ना पाठकलाई पूर्णरूपमा विश्वासमा लिने प्रयास स्वरूप केही कुरा भनिरहेको हुन्छ । यही नै निबन्धको सूचनात्मकता हो ।<sup>५८</sup>

यसरी वस्तु, शैली र उद्देश्य निबन्धका आवश्यक तत्त्व हुन् । निबन्धको उपर्युक्त तत्त्वहरूको मात्रात्मक सन्निवेशले गर्दा सबै निबन्ध एकै प्रकारका नभएर विभिन्न प्रकारमा विभक्त हुन्छन् ।

<sup>५६</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १७२ ।

<sup>५७</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. २१ ।

<sup>५८</sup> ऐजन ।

### ३.३.४ निबन्धको वर्गीकरण

साहित्यका विभिन्न विधामध्ये निबन्ध कान्छो गद्य विधा हो । विषयवस्तु र भाषाशैलीको विविधता तथा रचनात्मक अनेकताका कारण निबन्ध स्वयंमा जटिल बन्न पुगेको देखिन्छ । त्यसैले यसको अध्ययनमा सरलता ल्याउन निबन्धको वैज्ञानिक तथा व्यवहारिक वर्गीकरण हुन आवश्यक भएको छ ।

विभिन्न विद्वान्हरूले विषयवस्तु, भाषाशैली, प्रवृत्ति, व्यक्तित्वको प्रधानता र गौणताका आधारमा निबन्धको वर्गीकरण गरेको पाइन्छ । पाश्चात्य जगत्मा निबन्ध सम्बन्धी आत्मपरक र वस्तुपरक गरी दुई भिन्न धारणा देखापरेको पाइन्छ । मोन्तेन आत्मपरक निबन्धको पक्षमा छन् भने वेकन निबन्धको वस्तुपरक पक्षमा छन् । हिन्दी साहित्यका विशिष्ट समीक्षक तथा इतिहासकार रामचन्द्र शुक्लले निबन्धको वर्गीकरण गर्ने क्रममा शैलीलाई मुख्य आधार बनाएर विचारात्मक, भावनात्मक र वर्णनात्मक गरी तीन किसिमले वर्गीकरण गरेका छन् ।<sup>८९</sup> विषय र प्रवृत्तिका आधारमा विश्वनाथले आत्मनिष्ठ र वस्तुनिष्ठ गरी दुई किसिमले वर्गीकरण गरेका छन् ।<sup>९०</sup> जयनाथ नलिनले निबन्धलाई निजात्मक र परात्मक गरी दुई किसिमले वर्गीकरण गरेको पाइन्छ ।<sup>९१</sup> व्यक्तित्व र विषयका आधारमा हरिहरनाथ द्विवेदीले निबन्धलाई व्यक्तिगत र वस्तुगत गरी दुई किसिमले वर्गीकरण गरेका छन् ।<sup>९२</sup> नेपाली साहित्यमा ईश्वर बरालले निबन्धलाई निजात्मक र परात्मक गरी दुई भागमा वर्गीकरण गरेको पाइन्छ ।<sup>९३</sup> बालकृष्ण पोखरेलले निबन्धलाई विषयवस्तुका आधारमा जमर्का र प्रबन्ध गरी वर्गीकरण गरेका छन् ।<sup>९४</sup>

निबन्धमा शैली र प्रवृत्तिभन्दा अधिकतर व्यक्तित्वको प्रभाव पर्ने भएकाले निबन्धलाई व्यक्तित्वको प्रधानता र गौणताका आधारमा मूल रूपमा आत्मपरक र वस्तुपरक गरी दुई भागमा बाँड्न सकिन्छ । आत्मपरक निबन्धलाई विचारात्मक, भावात्मक र वैयक्तिक गरी तीन भागमा र वस्तुपरकलाई निबन्ध र प्रबन्ध गरी दुई भागमा वर्गीकरण गरी निबन्धलाई वर्णनात्मक र विवरणात्मक गरी दुई भागमा

<sup>८९</sup> रामचन्द्र शुक्ल, पूर्ववत्, पृ. ४८२ ।

<sup>९०</sup> विश्वनाथ प्रसाद, कला एवं साहित्य : प्रवृत्ति और परम्परा, (पटना : विहार हिन्दीग्रन्थ अकादमी ई. १९७३), पृ. १६५ ।

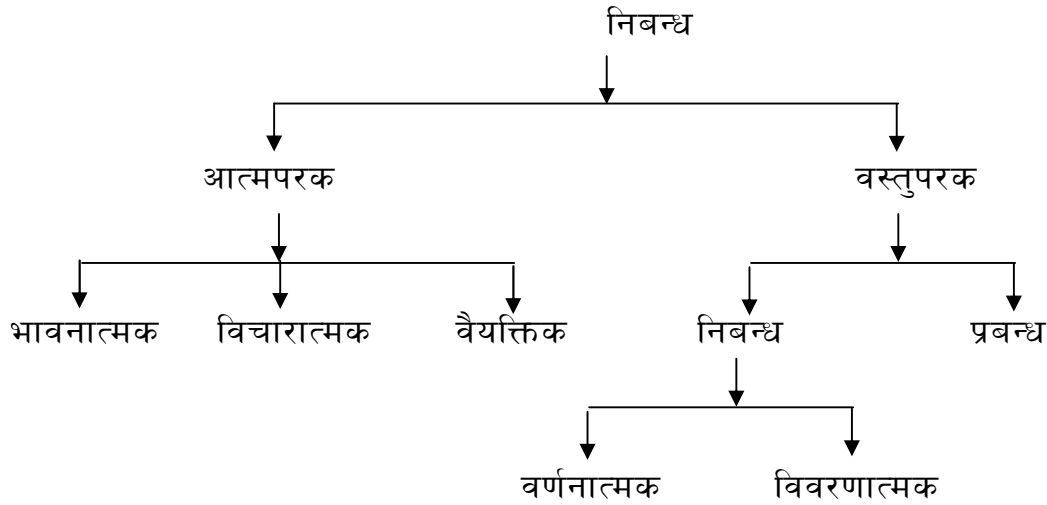
<sup>९१</sup> जयनाथ नलिन, पूर्ववत्, पृ. १४ ।

<sup>९२</sup> हरिहरनाथ द्विवेदी, पूर्ववत्, पृ. १ ।

<sup>९३</sup> ईश्वर बराल, पूर्ववत्, पृ. १८

<sup>९४</sup> बालकृष्ण पोखरेल, कलेजस्तरका निबन्धै निबन्ध, (काठमाडौं : सहयोगी प्रकाशन, २०२७), पृ. ९ ।

विभाजन गर्नु उपयुक्त देखिन्छ । निबन्धको यस वर्गीकरणलाई निम्नानुसार प्रस्तुत गरिन्छ -



### ३.४.१ आत्मपरक निबन्ध

आत्मपरक निबन्धलाई निजात्मक निबन्ध पनि भनिन्छ । यस्ता खालका निबन्धमा व्यक्तिको मुख्य स्थान हुन्छ भने विषयको गौणस्थान रहन्छ । व्यक्तिका निजी अनुभव, विचार र विद्वताहरू यस्ता निबन्धमा बढी मात्रामा प्रकट हुन्छन् ।<sup>९५</sup> यस्ता निबन्धमा विषयभन्दा लेखकको व्यक्तित्वको आत्माभिव्यक्तिको प्रस्तुति हुने हुनाले बाहिरी वस्तुहरू व्यक्तिको व्यक्तित्व प्रस्तुत गर्ने साधन मात्र मानिन्छन् । आत्मपरक निबन्ध लेखकको सेरोफेरोसँग सरोकार राख्दछ र यो मन्मय हुन्छ ।<sup>९६</sup> आत्म प्रकाशनका निम्ति स्रष्टाले आफ्ना अनुभूति यात्रामा पाठकलाई डोच्याउँछ, यसरी मन, आत्मा, विवेक जस्ता विषय र राष्ट्र, राष्ट्रियता अनुशासन प्रकृति सौन्दर्यता जस्ता वस्तुपनि आत्मपरक निबन्धका विषय हुन सक्छन् । सामान्यतया स्रष्टाको व्यक्तित्व सशक्त भएका जुनसुकै वस्तुपनि आत्मपरक निबन्धमा राख्न सकिन्छ । यसरी निबन्धकारका भावना, विचार तथा दृष्टिकोण निजात्मक निबन्धमा प्रकट गरिने भएकाले निजात्मक निबन्धलाई भावात्मक विचारात्मक र वैयक्तिक गरी तीन प्रकारमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

<sup>९५</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. २४ ।

<sup>९६</sup> ईश्वर बराल, पूर्ववत्, पृ. १८ ।

## क) भावात्मक निबन्ध

विचार र वैयक्तिक अभिव्यक्तिभन्दा भावपक्ष प्रबल भएको निबन्ध भावात्मक निबन्ध हो । यस्तो निबन्धमा स्रष्टा संवेदनशील रहन्छ, र आफ्ना अनुभूतिजन्य भावलाई व्यक्त गर्न अग्रसर देखिन्छ । भावात्मक निबन्धमा अमूर्त भावात्मक विषयहरू जस्तै आशा, निराशा, प्रेम, करुणा, परोपकार, देशभक्ति आदिलाई संवेदनात्मक तुल्याई सरल आलङ्कारिक पदावलीमा प्रस्तुत गरिन्छ ।<sup>९७</sup> भावात्मक निबन्धमा निबन्धकार सधैं भावमा बग्छ, त्यहाँ डुबेर वस्तुलाई गौण बनाई आफू बहकिने हुनाले त्यस्ता निबन्धमा कल्पनाको प्रधान्य रहन्छ । यस्ता निबन्धमा तर्कवितर्कको कुनै स्थान हुँदैन हृदयका उदात्त अनुभूतिहरू तीब्र भावना र चरम भावुकता पाइन्छ ।<sup>९८</sup> भावात्मक निबन्धमा लक्षणा र व्यञ्जनाशक्तिको प्रयोग बढी हुन्छ । यस्ता निबन्धको भाषाशैली पनि सरल, सरस र आलङ्कारिक हुन्छ । भावात्मक निबन्धमा लेखकले वस्तुको वर्णन भावना र कल्पनाका सहारामा अत्यन्त रागात्मक र कलात्मक रूपले गरेको हुन्छ ।

## ख) विचारात्मक निबन्ध

विचारात्मक निबन्धमा बुद्धि वा विचारको प्रबलता हुन्छ । बुद्धि र हृदय दुवै आन्तरिक पक्ष भएकाले लेखकलाई यस्ता निबन्धमा खासगरी तर्क र बौद्धिक व्यायामको आवश्यकता पर्दछ । विचारात्मक निबन्धमा लेखकले विषयको वर्णन गर्दै आफ्ना मत सिद्धान्त स्थापित गर्ने प्रयास गरिरहेको हुन्छ । यस्ता निबन्धमा कला, काव्य, राजनीति, धर्म, दर्शन, विज्ञान, शिक्षा, समाजशास्त्र मनोविज्ञानजस्ता विचारप्रधान विषयहरूको प्रस्तुति हुन्छ ।<sup>९९</sup> जुन विषयमा निबन्ध लेखेपनि त्यस्ता विषयमा लेखकका वैयक्तिक चिन्तन समेत प्रस्तुत भएका हुन्छन् । यसमा निबन्धकारको कल्पना, भावनाले पूर्णरूपमा खेल्ने मौका पाएको हुन्छ, तापनि मात्रात्मक दृष्टिले हेर्दा बुद्धिपक्षकै प्राबल्य रहन्छ, विचारहरूको तारतम्य, रोचकता विषयगत गहनता विचारात्मक निबन्धका विशेषता हुन् ।<sup>१००</sup> खँदिला वाक्य र

<sup>९७</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १६९-१७० ।

<sup>९८</sup> जयनाथ 'नलिन', पूर्ववत्, पृ. २२ ।

<sup>९९</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १६९ ।

<sup>१००</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. २५ ।

अनुच्छेदमा अभिव्यक्त हुने विचारात्मक निबन्धको भाषाशैली कसिलो सुगठित र आलङ्कारिक हुन्छ ।

### ग) वैयक्तिक निबन्ध

मूलतः व्यक्तित्वको प्रकटीकरण भएका निबन्धलाई वैयक्तिक निबन्ध भनिन्छ । यसमा निबन्धकारका भावुकताको आत्मप्रकाशन हुन्छ । वैयक्तिक निबन्धको विषयवस्तु स्वयं स्रष्टा नै हुन्छ । यस्ता निबन्धमा निबन्धकारका नितान्त वैयक्तिक अनुभूति वा हर्ष-विस्माद, सुख-दुःख जस्ता भावहरू प्रस्तुत भएका हुन्छन् । वैयक्तिक निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नो निजी मनको भावलाई रागात्मक रूपमा प्रस्तुत गर्दछन् ।<sup>१०१</sup> अन्तर्मुखी प्रवृत्ति, अनौपचारिकता र आत्माभिव्यञ्जना वैयक्तिक निबन्धका खास विशेषता हुन् । वैयक्तिक निबन्धलाई निश्छल, निष्कपट र मित्रवत् गफ गराइका शैलीमा प्रस्तुत गरिन्छ । नढाँटी आफ्ना मनका भाव पोखिने हुनाले यस्ता निबन्धमा निबन्धकारको आत्मप्रकाशन भएको हुन्छ ।

### ३.४.२ वस्तुपरक निबन्ध

वस्तुपरक निबन्धलाई विषयप्रधान र निवैयक्तिक निबन्ध पनि भनिन्छ । यो निबन्ध विषयकै वरपर घुम्छ, र यस्ता निबन्धमा स्रष्टा तटस्थ रही वस्तुको चिनारी गराउँछ र आफ्ना अनुभूतिमा नभै वस्तुतथ्यको विशेष प्रकाशन गर्दछ । यस्ता निबन्धको प्रमुख लक्ष्य आत्मप्रकाशन नभई सूचनात्मकता हुन्छ ।<sup>१०२</sup> वस्तुपरक निबन्धको विषय इतिहास दर्शन, विज्ञान, भ्रमण, प्रकृति आदि रहन सक्छन् । परात्मक निबन्धमा बाह्य वस्तुको चिनारी गराउने गरिन्छ ।<sup>१०३</sup> विषयवस्तुको वर्णन र विवरणको प्रस्तुति नै परात्मक निबन्धको मुख्य विशेषता हो । परात्मक निबन्धमा निजानुभूतिको वास्ता नगरी 'पर' वा वस्तुसत्यको यथार्थ चित्त प्रस्तुत गर्नु निबन्धकारको मूललक्ष्य हुन्छ । विषयवस्तुगत वर्णन र विवरणको प्रधानताका आधारमा परात्मक निबन्धलाई दुई प्रकारमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ : वर्णनात्मक र विवरणात्मक ।

<sup>१०१</sup> ईश्वर बराल, पूर्ववत्, पृ. १९ ।

<sup>१०२</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. २३ ।

<sup>१०३</sup> ईश्वर बराल, पूर्ववत्, पृ. १८ ।

## क) वर्णनात्मक

कुनै पनि वस्तु, घटना, प्रकृति आदिको वर्णन गरिएका निबन्धलाई वर्णनात्मक निबन्ध भनिन्छ । कुनै वस्तुबारे नालीबेली छुट्टाउदै वर्णन गर्नु त्यसको वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत गर्नु आफ्नो वस्तुमूलक दृष्टि पाठक समक्ष राख्नु वर्णनात्मक निबन्धको उद्देश्य हुन्छ । वर्णनात्मक निबन्धमा विचार, अनुभूति, कल्पना सबैले वर्णनलाई प्राणवान मोहक आकर्षक र रसिलो बनाउनको लागि महत्त्वपूर्ण भूमिका खेल्दछन् ।<sup>१०४</sup> यसमा निबन्धकारको गहन चिन्तन र मौलिक जीवनदर्शनको अपेक्षा राखिदैन, केवल निजी भावनाले निबन्धलाई सिगार्ने काम मात्र हुन्छ । वर्णनशैलीमा रोचकता ल्याउन अलङ्कारमय प्राञ्जल भाषाको प्रयोग यसमा गरिन्छ । यसमा सरल सुबोध प्राञ्जल र आलङ्कारिक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको हुन्छ । सरल र सुबोध वर्णनको अपेक्षा गरिने हुँदा वर्णनात्मक निबन्धमा प्रसाद शैलीको प्रयोग गरिन्छ ।

## ख) विवरणात्मक

कुनैपनि घटना, वृत्तान्त र परिवेशको वेलीविस्तार प्रस्तुत गरिएका निबन्धलाई विवरणात्मक निबन्ध भनिन्छ । घटनाको क्रमबद्ध प्रस्तुति यो निबन्धको मुख्य लक्ष्य हुन्छ र यसमा मूलतः इतिहास सम्बन्ध वस्तु रहन्छन् । घटनामा लेखकको आत्मीयता र व्यक्तित्वको छाप प्रधान विशेषताका रूपमा रहेको हुन्छ ।<sup>१०५</sup> विवरणात्मक निबन्धमा थोरवहुत आत्मप्रकाशन रहेता पनि विशेषगरी ऐतिहासिक तथ्यका खोजमा केन्द्रीत रही ती तथ्यको सिलसिलाबद्ध संयोजन गर्दै पाठकमा उब्जने आकर्षणलाई तर्क र प्रमाणद्वारा सूचित गरी विषयवस्तुको इतिवृत्त दिइएको हुन्छ । वृत्तान्तमा आधारित रहेर पनि इतिहासभन्दा भिन्न तरिकाले विवरणात्मक निबन्धमा घटनावर्णनलाई प्रभावकारी रूपमा लिन सकिन्छ ।<sup>१०६</sup> विवरणात्मक निबन्धमा कथातत्त्व पनि आउन सक्छ । यस्ता निबन्धमा घटनाको कार्यकारण

<sup>१०४</sup> जयनाथ 'नलिन', पूर्ववत्, पृ. १८ ।

<sup>१०५</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १६९ ।

<sup>१०६</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. २५ ।

श्रृङ्खला मिलेको हुन्छ । विवरणात्मक निबन्धमा भावना, कल्पना र विचारतत्त्व आउने भए पनि निबन्धकार विषयप्रति नै बढी सजग रहन्छ । सरल, सुबोध र व्यासशैलीका माध्यमबाट विवरणात्मक निबन्धमा घटना र वृत्तान्तको सुसम्बद्ध प्रस्तुति गरिन्छ ।

### ३.५ नेपाली निबन्धको विकासक्रम

नेपाली गद्यको प्रारम्भमा नेपाली निबन्धको पनि गर्भाधान भयो र आजसम्म यसको विकास चलिरहेको छ । यस समयसम्ममा विभिन्न प्रतिभाहरूका नयाँ नयाँ प्रयोग र लेखनबाट नेपाली निबन्धले आफ्नो समुन्नत रूप प्राप्त गरिसकेको पाइन्छ । यसक्रममा यहाँ संक्षिप्त रूपमा नेपाली निबन्धको विकासक्रमको चर्चा प्रस्तुत गर्दै नेपाली निबन्ध परम्परामा आनन्ददेव भट्टको आगमन र उनको निबन्धयात्रालाई प्रस्ट पारिन्छ ।

### ३.५.१ नेपाली निबन्धको इतिहास

नेपाली साहित्य परम्परामा निबन्ध अपेक्षाकृत कान्छो विधा मानिएतापनि यसको ऐतिहासिकता चाहिँ गद्य साहित्यको इतिहासकै सापेक्षतामा खोज्नु पर्ने हुन्छ । यो आख्यानोत्तर गद्य विधा भएकाले नेपाली गद्यको इतिहाससँग यसको पनि इतिहास जोडिएको छ । नेपाली भाषाको उद्भवसँगै अभिलेख, तमसुक, ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र, औषधिमूलोका पाठ्य पुस्तकहरू, राजकाजको यात्रासम्बन्धी अध्यादेश अभिलेखीय गद्यांशहरू देखा पर्दछन् र यिनै प्राचीन गद्यका नमूनालाई निबन्धको पृष्ठभूमिकालीन अनुहार मान्न सकिन्छ । नेपाली वाङ्मयका प्राचीन अभिलेखमा पाइने पुराना गद्यहरूसँगै यस विधाले आफ्नो आधारशीला सिर्जेको छ र यिनै अभिलेखीय परम्पराबाट प्रारम्भ भै पृथ्वीनारायण शाहको 'दिव्योपदेश' (१८३१) सिर्जना पूर्वको अवधि यसको पृष्ठभूमिका रूपमा देखापर्दछन् ।

दिव्योपदेशको गद्य लेखनदेखि लिएर आजसम्मको विकासक्रम हेर्दा नेपाली निबन्धलाई तीन चरणमा विभाजन गरी प्रस्तुत गर्न उपर्युक्त हुन्छ ।

### ३.५.२ प्राथमिक काल (१८३१-१९५७)

नेपाली गद्यको प्रारम्भ सुन्दर नमुना पृथ्वीनारायण शाहको 'दिव्योपदेश' (१८३१) मा देख्न सकिन्छ । जहाँ गद्यको स्वतन्त्र गति पाइनुका साथै विचार र चिन्तनको पनि विशेष प्रयोग भेटिन्छ । त्यसैले यसलाई नेपाली निबन्धको पहिलो रचना र नेपाली निबन्धविधाको आद्यप्रारूप मान्न सकिन्छ ।<sup>१०७</sup> निजात्मक रूपमा प्रस्तुत भएको यो कृतिमा आख्यानोत्तर गद्य र विचारको प्रस्तुतिमा स्वत्वको प्रभाव रहेको छ ।

दिव्योपदेश पछि देखापरेका उल्लेखनीय कृति मध्ये रामभद्र पाध्य रेग्मीको लक्ष्मीधर्म सम्वाद (१८५१), वाणीविलास पाँडेको बागमतीपुल स्तम्भअभिलेख (१८६८), दैवकेशरी अर्ज्यालको गोरक्षयोग शास्त्र (१८७७), यदुनाथ उपाध्यायको रतिकोषसार (१८८५), सुन्दरानन्द बाँडाको त्रिरत्न सौन्दर्यगाथा (१८८९-९०), अज्ञात लेखकको जङ्गबहादुरको बेलायत यात्रा (१९१०), बेनामी बत्तीस सालको रोजनाम्चा (१९३२), मोतीराम भट्टको कवि भानुभक्ताचार्यको जीवन चरित्र (१९४८) र

<sup>१०७</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १७२ ।

चिरञ्जीवी शर्माको आफ्नु कथा (१९५५) आदिलाई नेपाली गद्यको ऐतिहासिक विकासका महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मान्न सकिन्छ।<sup>१०८</sup> नेपाली गद्यलेखनलाई विकसित तुल्याउने क्रममा यिनको भूमिका उल्लेख्य रहेको छ।

विकसित भाषामा लेखिएको नेपाली निबन्धको प्रारम्भिककालीन स्वरूपलाई हेर्दा मौलिकताको उचाइमा पुगेको विषयगत विविधतामा छरिएको स्तरीय गद्यसँगै हुर्किएको देखिन्छ। यिनै महत्त्वपूर्ण घटना सामयिक मोडमा सामूहिक प्रस्तुति बन्न गएका विविध रचनाहरू प्राथमिककालीन स्वरूप र प्रयोग मानिन्छन्।

### ३.५.३ माध्यमिक काल (१९५८-१९९१)

पत्रिकासँग सम्बद्ध हुन थालेपछि नेपाली निबन्धको इतिहासमा माध्यमिककालको प्रारम्भ हुन्छ। गोरखापत्र (१९५८) को प्रकाशन हुन थालेपछि नेपाली निबन्धको माध्यमिककाल आरम्भ हुन्छ। यसमा निबन्धनै भनी किटानगर्न नसकिएपनि निबन्धात्मक र प्रबन्धात्मक प्रवृत्ति भएका थुप्रै आख्यानेत्तर गद्य रचनाहरू प्रकाशित भएका छन्। नेपाली निबन्धको प्रारूप निर्माणको लागि यस पत्रिकाको महत्त्वपूर्ण योगदान रहेको छ। यसमा बेनामी लेखकका 'अघि मूर्ख पछि बुद्धिमान' (१९५९), 'वसन्त वर्णनम्' (१९६१), 'मातृभाषाको उन्नति' (१९६६), 'निद्रा' (१९६६), 'बफादारी' (१९७०), 'शिशु शिक्षा' (१९७०), 'हावा' (१९७३) आदि। त्यस्तै नामाङ्कित गद्यकृतिहरूमा शम्भुप्रसाद ढुङ्गेलको 'समय' (१९७६) 'प्रभात' (१९७६), 'हर्दम याद राख्नुपर्ने कुरा' (१९७६) र 'कविताको फल' (१९७७) तथा वैजनाथ सेढाईको 'तातोपानी र अमिलो पानी' (१९८२) आदि यस पत्रिकामा निबन्धको प्रारम्भिक रूपरेखा निर्माणको लागि यी रचनाहरू प्रकाशित भएका छन्।<sup>१०९</sup>

गोरखापत्रको प्रकाशन पछि पनि अनेकौं पत्रपत्रिकाका माध्यमबाट नेपाली निबन्धले विकसित हुने मौका पायो। यस समयावधिमा सुन्दरी (१९६३), माधवी (१९६५), चन्द्र (१९७१), गोर्खाली (१९७२), चन्द्रिका (१९७४), जन्मभूमि (१९७९), गोर्खासंसार (१९८३) र नेपाली साहित्य सम्मेलन (१९८९) आदि पत्रिकाहरूको

<sup>१०८</sup> दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा, नेपाली साहित्यको संक्षिप्त इतिहास, आठौं संस्करण, (काठमाडौं : साभा प्रकाशन, २०६३), पृ. १२२-१२३।

<sup>१०९</sup> ऐजन।

उल्लेख्य योगदान रहेको छ । **सुन्दरी** (१९६३) पद्य प्रधान पत्रिका भएपनि यसमा 'बेसरी' शीर्षकको निबन्धात्मक लेख र देवीदत्त शर्माको 'उचित चर्चा' (१९६५) शीर्षकको लेखरचना प्रकाशित भएको पाइन्छ ।<sup>११०</sup> **माधवीमा** प्रकाशित राममणि आ.दी.को कवितारीति' (१९६५-६६) महत्त्वपूर्ण निबन्धात्मक कृति हो साथै यस पत्रिकामा प्रकाशित धर्मदत्त शर्मा, रामप्रसाद सत्याल, जयपृथ्वीबहादुर सिंह, मानसिंह अधिकारी, हरिहर आ.दी., दुर्गादेवी आ.दी., कुलचन्द्र गौतम आदिका गद्य लेखरचनाहरू उल्लेखनीय छन् ।<sup>१११</sup> **चन्द्र** गद्यप्रदान पत्रिका हो । यसमा पद्मनाथ सापकोटाको 'परिश्रमको विभाग' (१९७१), सूर्यविक्रम ज्ञवालीको 'सोक्रेटिजको वहस' (१९७१), वैजनाथ सेढाईको 'हेमन्त ऋतु वर्णन' (१९७१), पारसमणि प्रधानको 'अध्यवसाय' (१९७२) र 'विद्या' (१९७२) आदि विविध विषयका लेखरचनाहरू प्रकाशित छन् ।<sup>११२</sup> **गोर्खाली** (१९७२) मा शम्भुप्रसाद हुङ्गेल, पारसमणि प्रधान, पद्मनाथ सापकोटा आदिका वस्तुपरक निबन्धात्मक रचनाहरू प्रकाशित भएका छन् ।<sup>११३</sup>

दार्जीलिङको खरसाडबाट प्रकाशित शम्भुप्रसाद हुङ्गेलको 'महेन्द्रमल्ली' (१९७५) पहिलो आत्मपरक निबन्ध हो ।<sup>११४</sup> यस पत्रिकामा शम्भुप्रसादकै चन्द्रिका (१९७५), प्रेम (१९७५) का साथै सूर्यविक्रम ज्ञवाली, दुर्गादेवी आ.दी. रामचन्द्र उपाध्याय, प्रभाकर आदिका निबन्धहरू पनि यसमा प्रकाशित छन् ।<sup>११५</sup> १९७९ मा उदाएको **जन्मभूमि** पत्रिकामा कृष्णप्रसाद कोइराला, धरणीधर कोइराला, रामचन्द्र अधिकारी आदिका विचारात्मक तथा भावात्मक निबन्धहरू प्रकाशित भएका छन् ।<sup>११६</sup> यस्तै **गोर्खा संसार** (१९८३) मा विधावती नाहान, मानवीर रसाइली, हर्षबहादुर राई आदिका समाजसुधारक र राजनैतिक चेतना भएका निबन्ध प्रकाशित भएका छन् ।<sup>११७</sup> १९८९ को **नेपाली साहित्य सम्मेलन** पत्रिकामा सूर्यविक्रम ज्ञवाली, पारसमणि प्रधान, रूपनारायण सिंहका साहित्य सेवा, चरित्र सुधार, नैतिकता आदि

<sup>११०</sup> ऐजन ।

<sup>१११</sup> पूर्ववत्, पृ. १२४ ।

<sup>११२</sup> ऐजन ।

<sup>११३</sup> राजेन्द्र सुवेदी, पूर्ववत्, पृ. ५७ ।

<sup>११४</sup> केशवप्रसाद उपाध्याय, पूर्ववत्, पृ. १७२ ।

<sup>११५</sup> दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १२५ ।

<sup>११६</sup> ऐजन ।

<sup>११७</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ३१ ।

विषयका निबन्धहरू प्रकाशित देखिन्छन्।<sup>११८</sup> यस कालका निबन्धमा भाषा, साहित्य, चरित्रसुधार, नैतिकता र राष्ट्रिय उत्थानको आकाङ्क्षाका साथै औपदेशिकता, सामाजिक र जातीय सुधारवादी चेतना पनि प्रस्तुत गरिएको पाइन्छ। यस कालका निबन्धमा संरचनागत शिथिलता र भाषिक स्थिरताको अभाव देखिन्छ, भने ती प्रायः वर्णनात्मक र विवरणात्मक किसिमका छन्। माध्यमिक कालीन निबन्धमा व्यक्तिको वैयक्तिक अभिव्यञ्जना र दार्शनिक उच्चता न्यून रहेपनि नेपालीपनको उत्थानको लागि आह्वान गरिएको छ। यस कालमा स्वदेश तथा विदेशबाट स्वतन्त्र चिन्तन सहित स्रष्टाहरूले प्रजातान्त्रिक सामाजिक वातावरणको सन्देश छर्दै दर्जनौ रचनाहरूको सिर्जना गरेर नेपाली निबन्धको आधुनिक युगलाई बलियो पृष्ठभूमि निर्माण गरेका छन्।

### ३.५.४ आधुनिक काल (१९९२- हालसम्म)

वि.सं. १९९२ मा शारदा पत्रिकाको प्रकाशन भएपछि नेपाली साहित्यको इतिहासमा नयाँ अध्यायको शुरुवात भयो। यसको प्रकाशन नेपाली साहित्य इतिहासमा एक महत्त्वपूर्ण घटना थियो। शारदा (१९९२० बाट नेपाली निबन्ध पनि आधुनिक कालमा प्रवेश गर्‍यो।

यस काललाई विविध चरणमा उपकालको रूपमा राखेर चर्चा गरिएको पाइन्छ र पनि विषयगत विविधता शैली तथा प्रयोग र प्रवृत्तिगत विशेषताले गर्दा यस कालमा मूलतः तीन उपकाल मानेर चर्चा गरिनु सान्दर्भिक मानिएको छ।

प्रथम चरण (१९९२-२००३)

द्वितीय चरण (२००४-२०१९)

तृतीय चरण (२०२०-हालसम्म)

यी सबै चरणमा निबन्धात्मक विशेषताको प्रयोग छ, र प्रयोगजन्य नवीनताले विविध जगतमा कालखण्डीय अस्तित्व कायम गरेको छ।

---

<sup>११८</sup> ऐजन।

### ३.५.४.१ पहिलो चरण (१९९२-२००३)

वि.सं. १९९२ देखि २००३ सालसम्मको समयावधि आधुनिक नेपाली निबन्धको प्रथम चरण हो । आधुनिक नेपाली निबन्धको प्रथम चरण लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको शारदा (१९९२) पत्रिकामा प्रकाशित निजात्मक निबन्ध 'अषाढको पन्ध्र'बाट प्रारम्भ भएको हो । देवकोटा प्रथम आधुनिक नेपाली निबन्धकार हुन् भन्ने विषयमा विवाद पाइन्छ । कतिपय समालोचकहरूले शारदाको पहिलो अङ्कमा प्रकाशित बालकृष्ण समको 'वर्दाहामा शिकार' लाई पहिलो आधुनिक निबन्ध भनेको पाइन्छ । तर यो निबन्ध नभएर शिकारविषयक कथा हो ।<sup>११९</sup> त्यसैले पनि देवकोटालाई आधुनिक नेपाली निबन्धकार मान्न सकिन्छ । यस चरणमा देवकोटाको अनूदित 'प्रसिद्ध प्रबन्ध सङ्ग्रह' (१९९८) र मौलिक 'लक्ष्मी निबन्ध सङ्ग्रह' (२००२) जस्ता निबन्धसङ्ग्रहहरू प्रकाशित छन् । देवकोटा मूलतः आत्मपरक निबन्धकार हुन् । उनले आफ्ना निजी जीवनका अनुभवहरूलाई विषय बनाएर रागात्मक, काव्यात्मक र कलात्मक रूपमा प्रस्तुत गरी नेपाली निबन्धको आधुनिककालको पहिलो चरणमै पूर्ण रूपमा आधुनिकताको सूत्रपात, विस्तार र विकास गरे । यसै समयमा समका 'त्यो' (१९९२), 'पानी' (१९९२), 'प्राकृतिक जीवन' (१९९२), 'आत्मविश्वास' (१९९२), 'भाषा' (१९९८) 'देखेको' (२०१०) आदि निबन्धहरू देखा परे । सम वस्तुपरक धारका निबन्धकार हुन् । उनका निबन्धमा वैचारिकता, वर्णनात्मकता, विवरणात्मकता, तार्किकता, बौद्धिकता जस्ता प्रवृत्तिहरू पाइन्छन् । देवकोटाले आत्मपरक निबन्धलाई अघि बढाए भने समले वस्तुपरक निबन्धलाई अघि बढाए ।

यस्तै देवकोटा र समपछि आधुनिककालको यस चरणमा प्रेमराज शर्माको हास्यव्यङ्ग्य निबन्ध 'पण्डितजीको चिठी' (१९९२), बोधविक्रम अधिकारीको 'फलामे औठी' (१९९२), सागरमणिको परिचयात्मक निबन्ध 'कलंगा दुर्गा' (१९९७) भवानी भिक्षुको यात्रा निबन्ध 'शिमलासम्म' (१९९९) आदि निबन्धहरू प्रकाशित छन् ।<sup>१२०</sup>

भारतीय उत्तराञ्चल क्षेत्रबाट पनि नयाँ नयाँ शैलीमा दर्जनौं निबन्ध देखा परे । 'नेपाली साहित्य सम्मेलन' पत्रिकामा धरणीधरको 'साहित्य कुषुमाञ्जली' (१९९२) पारसमणिको 'मदौरु आमाको जोखना' (१९९२) जस्ता निबन्धहरू देखिए भने राष्ट्रिय

<sup>११९</sup> दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १२६ ।

<sup>१२०</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ३५ ।

अस्तित्व बोध गराउने रूपनारायण सिंहको 'जातीय जीवनमा साहित्यको स्थान' (१९९२) र सूर्यविक्रम ज्ञवालीको 'रसमय जीवन' (१९९३) आदिको प्रकाशन पछि पनि यस युगले आधुनिकताको नयाँ रूप लिएको छ ।<sup>१२१</sup> निबन्धका नयाँ फाट र तिनका प्रयोगमा यो प्रयास उपलब्धिमूलक मानिन्छ ।

आधुनिक नेपाली निबन्धको प्रथम चरणको नेतृत्व देवकोटाले गरेका हुन् र यस चरणमा स्वच्छन्दतावादी धाराको प्रभुत्व रहेको छ ।<sup>१२२</sup> यस्तै तार्किक र बौद्धिक निबन्धहरू लेखेर बालकृष्ण सम यस चरणका दोस्रो विशिष्ट प्रतिभाका रूपमा चिनिन पुग्यो । यस कालका निबन्धमा आत्मपरक र वस्तुपरक दुवै खाले निबन्धका साथसाथै हास्यव्यङ्ग्यात्मक निबन्धको विकास पनि भएको छ । मौलिक तथा अनूदित निबन्धहरूमा हार्दिकता, बौद्धिकता, शैलीशिल्पगत नवीनताका साथै विषयवस्तु, संरचना र स्वरूपमा विविधता जस्ता प्रवृत्तिहरू देखिएका छन् ।

### ३.५.४.२ दोस्रो चरण (२००४-२०१९)

नेपाली निबन्धको विकासमा स्वदेश तथा विदेशबाट प्रकाशित विभिन्न पत्रिकाहरूको भूमिका महत्त्वपूर्ण रहेको छ । यस चरणमा पनि साहित्यस्रोत (२००४: काठमाडौं), युगवाणी (२००४: बनारस), भारती (२००६), प्रगति (२०१०), गोर्खा (२०११), नौलो पाइलो (२०१३) आदि साहित्यिक पत्रिकाहरूको उल्लेख्य भूमिका रहेको छ । 'साहित्यस्रोत' पत्रिकामा प्रकाशित हृदयचन्द्रसिंह प्रधानको 'तीस रुपियाँको नोट' (२००४) निबन्धसङ्ग्रहबाट आधुनिक नेपाली निबन्धको पहिलो चरणको समाप्ति र दोस्रो चरणको थालनी भएको हो । उनले 'जुँगा' (२००९) 'कुरा साँचो हो' (२०११) र 'अफसोच' (२०११) जस्ता निबन्धसङ्ग्रहको प्रकाशन यस चरणमा गरेका छन् । यिनमा देवकोटाको जस्तो कवित्व, कल्पना र भावुकता नपाइए पनि समाजसुधारका भावनाले प्रेरित भएर सरल र प्रभावकारी आत्मपरक शैलीले पाठकहरूलाई आकर्षित गर्नसक्ने क्षमता रहेको पाइन्छ ।<sup>१२३</sup> आत्मपरकता वैचारिकता, यथार्थवादी दृष्टिकोण, व्यङ्ग्यात्मकता, भाषिक सरलता आदि यिनका प्रमुख प्रवृत्ति हुन् । यिनी प्रगतिशील निबन्धकार हुन् । देवकोटामा भए जस्तो

<sup>१२१</sup> ऐजन ।

<sup>१२२</sup> राजेन्द्र सुवेदी, स्नातकोत्तर नेपाली निबन्ध, तेस्रो संस्करण, (काठमाडौं : पाठ्यसामग्री पसल, २०५६), पृ. १६ ।

<sup>१२३</sup> रविलाल अधिकारी, 'नेपाली निबन्धको विकास', गरिमा (काठमाडौं : वर्ष १३, अङ्क १२, पूर्णाङ्क १००, २०४७), पृ. ६५ ।

अध्ययनशीलता, विश्लेषणात्मकता, काव्यात्मकता र अनुभूतिको तीक्ष्णता प्रधानका निबन्धमा पाइँदैनन् तर प्रगतिशीलता र वैचारिकतामा उनी देवकोटाभन्दा माथि उठेका छन् ।<sup>१२४</sup> प्रधानले समाजमा रहेका नराम्रा प्रवृत्तिहरूप्रति आलोचना, आफ्ना जीवनमा भोगेका सत्य, आफू बाँचेको परिवेश र आफ्नै सुखदुःखलाई निश्छलतापूर्वक मित्रका गफ गराइका शैलीमा आफ्ना निबन्धमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

यस चरणमा देखापर्ने अन्य निबन्धकारहरूमा बदरीनाथ भट्टराई 'पच्चीस प्रबन्ध' (२००८) का साथ देखा पर्दछन्, भीमनिधि तिवारीको 'पन्ध्र प्रबन्ध' (२००८), श्यामप्रसाद शर्माको आत्मपरक निबन्धसङ्ग्रह 'त तिमी तपाईं हजुर' (२०१४), केशवराज पिडालीको हास्यव्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह 'खै खै' (२०१६), चूडानाथ भट्टरायको दर्शन विषयक निबन्धसङ्ग्रह 'निबन्ध चूडामणि' (२०१६) यस चरणमा प्रकाशित निबन्धसङ्ग्रहहरू हुन् ।<sup>१२५</sup> बदरीनाथ भट्टराई, भीमनिधि तिवारीहरूबाट परात्मक निबन्धमा गति आएको छ भने प्रेमराज शर्माले शुरुगरेको हास्यव्यङ्ग्य शैलीको विकास केशवराज पिँडालीमा देखापरेको छ । त्यस्तै खोजयुक्त निबन्ध कमल दीक्षितबाट शुरु भएको छ भने आत्मपरक लेखनलाई हृदयचन्द्र र श्यामप्रसाद शर्माले सुधार सन्देशसँगै अगाडि बढाएका छन् ।

यसरी यस चरणमा निजात्मक भन्दा परात्मक निबन्धको आधिक्य हास्यव्यङ्ग्यात्मक परम्परालाई निरन्तरता दिनु विषयको विविधता र क्षेत्रगत अनेकतालाई मूलभूत रूपमा सामाजिक विद्रुपता माथि प्रहार गर्दै कलात्मक व्यङ्ग्य प्रस्तुत गर्ने र स्वतन्त्रता तथा सुधारका स्वरहरू दिने यावत क्षेत्रमा यस युगका निबन्धहरू सफल भएका छन् ।

### ३.५.४.३ तेस्रो चरण (२०२०-हालसम्म)

आधुनिक नेपाली निबन्धको तेस्रो चरणको प्रारम्भ २०२० सालको रूपरेखा पत्रिकामा प्रकाशित शङ्कर लामिछानेको 'सम्भनाको लयमा विलीन हुँदै' भन्ने निबन्धबाट भएको हो । यिनका 'एब्स्ट्र्याक्ट चिन्तन प्याज' (२०२४) र 'गोधूली संसार' (२०२८) गरी दुई निबन्धसङ्ग्रहहरू प्रकाशित छन् । पाश्चात्य साहित्यको नवीन चिन्तन र वादहरूसँग परिचित लामिछाने मूलतः आत्मपरक

<sup>१२४</sup> तारानाथ शर्मा, नेपाली साहित्यको इतिहास, तेस्रो संस्करण, (काठमाडौँ : नवीन प्रकाशन, २०५१), पृ. १४० ।

<sup>१२५</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ३९ ।

निबन्धकार हुन् । उनका निबन्धमा चिन्तन र भावको समन्वित पाइन्छ । भावकै केन्द्रीयतामा विचार, तर्क र चिन्तनलाई प्रस्तुत गर्ने निबन्धकार लामिछानेका निबन्धमा लयात्मक, चित्रात्मक काव्यात्मक भाषाको प्रयोग पाइन्छ । उनी रचनागत शिल्पमा प्रयोगवादी मान्यता स्थापना गर्ने काममा प्रयत्नरत देखिन्छन् ।<sup>१२६</sup> प्रयोगवादी शैलीको उत्कर्ष, तर्कहरूको विशेषता र भावुकताको छिपछिपेपन निबन्धकार लामिछानेको विशिष्टता हो । अमूर्त लेखन र चेतनप्रवाह पद्धति उनका शैलीशिल्पगत विशेषता हुन् । यस चरणका अन्य निबन्धकारहरूमा कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान, बालकृष्ण पोखरेल, तारानाथ शर्मा, भैरव अर्याल आदि चर्चित देखिन्छन् ।<sup>१२७</sup>

कृष्णचन्द्रसिंह प्रधानको 'शालिक' (२०२६), 'अनाम सत्य' (२०४३) 'पाइला आगतमा टेकेर' (२०४७) आदि निबन्धसङ्ग्रहका अतिरिक्त थुप्रै फुटकर निबन्धहरू पनि प्रकाशित छन् । यिनका निबन्धमा समको वस्तुवादीता, देवकोटाको भावमूलक कवितात्मकता र शङ्कर लामिछानेको प्रयोगशीलता समेतको त्रिकोणात्मक समन्वय रहेको छ ।<sup>१२८</sup> त्यस्तै बालकृष्ण पोखरेलको 'उकुसमुकुस' (२०२९), 'कलेजस्तरका निबन्धै निबन्ध' (२०२७), 'तेस्रो एकमुखे रुद्राक्षको खोजी' (२०४०) जस्ता निबन्धसङ्ग्रह प्रकाशित छन् । यिनी जुनसुकै विषयवस्तुलाई विचार र भावले रङ्गाएर सरल भाषाशैलीमा प्रस्तुत गर्दछन् । संस्मरणात्मक र निजात्मक शिल्पले कतै आख्यानात्मकता र कतै अमूर्तता कतै वस्तुपरकता जस्ता सुन्दर, नमूनाहरू यिनका निबन्धमा पाउन सकिन्छ ।<sup>१२९</sup> दोस्रो चरणमै 'नमस्ते' निबन्धसङ्ग्रह लिएर देखापरेका तारानाथ शर्माका यस चरणमा 'जमर्काहरू' (२०२५) र 'जीवनका छाल' (२०३०) निबन्धसङ्ग्रह देखिएका छन् भने 'बेलाइततिर बरालिँदा' (२०२६) र 'पाताल प्रवास' (२०४०) उनका नियात्रासङ्ग्रह हुन् । शर्माका निबन्धमा जीवनका गहन भावपक्षहरूलाई केलाउनाको साथै सामाजिक बेमेलमाथि तीतो प्रहार गरिएको पाइन्छ । ध्वन्यात्मक अर्थवाट व्यङ्ग्यात्मक अभिव्यक्ति प्रकट गर्ने आधिकारिक व्यक्तित्व शर्माका निबन्धमा भाषामा स्पष्ट अभिव्यक्ति, शुद्ध नेपाली शब्दावली र

<sup>१२६</sup> राजेन्द्र सुवेदी, *स्रष्टा सृष्टि : द्रष्टा दृष्टि*, पूर्ववत्, पृ. ११८ ।

<sup>१२७</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ४२ ।

<sup>१२८</sup> राजेन्द्र सुवेदी, *स्रष्टा सृष्टि : द्रष्टा दृष्टि*, पूर्ववत्, पृ. ११५ ।

<sup>१२९</sup> ऐजन, पृ. १३७ ।

वाक्यहरूको मर्यादित प्रयोग अनि सरस कथनशैलीको प्रयोग पाइन्छ ।<sup>१३०</sup> यस चरणमा हास्यव्यङ्ग्यात्मक निबन्ध लेखनलाई उच्चतामा पुऱ्याउने काम भैरव अर्यालले गरेका छन् । उनका 'काउकुती' (२०१९), 'जयभुँडी' (२०२२), 'गलबन्दी' (२०२६), 'इतिश्री' (२०२८) र 'दश औतार' (२०२३) निबन्धसङ्ग्रह प्रकाशित छन् । नेपाली जीवन शैलीका सेरोफेरोमा जे जस्ता विषम परिस्थिति र विसङ्गत अवस्थितिको स्थिति छ, त्यसले आफ्ना जीवनमा पारेका पर्याप्त प्रभावलाई सङ्गति र विसङ्गतिका चापवाट कोट्याउने ताछ्ने र दुराचार, दुस्थितिहरूलाई प्रतिस्थापन गर्ने प्रयास उनका निबन्धात्मक रचनामा पाइन्छ ।<sup>१३१</sup> हास्यव्यङ्ग्यात्मक प्रवृत्तिलाई यस चरणमा श्याम गोतामे, रामकुमार पाँडे, घटोत्कच शर्मा, मोहनराज शर्मा, आदिले अगाडि बढाएको पाइन्छ ।<sup>१३२</sup> श्याम गोतामेको 'मपाँई' (२०२६), 'जदौ' (२०२७), 'कायनवाचा' (२०३५) आदि, रामकुमार पाँडेको 'ख्यालख्याल' (२०२३), 'सन्चै छ ?' (२०२९), 'खप्पर' (२०३०), 'बाबुको बिहे' (२०३०), 'बाह्रमण' (२०३०), 'सिङ् न पुच्छर' (२०३६), 'रसरङ्ग' (२०३६) आदि निबन्धसङ्ग्रह प्रकाशित छन् । त्यस्तै घटोत्कच शर्माको 'दमाहा' (२०२४), मोहनराज शर्माको 'इन्टरभ्यु स्पेसलिष्ट मिस्टर भप्पु सिंह डबल एम.ए.' (२०३८), 'पुछारको पातो' (२०४०) निबन्धसङ्ग्रहका साथै श्रीधर खनालको 'नमरी स्वर्ग देखिन्न' (२०२०) आदिको भूमिका उल्लेख्य रहेको छ ।

यसै चरणमा 'उखान मिलेन' (२०३७) निबन्धसङ्ग्रहका साथ कमल दीक्षित देखापर्दछन् । नेपाली साहित्यका पुराना ऐतिहासिक तथ्यहरूलाई खोजमेल गरी सरल ढङ्गले प्रस्तुत गरिएका उनका कृतिहरूमा निबन्धात्मक र प्रबन्धात्मक विशेषता पाइन्छन् । रामकृष्ण शर्माका समालोचनात्मक निबन्धहरूबाट निबन्ध शोध र समीक्षा क्षेत्रमा सक्रिय देखिन्छ । शर्माको 'सप्त शारदीय' (२०२४), 'दश गोर्खा' (२०२६), 'टेबुलगफ : नौ बैठक' (२०२८), 'अष्टावक्र' (२०३५), 'एक बिसउनी' (२०२८) निबन्धात्मक तथा प्रबन्धात्मक कृति प्रकाशित छन् । रामकृष्ण शर्मा मूलतः समालोचक हुन् त्यसैले यिनका निबन्धमा समालोचनाको छाप परेको छ ।<sup>१३३</sup>

<sup>१३०</sup> राजेन्द्र सुवेदी, स्नातकोत्तर नेपाली निबन्ध, पूर्ववत्, पृ. ६१ ।

<sup>१३१</sup> राजेन्द्र सुवेदी, स्रष्टा सृष्टि द्रष्टा दृष्टि, पूर्ववत्, पृ. १५७ ।

<sup>१३२</sup> दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १२९ ।

<sup>१३३</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ४२ ।

आधुनिक नेपाली निबन्धलाई अगिबढाउने अन्य निबन्धकारहरूमा नरेन्द्र शर्मा, गणेशबहादुर प्रसाईं, रामलाल अधिकारी, बासुदेव त्रिपाठी, राममणि रिसाल, कुमारबहादुर जोशी, मोहन सिटौला, अभि सुवेदी, वासु रिमाल यात्री, हसपुरे सुवेदी, बसन्तकुमार शर्मा, कुलप्रसाद खनाल, बिमल निभा, राजव, राजेन्द्र सुवेदी, बानिरा गिरी, जनार्दन आचार्य, आदिलाई लिन सकिन्छ ।<sup>१३४</sup> यस चरणमा श्रष्टाहरूको अभिव्यक्तिमा वृद्धि, नवप्रयोग, विशिष्टिकरणको प्रदर्शन भएको छ भने साभा निबन्धसङ्ग्रहमा यस युगका विशिष्ट श्रष्टाहरूलाई उपस्थित गरिएको छ । आनन्ददेव भट्ट, रमेश विकल, राजेश्वर देवकोटा, उत्तम कुँवर, हर्क गुरुड, स्वयम्भुलाल आदिले यस युगमा विविध विषय र प्रयोगशीलतामा अग्रगति दिएका छन् साथै वैयक्तिक रूपमा पनि उत्कृष्ट प्रबद्धन यस चरणको उपलब्धि मानिन्छ । त्यसैले यो काल विविधतायुक्त चरण हो ।

आधुनिक नेपाली निबन्धको तृतीय चरण अभ्यास, प्रयोग र दृढीकरणको समय हो ।<sup>१३५</sup> यस चरणमा निबन्धलेखनमा विषय र प्रस्तुतिगत विविधता पाइन्छ । तार्किकता, बौद्धिकता, अनुसन्धानमूलकताका साथै प्रयोगधर्मिता, अमूर्तता र शैलीशिल्पगत नवीनता यस चरणका निबन्धको विशेषताका रूपमा देखा पर्दछन् । यस समयका निबन्धकारहरूमा चिन्तनशीलता र वैचारिकताको अभिव्यक्ति पाइन्छ । यिनै ऐतिहासिक तथ्य र विषयगत विविधता प्रवृत्तिगत भिन्नता, शैलीगत नव नव प्रयोग अनि वैचारिक विशिष्टता विचलनका साथै परिमार्जन हुँदै नेपाली निबन्ध अद्यावधिक एउटा विशेष बोटवृक्षको रूपमा भयाँगिएको आजको युगको विशिष्ट बौद्धिक तथा भावात्मक विधाका रूपमा देखा पर्दछ ।

### ३.६ आनन्ददेव भट्टको आगमन र निबन्धयात्रा

साहित्यका विभिन्न विधामा कलम चलाएका आनन्ददेव भट्टलाई निबन्धकारका रूपमा हेर्दा उनले आफ्नो निबन्धयात्राको थालनी वि.सं. २०१५ सालमा 'धरती' मा प्रकाशित 'व्रतबन्ध' शीर्षकको निबन्धबाट गरेको पाइन्छ । वि.सं. २०१५ सालबाट सुरु भएको उनको निबन्धयात्रालाई हेर्दा उनको हालसम्म एउटा मात्र निबन्धसङ्ग्रह 'केही आत्मपरक निबन्धहरू' (२०४९) को साथै विभिन्न

<sup>१३४</sup> दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा, पूर्ववत्, पृ. १२९-१३० ।

<sup>१३५</sup> गोपीकृष्ण शर्मा, पूर्ववत्, पृ. ४२ ।

पत्रपत्रिकामा छरिएर रहेका निबन्धहरूको सङ्कलन गरिएको 'दृष्टिबिन्दु' २०४८) नामक पुस्तक पनि प्रकाशित छ । यी दुई कृतिमा उनका चौसट्ठी निबन्धहरू सङ्ग्रहीत छन् भने तेइसओटा निबन्धहरू विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा छरिएर रहेका छन् । यिनै २०१५ सालदेखि हालसम्म प्रकाशित निबन्धहरूका आधारमा उनको निबन्ध यात्रा तथा मोडलाई निर्धारण गर्न सकिन्छ । विषयवस्तु एवम् शैलीलाई प्राथमिकता दिएर उनको निबन्ध यात्रालाई निम्न तीन चरणमा विभाजन गर्न सकिन्छ :

- १) प्रथम चरण (२०१५-२०२९)
- २) द्वितीय चरण (२०३०-२०५१)
- ३) तृतीय चरण (२०५२ देखि हालसम्म)

### ३.६.१ प्रथम चरण (२०१५-२०२९)

आनन्ददेव भट्टको निबन्धकारिताको प्रथम चरण वि.सं. २०१५ देखि २०२९ सालसम्मको अवधिलाई मान्न सकिन्छ । भट्टले यस चरणमा तेइसओटा निबन्धहरूको सृजना गरेका छन् । 'व्रतबन्ध' (धरती, २०१५) बाट निबन्धयात्रा प्रारम्भ गर्ने भट्टको निबन्धकारिताको प्रथम चरणमा 'व्रतबन्ध' निबन्धका अतिरिक्त 'कामवासना र जीवन' (२०१९), 'नमस्कार' (२०२०), 'नदीका वारपार' (२०२२), 'एउटा प्रश्न' (२०२३), 'त्यो तारा जो मेरो पोल्टोमा ओर्लिहाल्यो' (२०२५), 'शिथिलता र घचघच्याई' (२०२६), 'कुराकाट्नु' (२०२६), 'इमानदारी' (२०२६), 'निद्रा' (२०२७), 'अध्ययन' (२०२८), 'नौलोबिहान' (२०२९), 'परीक्षा र चोरी' (२०२९) शीर्षकका निबन्धहरू प्रकाशित भएका छन् । यिनै निबन्धका माध्यमबाट उनको प्रथम चरणको निबन्धात्मक प्रवृत्तिहरूलाई केलाउन सकिन्छ ।

यस चरणमा भट्टले वैयक्तिक जीवन जगत्, समाज, राष्ट्र आदि क्षेत्रबाट विषयवस्तुको चयन गर्ने काम गरेका छन् । उनका यस चरणका निबन्धहरूमा सामाजिक जीवनमा देखापरेका विभिन्न विसङ्गति र विकृतिहरूलाई निबन्धको विषयवस्तु बनाइएको छ भने निबन्धहरूको संरचना पनि छिटो छरितो रहेको छ । यो अवधि उनको निबन्ध लेखनको आरम्भिक काल भए पनि उनको सुरुकै निबन्धपनि उच्चकोटिका देखिन्छन् । 'कामवासना र जीवन', 'नमस्कार', 'नौलो

बिहान' निबन्धहरू यस अवधिका उच्चकोटिका निबन्धहरूमा पर्दछन् । यस चरणमा प्रायः सबै निबन्धहरू निजात्मक खालका छन् र ती सबैमा आन्तरिक दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । यस प्रथम चरणका निबन्धहरूमा भट्टले भौतिकवादी मानवतावादी चिन्तन प्रकट गरेको पाइन्छ । चिन्तन र भावलाई सरल र सोभो भाषाका माध्यमले पाठक समक्ष प्रस्तुत गर्नु यस चरणको विशेषता देखिन्छ । फुटकर लेखनमा मात्र सीमित रहेका निबन्धकार भट्टको शैली उत्तरोत्तर विकसित बन्दै जान थालेको यस चरणलाई निबन्धयात्राको आभ्यासिक चरणका रूपमा लिन सकिन्छ ।

### ३.६.२ दोस्रो चरण (२०३०-२०५१)

भट्टको निबन्धकारिताको दोस्रो चरण वि.सं. २०३० देखि २०५१ सालसम्मको अवधिलाई मान्न सकिन्छ । उनले यस चरणमा सतसट्ठीओटा निबन्धहरूको रचना गरेका छन् । भट्टको यस चरणको थालनी वि.सं. २०३० सालमा मधुपर्क पत्रिकामा प्रकाशित 'प्रतिभा र जीवनपद्धति' नामक निबन्धबाट हुन्छ । यस चरणमा उनको विभिन्न फुटकर निबन्धहरूको प्रकाशनसँगै वि.सं. २०४८ सालमा 'दृष्टिबिन्दु' नामक फुटकर निबन्धहरूको सङ्कलित पुस्तक र 'केही आत्मपरक निबन्धहरू' निबन्धसङ्ग्रहको प्रकाशन हुन्छ । यस चरणमा उनले दृष्टिबिन्दु पुस्तकभित्रका बत्तीसओटा निबन्धहरू र केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्रका पच्चीसओटा र दशओटा फुटकर निबन्धहरूको रचना गरेका छन् । यस चरणमा उनले 'प्रतिभा र जीवनपद्धति' का साथै 'बन्धन र मुक्ति' (२०३१), 'कुण्ठाको विरुद्ध' (२०३२), 'अध्यात्म' (२०३४), 'काम, माम र नाम' (२०३५), 'उपवास' (२०४३), 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' (२०४५), 'मृत्यु पनि यति सरल हुन सक्तोरहेछ' (२०४५), 'मानवसमूह' (२०४६) 'साहित्यमा चिन्तन' (२०४९) जस्ता फुटकर निबन्धहरू लेखेका छन् । यस चरणको प्रथम निबन्ध 'प्रतिभा र जीवन पद्धति' मा विचारको प्रगाढ उपस्थिति पाइन्छ । विषयगत दृष्टिले उनका यस चरणका निबन्धहरूलाई हेर्दा सामाजिक, राष्ट्रिय, शिक्षा, प्रेम प्रकृति, नारी समस्या आदि विभिन्न विषयलाई आफ्ना निबन्धको विषयवस्तु बनाएको पाइन्छ । सङ्ख्यात्मक दृष्टिले निकै उर्वर मान्न सकिने भट्टको यो चरण प्रथम चरणको आभ्यासिकताबाट निकै परिपक्व बन्न पुगेको देखिन्छ । विषयवस्तुलाई निजात्मक ढङ्गले गतिशिल

तुल्याउने भट्टले आफ्ना निबन्धमा सामाजिक वेमेलहरूप्रति व्यङ्ग्य पनि गरेका छन् । मार्क्सवादी चिन्तनका पक्षधर भट्टले समाजमा व्याप्त अन्धविश्वास आडम्बर, रूढि, अन्धपरम्परा आदिलाई भौतिकवादी कोणबाट प्रस्तुत गरेका छन् । प्रगतिवादी चिन्तनमा आधारित उनका निबन्धमा यथार्थवादी र जनवादी दृष्टिकोण पाइन्छ । आत्मपरकता, वैयक्तिक भावको प्रधानता, चिन्तन र भावनाको सम्मिश्रण विषयगत विविधता यस चरणका मूल प्रवृत्तिहरू हुन् । आरम्भ, मध्य र अन्त्यको रैखिक ढाँचा नै यस चरणका निबन्धहरूको संरचनात्मक स्वरूप हो । निबन्धात्मक मूल्यका दृष्टिले यस चरणलाई उनको उत्कृष्ट चरणका रूपमा लिन सकिन्छ ।

### ३.६.३ तेस्रो चरण (२०५२-हालसम्म)

निबन्धकार भट्टको निबन्धयात्राको तृतीयचरण वि.सं. २०५२ देखि प्रारम्भ भई वर्तमानसम्म कायम रहेको छ । यस चरणमा उनले सातओटा निबन्धहरूको रचना गरेका छन् । यस चरणको उनको प्रथम निबन्ध गरिमा पत्रिकामा प्रकाशित 'रूख र जङ्गल' (२०५२) हो । उनले यस चरणमा 'रूख र जङ्गल'का अतिरिक्त 'लेखक बन्ने इच्छा' (२०५६), 'जीवनको लक्ष्य' (२०५९), 'एउटा लोकतान्त्रिक छलफल' (२०६४, ६५), 'काम गर तर फलको आशा नराख' (२०६४), 'न खाइ सक्के, न था सक्के' (२०६५), 'गतिशीलता र चञ्चलता' (२०६५) गरी सातवटा निबन्धहरू प्रकाशित गरेका छन् । निबन्धयात्राको यस तेस्रो चरणमा आइपुग्दा निबन्धकार आफ्नै जीवन अनुभव र सामाजिकताप्रति बढी भुकेका छन् । विषयवस्तुलाई तार्किक ढङ्गले विस्तार गर्दै निबन्धात्मक स्वरूप प्रदान गर्ने भट्टका यस चरणका निबन्धमा बौद्धिक अभिव्यक्ति पनि भेटिन्छ । मूलतः विचारको प्रस्तुति पाइने उनका निबन्धहरूमा बौद्धिक, तार्किक र वैचारिक अभिव्यक्ति भित्र पनि निजात्मक प्रवृत्ति पाइन्छ । यस चरणमा शैलीगत परिष्कार पाइन्छ तर दोस्रो चरणमै स्थापित शैलीगत विशेषता यस चरणको पनि मुख्य प्राप्ति हो । यस तृतीय चरणका निबन्धहरू सङ्ख्यात्मक रूपमा थोरै भए पनि गुणात्मक रूपमा उच्च कोटिका छन् । यति हुँदाहुँदै पनि यस चरणका भट्ट दोस्रो चरणमा जस्तो निबन्ध सिर्जनामा सक्रिय रहेको पाइँदैन । यस चरणका निबन्धमा अरु चरणको निबन्धमा भन्दा अभिव्यक्तिमा केही क्लिष्टता पाइन्छ । लघु आयाममा बौद्धिक र तार्किक पाराले निबन्ध सृजना गर्ने भट्टको यस चरणको मुख्य प्रवृत्ति वैचारिकता हो । भट्टको निबन्धयात्राको यो चरण निबन्धात्मक वैशिष्ट्य स्थापित गर्दै गएको विकासशील अवधि हो ।

### ३.७ निष्कर्ष

साहित्यका चार प्रमुख विधाहरूमध्ये निबन्ध पनि एक हो । निबन्धको प्रादुर्भाव र विकास पाश्चात्य साहित्यबाट भएको हो । पाश्चात्य साहित्यमा निबन्ध लेखनको आरम्भ सर्वप्रथम फ्रान्सेली लेखक मोन्तेनबाट भएको हो । उनी आत्मपरक निबन्धकारका रूपमा देखा परेका छन् । त्यसपछि अङ्ग्रेजी विद्वान् वेकनले विकीर्ण चिन्तन भनेर वस्तुपरक ढङ्गबाट निबन्धलाई चिनाउन पुग्यो । यसरी हेर्दा निबन्धका प्रमुख दुई भेद छन् - आत्मपरक र वस्तुपरक । संरचनाका दृष्टिले हेर्दा निबन्ध छोटो छरितो विधा हो । निबन्धलाई संरचना प्रदान गर्ने आवश्यक अङ्ग नै निबन्धका तत्त्व हुन् । वस्तु, शैली र उद्देश्यको त्रिकोणमा निबन्धका तत्त्वहरू निर्भर रहेका हुन्छन् । जीवनजगत्का जुनसुकै विषयमा पनि निबन्ध लेख्न सकिन्छ । निबन्धको शैली रचनाशिल्प भएकाले हरेक निबन्धकारको आ-आफ्नै शैलीगत विशिष्टता हुन्छ । छोटो समयमा पढ्न सकिने गरी सङ्क्षिप्त आयामभित्र आफ्ना भावका विचार अनुभव र अनुभूतिलाई पाठकसमक्ष प्रस्तुत गर्नु नै निबन्धकारको मुख्य उद्देश्य रहेको हुन्छ ।

आनन्ददेव भट्ट नेपाली निबन्धको आधुनिककालको तृतीय चरण ( वि.सं. २०२०-हालसम्म) एक उज्ज्वल प्रतिभा हुन् । उनले आत्मपरक निबन्धहरू लेखेका छन् । आजसम्मको उनको निबन्धयात्रा तीन चरणमा विभाजित छ । समसामयिक सामाजिक विषयवस्तुमा निबन्ध सृजना गर्ने भट्ट संख्यात्मक दृष्टिले मात्र नभई गुणात्मक दृष्टिले समेत सफल निबन्धकारका रूपमा देखा पर्दछन् ।

## परिच्छेद - चार

### ४. विषयवस्तुका आधारमा निबन्धको वर्गीकरण र विश्लेषण

आनन्ददेव भट्टका निबन्धहरूको वर्गीकरण गर्ने सन्दर्भमा विषयवस्तुलाई मूल आधार बनाइएको छ । यद्यपि प्रस्तुति, व्यक्तित्वको प्रधानता र अप्रधानताका आधारमा पनि निबन्धको वर्गीकरण गर्न सकिन्छ तर त्यसरी वर्गीकरण गर्दा उनका निबन्धहरूलाई समेट्न नसकिने स्थिति देखिन्छ । भट्टका निबन्धहरूमा विषयगत विविधता पाइने हुँदा विषयगत प्रवृत्तिलाई मूलआधार बनाउँदा उनका निबन्धात्मक रचनालाई समेट्न सकिने हुँदा विषयमै केन्द्रित भई वर्गीकरण गरिएको छ र निबन्धका लागि प्रमुख मानिने तत्त्वहरू वस्तु, उद्देश्य र शैलीका आधारमा विश्लेषण गरिएको छ ।

### ४.१ केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्रका निबन्धहरूको विश्लेषण

आनन्ददेव भट्टको हालसम्म प्रकाशित एकमात्र निबन्धसङ्ग्रह **केही आत्मपरक निबन्धहरू** (२०४९) हो । यस सङ्ग्रह भित्र २०२६ सालदेखि २०४९ सालसम्मका जम्मा एकतीसओटा निबन्धहरू समावेश गरिएको छ । प्रस्तुत निबन्धसङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले व्यक्ति समाज र राष्ट्रका लागि अत्यावश्यक विषयवस्तुको अध्ययन र अनुभव पोखेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूको विश्लेषण निम्नानुसार गरिएको छ ।

### ४.१.१ भावप्रधान निबन्धहरू

मानवीय भावहरूको प्रधानता भएको निबन्ध भाव प्रधान निबन्ध हो । यस्ता खाले निबन्धहरूमा अनुभूतिको बाहुल्यता रहेको हुन्छ । यसमा अमूर्त विषयवस्तुलाई संवेदात्मक तथा हार्दिक रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ । निबन्धकारले हृदयका उदात्त अनुभूति र तीव्र भावनालाई स्वतन्त्ररूपमा विचरण गर्ने अवसर प्रदान गर्दछन् । यस्ता निबन्धमा बुद्धिपक्षको भन्दा हृदयपक्षको प्रबलता रहन्छ जसमा सरल,

आलङ्कारिक, काव्यात्मक र कोमल भाषाशैलीको प्रयोग गरिन्छ । भट्टका भाव प्रधान निबन्धहरू निम्नलिखित छन :

#### ४.१.१.१ नौलो बिहान

यो निबन्ध प्रथम पटक वि.सं. २०२९ आश्विनमा नौलो बिहान पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो र यसलाई पुनः केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र समावेश गरी २०४९ सालमा प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । यो पाँच पृष्ठमा विस्तारित तथा आठ अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । आत्मपरक वर्णन भएको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । दुई शब्दे शीर्षकको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको देखिन्छ ।

राष्ट्रघातिहरूका विरुद्धमा कडा सङ्घर्ष गर्न पछि हट्नु हुँदैन भन्ने मूल भाव लिएको यस निबन्धमा तत्कालीन पञ्चायती शासक र तिनीहरूले जनतामाथि गर्ने थिचोमिचोको व्याख्या गरिएको छ । नेपालीहरू भौतिक सम्पत्ति नभएर गरिब छन् तर विचारका धनी छन् । सम्पत्तिले धनी भए पनि मान्छेको चरित्र खस्कँदै जान्छ, भने त्यसको अस्तित्व रहन सक्दैन । मान्छेले जीवनमा सुख शान्ति भोग गर्न चाहन्छ तर उ यसमा असफल हुन्छ । सुख र मोजमस्तीमा रमाउनेहरूले सोझा जनताहरूको पीर मर्का बुझ्न सक्दैनन् । हाम्रो देशमा इज्जत कमाउनेहरू नै इज्जत बेचिरहेका छन् । नक्कली शिक्षा पाएकाहरू पथभ्रष्ट जनविरोधी, देशविकासको बाधक, अतिव्यक्तिवादी र स्वाधी बनिरहेका हुन्छन् । हामी अशिक्षित भएका कारणले आत्मग्लानि गछौं तर के हामी शिक्षितका भन्दा कम्ती धुकधुकी लिएर बाँचेका छौ र भनेर निबन्धकारले सान्त्वना प्रकट गरेका छन् । जीवनमा सङ्घर्ष गरेका व्यक्तिहरूले कहिल्यै हारका कुरा गर्दैनन्; त्यसैले नेपाल र यसको भविष्यनै त्यस्तै वीर, सङ्घर्षशील शक्तिको हातमा हुनुपर्छ र साँचो, महान् लक्ष्य लिएर जब असल शक्तिले आफ्नो गतिशीलता देखाउन थाल्छ तब देशमा नौलो विहान आउँछ, भन्ने मूल विषयवस्तु यस निबन्धले ओगटेको छ ।

यस निबन्धको मुख्य उद्देश्य अन्याय र अत्याचार सहेर बस्न बाध्य भएका जनताहरूलाई क्रान्ति गरेर नौलो बिहानको सृजना गर्नुपर्छ भन्नु हो । हामीले समाजमा रहेका विकृति विसङ्गति, अन्याय, अत्याचार, शोषण र दमन जस्ता कुराहरूको चर्को विरोध गर्नु पर्छ । सोझा नेपाली जनताहरूलाई मुक्ति दिलाउनु नै

हाम्रो कर्तव्य हो भन्ने कुरा नै यसको मूल उद्देश्य रहेको छ । हामीले इज्जत कमाउनुपर्छ, मानमर्यादा कमाएर समाजमा ठाडो शीर गरेर उभिन सक्नुपर्छ, समाजका अराजक तत्त्वहरूको विरोधमा चर्को नारा लगाउनु पर्छ भन्ने मूल उद्देश्यका साथ देखापरेको यस निबन्धमा एक न एक चोटी नेपाली समाजमा परिवर्तनपछिको नौलो बिहान आउँछ भन्ने कुराको पूर्व सङ्केत गरिएको छ ।

यस निबन्धको भाषाशैली सरल र सरस छ । यसमा भट्टले सामान्य पाठकले बुझ्ने खालको भाषाशैलीको प्रयोग गरेर पनि बीच-बीचमा 'एक थुकी सुकी हजार थुकी नदी' 'आखिर दृष्टदेखि दैव डरा' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरेका छन् । यसमा ठेट नेपाली शब्दहरूको प्रयोग गर्नुका साथै तद्भव शब्दहरू र आगन्तुक शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको पाइन्छ । विचलनशील भाषामा लेखिएको प्रस्तुत निबन्धमा अलङ्कारहरूको प्रयोगले अझ मिठास थपेको छ । नौलो बिहानी नेपाली जनशक्ति भित्र लुकेको छ भन्ने कुरा यस निबन्धले देखाउन खोजेको छ ।

#### ४.१.१.२ निद्रा

निबन्धकार आनन्ददेव भट्टद्वारा लिखित **केही आत्मपरक निबन्धहरू** ( २०४९) निबन्धसङ्ग्रहमा प्रकाशित यो निबन्ध २०२७ सालको **लालुपाते** पत्रिकामा प्रथम पटक प्रकाशित भएको थियो । चारपृष्ठ र चार अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार पाएको छ भने यसको शीर्षक एक शब्दको रहेको छ ।

यस निबन्धमा निद्रालाई मूल विषयवस्तुको रूपमा लिइएको छ । मानिसलाई आराम गर्नको लागि निद्राको आवश्यकता पर्दछ निद्रादेवीको काखमा लुटपुटिएर मिठा मिठा सपना देख्ने चाहाना सबैको हुन्छ तर हामी धेरै लामो समयसम्म निदाउनु हुँदैन । यदि लामो समयसम्म निदायो भने अन्य कामहरूमा बाधा पर्छ भन्ने कुरा नै यस निबन्धको मूल विषयवस्तु हो । यसमा निबन्धकारले देवकोटा र आफ्नो निद्रामा भिन्नता भएको कुरा प्रस्ट पारेका छन् । देवकोटा कति सुत्थे भन्ने कुरा उनकै निद्रा निबन्धमा प्रस्ट पारिएको हुँदा आफूले उक्त कुराको बारेमा खुलस्त तर्क दिनु लज्जास्पद कुरा हुन जान्छ भन्ने कुरा पनि यसमा प्रस्तुत गरिएको छ । उनी आफू सुतिरहेको समयमा आफ्नी प्रेयसीले चाँडै उठ्न पर्दैन बिउँभेपछि तिमीलाई कामको चिन्ताहुन्छ भनेको सुन्छन् र आफूलाई प्रेयसीको काखमा अझै निदाउन पाउँ भन्ने भाव रहेको बताउँछन् । उनले नेपालीहरू जस्तो सुकै हालतमा

पनि सुत्न सकछन् । उनीहरूको निद्रा भङ्ग गर्नको लागि २००७ साल फेरि निम्तिनु पर्छ भन्ने अभिव्यक्ति दिएका छन् । यस निबन्धमा सुतिरहेका नेपालीहरूको निद्रा भङ्ग गर्नको लागि ठूलै खलबलीको आवश्यकता पर्ने कुरा प्रस्तुत गरिएको छ । निबन्धकारले आफूले लेखेको कविता, कथा, निबन्ध, नाटकका पात्रहरूलाई उठाउने मात्र होइन चौबीसै घन्टा सुत्न नपर्ने औषधी खुँवाए तापनि जीवनका हरेक किसिमका भन्फटबाट पिरोलिनु पर्दा उनका पात्रहरूले भकाभक आत्महत्या गर्न थालेको र आफ्नो रचनाका पात्रहुन कसैले नमानेको प्रसङ्ग अगाडि ल्याएकाछन् । त्यसैले गर्दा अचेल उनी आफ्ना पात्रलाई जाग्राम नराख्ने, आफू पनि खूब सुत्ने गरेको र सुतेको बेला कसैलाई पनि नबिउभाउने कुरा व्यक्त गरेका छन् ।

यस निबन्धको मूल उद्देश्य हामीले अल्छी भएर बस्नु हुँदैन । लामो समयसम्म निदायो भने त्यसले हामीलाई नराम्रो असर पार्न सकछ । त्यसकारण समय, परिस्थिति र वातावरण बुझेर मात्र सुत्नु पर्छ । सुतेर कोही पनि ठूलो हुँदैन । हाम्रा महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा कम सुत्थे र उनलेनै देशलाई राम्रा राम्रा सृजना दिन सफल भए । हामीले भौतिक कुरामा लागेर क्षणिक मोजमस्तिमा लागेर आफ्नो कर्तव्यलाई भुल्नु हुँदैन यसले हाम्रो जीवनलाई नै अन्धकारको बाटोतर्फ डोर्‍याउने काम गर्दछ भन्ने कुरा नै यस निबन्धको मूल उद्देश्यको रूपमा रहेको छ । यसमा वर्तमान समाजका ठूला वडा भनाउँदाहरू अझै लामो समयसम्म सुत्न र ऐस आराममा डुब्न मन पराउँछन् भन्ने कुरालाई खुलस्त पार्नु यसको उद्देश्य रहेको छ ।

यो निबन्ध सरल भाषाशैलीमा लेखिएको छ । भाषा मार्मिक सरस र सजीव भई प्रवाहपूर्ण हुन पुगेको छ । यस निबन्धमा आगन्तुक स्रोतका शब्दका साथै बढी मात्रामा तद्भव र ठेट नेपाली शब्दहरूले निबन्धमा मिठास थपेको पाइन्छ । निबन्धकारले यस निबन्धमा अल्पविराम, विस्मयादिबोधक उद्घरण चिन्हहरूको प्रयोग गरेका छन् । निद्राले हामीलाई सफलतामा पुर्‍याउन नसक्ने हुनाले त्यसलाई त्यागेर जीवनलाई अग्रगतिर लैजानु पर्छ भन्ने कुरा यस निबन्धमा देखाइएको छ ।

#### ४.१.१.३ कुरा काट्नु

यो निबन्ध आनन्ददेव भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्कलित निबन्ध हो । यो निबन्ध प्रथम पटक प्रकाशकुञ्ज पत्रिकामा २०२६

सालमा नारायणगढबाट प्रकाशित भएको हो । यो निबन्धमा सात पृष्ठ र सात अनुच्छेद रहेको छ । निबन्धमा निबन्धकारको 'म' को प्रथम पुरुषको कथन ढाँचामा भनिएको मभौला आकारको आत्मपरक शैलीको प्रयोग गरिएको छ । यसमा निबन्धकार वा उनलाई प्रतिनिधित्व गर्ने 'म' र 'हामी' दुईवटा प्रथम पुरुष एकवचन र बहुवचन सर्वनामद्वारा भनिएको छ ।

यसको शीर्षकले नै दुईवटा अर्थ दिएको छ । कुरा काट्नु शब्द नेपाली भाषामा प्रचलित टुक्का हो । यसले अगाडि बसेर केही कुरा भन्ने र पर्दा पछाडिबाट अरू केही कुरा भन्ने व्यक्तिहरूको प्रवृत्तिलाई प्रस्तुत गरेको छ । अगाडिबाट कुरा काट्नेहरूलाई सबैले माया गर्छन् । अगाडिबाट कुरा काट्दा मानिसको मन फुक्छ, प्रेम बढ्छ, मनको कालो पखालिन्छ र आफ्नो सफा अनुहार ऐनामा हेरेजस्तै हुन्छ । निर्मल हृदय भएको व्यक्तिले अधिल्लिरबाट कुरा काट्छ भने फटाह, जाली र धुत्याँइ रच्ने व्यक्तिले पछाडिबाट कुरा काट्छ । पछिल्लिरबाट कुरा काट्दा कुरा काट्नेको मनमा शान्ति भए पनि सुन्नेको मनमा भने कहिल्यै शान्ति हुँदैन । संसारमा अगिल्लिर र पछिल्लिर कुरा काट्ने दुईथरी मानिसहरू पाइन्छन् । अधिल्लिरबाट कुरा काट्नु वीरत्वको चिन्ह हो भने पछिल्लिरबाट कुरा काट्नु कातरताको चिन्ह हो भन्ने कुरा निबन्धकारले यस निबन्धमा देखाएका छन् । सत्यको घाँटी निमोठ्न असत्य सधैं चियाउने गर्छ तर सत्य गतिशील कुरा भएकाले सत्यको जति बल असत्यमा क्यैगरी नहुने कुरा व्यक्त गरिएको छ । सोभा जनताहरूले अगाडिबाट कुरा काट्छन् उनीहरूको मनमा कुनै पाप हुँदैन तर फटाहा नेताहरू जनताको पछाडिबाट कुरा काट्छन् र सोभा जनताका सामुन्ने उनीहरूको अनुहार दिन प्रतिदिन उदाङ्गिदै जान्छ भन्दै लेखकले अधिल्लिर कुरा काट्नेहरूलाई देदीप्यमान ताराहरूसँग र पछिल्लिर कुरा काट्नेहरूलाई नालका कीरासँग तुलना गरेका छन् ।

यस निबन्धको मुख्य उद्देश्य हामीले सबैसँग राम्रो व्यवहार गर्ने बानी बसाल्नुपर्छ कसैको चित्त दुख्ने गरेर पर्दा पछाडि बसी कसैको पनि कुरा काट्नु हुँदैन, बरू केही भन्नु छ भने सामुन्ने मै गएर छर्लङ्ग कुरा गर्नुपर्छ । भुटो बोलेर केही हात पर्दैन, कुराको बतासे फुलमात्र पार्नाले सत्य र निर्माणका राम्रा-राम्रा काम कदापि हुन सक्दैनन् । पृथ्वीनारायण र बलभद्र जस्ता वीरहरूले अगाडिबाट कुराकाटेका र भियतनामी होचिमिन्हले पनि अमेरिकाली साम्राज्यवादका अधिल्लिरै कुरा काटेका थिए भने हिटलर र मुसोलिनी जस्ता क्रुर जनताका शत्रुहरूले पछाडिबाट कुरा काटेका हुनाले उनीहरू धाराशायी बने र अगाडिबाट कुरा गर्ने

वीरहरूको नाम सधैं सम्मानका साथ लिने गरिन्छ, उनीहरू मरेर पनि मरेका छैनन्, देदीप्यमान ताराहरू जस्तै समाजमा चम्किरहेका छन्, भन्ने मूल उद्देश्यका साथ यो निबन्ध देखापरेको छ ।

सरल भाषाशैलीमा लेखिएको यो निबन्धको भाषा र भावमा लेखकको निजात्मक दृष्टिकोण पाइन्छ । 'हात्तीको देखाउने र चपाउने दाँत बेग्ला बेग्लै हुन्छन्' भन्ने उखानको प्रयोगका साथै ठाउँ ठाउँमा 'छिर्की लगाउन खोज्नु', 'कनसुत्लीलाई आफ्नो महत्त्व बढाउन खोज्नु' जस्तो भाषाको प्रयोग गरिएको छ । विभिन्न किसिमका विम्ब, प्रतीक, उपमा र अर्थालङ्कारको प्रयोगले गर्दा निबन्धको भाषाशैलीमा माधुर्यता थपेको छ । तत्सम, तद्भव र केही आगन्तुक शब्दको प्राबल्य रहेको यस निबन्धमा अगिल्लिर कुरा काट्नाले श्रद्धा जाग्छ, विश्वास बढ्छ, व्यक्तित्व सङ्गित्तै आएको अनुभव हुन्छ, भने पछिल्लिर कुरा काट्नु षड्यन्त्र अज्ञान वा भ्रम भएकाले हामीले अगिल्लिर कुरा काट्ने बानी बसाल्नु पर्छ, भन्ने मूल सन्देश यसले बोकेको छ ।

#### ४.१.१.४ आफ्नै मायाले छोएर

आफ्नै मायाले छोएर निबन्धकार आनन्ददेव भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू (२०४९) सङ्ग्रहमा संकलित निबन्ध हो । यो तीन पृष्ठमा विस्तारित र सात अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । यसमा आत्मपरक वर्णन भएको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । तीन पदीय शीर्षकको यस निबन्धले लघु आकार पाएको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकार भट्टले आफ्नै व्यक्तिगत जीवनका बारेमा केही कुरा लेखेका छन् । यो आत्मपरक निबन्धकारको विशेषता पनि हो । निबन्धकार आफ्नो सुन्दर अस्तित्वको सराहना गर्दै त्यसको दीर्घायुको कामना गर्दछन् र आफ्ना हितैषीहरूको बीचमा उत्कृष्ट बनेर अगाडि बढ्ने इच्छा गर्छन् । उनी आफैँलाई भन्छन् तीखो आँखा भएको मान्छे असल हो र गहिरो दूरदृष्टि भएमा सबैको कल्याण हुन्छ । समय र साधनको पर्दालाई छेडेर परसम्म गई देख्न सकिन्छ । आफूले अध्ययन गर्ने शिलशिलामा फेला परेका कुराहरू सफासित राखिदिनाले अन्धकारको नाश हुन्छ र प्रकाश पाइन्छ, भन्ने सोच निबन्धकार भट्टको रहेको छ । आफ्नै मौनता देखी आफैँ अचम्म पर्ने भट्ट आफ्नो उदाउँदो सूर्यजस्तो मुहार ओइलाउँदै गएको,

फुकेको छाती साँगुरिदै गएको र बुढेसकालमा प्रवेश गरेको कुरा प्रस्तुत गर्दछन् । बालकले कुट्यो भन्दैमा उसले नराम्रै चिताएछ भन्नु हुँदैन उसको त्यो आफ्नै अनौठो उत्सुकता हुन सक्छ । त्यसैले कसैको कुरा मन नपरे पनि हाँसिदिनु पर्छ भन्ने लेखकको भनाइ रहेको छ । चानचुने धैर्य र हिम्मतले हिँड्ने नभ्याइने जीवनको यो लामोबाटोमा आफू लय्याडबय्याड गरी हिडेर समय कटाइरहेको देख्दा त्यसप्रति आफू असन्तुष्ट भएको बताउँछन् । मगनमस्ती कहिल्यै हाम्रो साथी हुन नसक्ने र त्यसले हामीलाई अन्धकारमा धकेलिदिँदा हात समाती तान्ने कोही हुँदैन । हामी हिड्न लय्याडबय्याड गर्नु हुँदैन सिसिपसले भैँ एउटै मार्गमा ओहोर दोहोर ओहोर दोहोर होइन कि, नेटो काट्नु पर्ने बाटोतिर सूर्य र चन्द्रको गतिले हिड्नु पर्ने कुरालाई प्रस्तुत गरिएको छ ।

यो निबन्धको मूल उद्देश्यको रूपमा हामीले मौन भएर आफ्ना औलालाई थन्क्याउनु हुँदैन, भावनालाई सुताउनु हुँदैन, विचारलाई कुनै अध्यारो छिँडीमा बन्द गर्नु हुँदैन भन्ने रहेको छ । हामीले समय र साधनको उपयोग गर्न सक्नुपर्छ । वस्तुस्थितिको राम्रो अध्ययन गरेर देखेजानेका कुराहरू सफासित अगिल्लिर राख्न सक्नु पर्दछ । जीवनलाई मोजमस्तिमा डुबाउनु हुँदैन । जीवनको यो लामो यात्रामा हामी हिड्दा हिँड्दै थाक्नु हुँदैन यदी हिडाइको गति सुस्त भयो भने त्यो बाटोभरि वैरधारी उम्रनेछन् र हामीलाई रगताम्य पार्नेछन् त्यसैले एउटै मार्गमा होइन कि, नेटो काट्नुपर्ने बाटोतिर अग्रगामी उद्देश्यका साथ हाम्रा पाइलाहरूलाई अगाडि लम्काउँदै जानु पर्छ ।

यस निबन्धमा प्रथम पुरुष र द्वितीय पुरुषका रूपमा 'म' र 'तिमी' लाई प्रयोग गरिएको छ । सरल, शुद्ध र सुमधुर भाषाशैलीमा लिखित प्रस्तुत निबन्ध नवीनतम शिल्पमा संरचित छ । निजात्मक आत्मसंस्मरणका सन्दर्भले निबन्धलाई रोचक बनाएका छन् । यसमा तत्सम, तद्भव र भर्ना नेपाली शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । निबन्धमा सम्बोधनात्मक तथा प्रश्नात्मक, विश्मयादिवोधक, पूर्णविराम अल्पविराम जस्ता चिन्हहरूको प्रयोग पनि पाइन्छ । निबन्धमा बेकारमा समय नकटाइकन हामी सङ्घर्षपूर्ण जीवनको बाटोमा नअल्मलिकन हिड्नु पर्छ भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### ४.१.१.५ दरिद्र लेखक

यो निबन्ध पहिलोपटक २०३७ सालमा रूपरेखा पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो र यसलाई पुनः केही आत्मपरक निबन्धहरू भन्ने निबन्धसङ्ग्रह भित्र समावेश गरी प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । यो छ पृष्ठ र नौ अनुच्छेदमा संरचित मझौला आकारको निबन्ध हो ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नो लेखक साथीको अनुरोधलाई स्वीकार गर्दै उनका बारेमा केही कुरा लेखेका छन् । आफूलाई दरिद्र लेखक भन्न रुचाउने निबन्धकारका साथी उत्सुकतावश कसैले केही कुरा सोधिहाल्यो भने त्यसको पुराणै सुनाउने खालका छन् । उनी अरूको विचार गर्दैनन् पेट्टी, पसल जताततै आफ्ना कुराहरू फलाकन थाल्छन् । उनमा दिनमा एक न एक थोक नलेखी नछोड्ने र नसुनाई नछोड्ने बानी बसिसकेको छ । कसैले मनलगाएर सुनिदियोस् नसुनिदियोस् उनी आफ्ना रचना अरूलाई सुनाउन आतुर रहन्छन् । विषयसित उनलाई त्यति साह्रो पिर लिनु पर्दैन जेसुकै विषयमा पनि आफ्नो रचना प्रस्तुत गर्न सक्छन् । उनलाई न त अधेरी रातको नै पीर छ न त टन्टलापुर घामको नै । जुनसुकै समयमा पनि आफ्नो रचना सुनाउन जहाँसुकै पनि पुगिहाल्छन् । कुनै विशेष समारोहमा निम्तो पाएमा उनी चारहात खुट्टाले टेकेर भएपनि त्यहाँ पुग्छन् उनलाई खानाको कुनै लोभ हुँदैन केवल आफ्नो रचना सुनाउनको भोकले उनलाई त्यहाँ तानेको हुन्छ । कसैले कविजी भनेर सम्बोधन गरिदियो भने मात्र पनि उनी मक्ख पछ्छन् । किरियापुत्रीलाई मात्र हैन लाशैनिर पुगेर त्यसैसित बोल्न पनि पछि हट्दैनन् । मन्दिरमा हुने कलाकारिता भन्दा उनका रचना बढी सिँगारिएको हुन्छ भन्ने निबन्धकारले प्रस्तुत गरेका छन् । स्रोताको सहानुभूतिमा आफ्ना लेख रचना सुनाउनु पर्दाको करुणामय क्षणले गर्दा आफूलाई दरिद्र लेखक भन्न रुचाउने निबन्धकारका लेखक साथीलाई मुख्य विषयवस्तु बनाएर यो निबन्ध लेखिएको छ ।

यो निबन्धमा लेखकले आफ्ना लेख रचना सुनाउनका लागि अर्काको आसे भएर वस्नु पर्ने वाध्यात्मक स्थितिलाई मूल उद्देश्यको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । अरूको सहानुभूतिमा आफ्नो लेख रचना सुनाउनु पर्ने हुनाले आफू सम्पन्न लेखक भएपनि दरिद्र लेखक ठान्नुपर्ने स्थिति रहेको । आफ्नो रचना सुनाउनको लागि बिना बोलावहट नै अरूको घरदैलोमा पुगेर कर लगाएरै भएपनि आफ्नो रचना सुनाउने प्रवृत्तिले गर्दा लेखकलाई देख्ने वित्तिकै कसरी आफ्नो घरबाट हटाउने भन्ने कुरामा

व्यक्ति लागिपर्ने हुनाले लेखकले पनि अरूलाई आफ्ना रचना सुन्ने इच्छा छैन भने त्यसमा करकाप गर्न नहुने कुरालाई यस निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

सरल, सरस भाषाशैलीमा लेखिएको यस निबन्धमा छोटो, सरल वाक्य र अनुच्छेदको प्रयोग गरिएको छ । ठाउँठाउँमा 'भालुको कम्पट समातिएछ', 'राहु लगाइ', 'देउता जान्नु भेटन, आउँछन् भक्त आफै पाउमा' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । तत्सम र भर्रा नेपाली शब्दहरूको प्रयोगले यस निबन्धमा थप मिठास थपेको छ । ठाउँठाउँमा पूर्णविराम, प्रश्नवाचक, उद्धरण, अल्पविराम जस्ता चिन्हहरूको पनि प्रयोग पाइन्छ । आफ्नो आत्मसम्मान समेत रचना सुनाउने लोभमा धेरैका सामुन्ने धरौटी राख्न नहुने कुरा मुख्य सन्देशको रूपमा देखिएको छ ।

#### ४.१.१.६ खोइ के लेखुँ ?

यो निबन्ध आनन्ददेव भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्कलित निबन्ध हो । यस निबन्धको शीर्षक तीन पदीय प्रश्नात्मक खालको रहेको छ । प्रथम पुरुष कथन ढाँचा अन्तर्गतको 'म' पात्रले आफूलाई विभिन्न हैसियतमा 'हामी' भनी चिनाएका अवस्थाहरू यहाँ छन् भने कतै कतै द्वितीय पुरुषका रूपमा 'तपाईं' पनि प्रयोग गरिएको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले खोइ, के लेखुँ ? भनेर आफैलाई प्रश्न गरिरहेका छन् । आफूले लेख्ने विषयवस्तुनै नपाएको खुलासा गरेका छन् । कसैलाई विषयवस्तुनै नभएर, कसैलाई कुरा धेरै भएर कुनचाहिँलाई पहिले ल्याउ भनी निर्णय गर्न नसकेर र विषयको अठोट भएर पनि अभिव्यक्तिका निमित्त कलाको खोजमा मगज शून्य भएमा लेखकलाई खोइ, के लेखुँ ? को स्थिति देखा पर्छ भन्ने कुरा प्रस्तुत गरेका छन् र त्यस्तो स्थितिले आफूलाई मात्र होइन धेरैलाई छुँदै लगेजस्तो ठान्छन् निबन्धकार । नयाँ आउने उदीयमान साहित्यकारहरूलाई हेर्ने हो भने पनि भविष्यमा खोइ, के लेखुँ ? भन्ने प्रश्न आफ्नो शीरमा पनि पर्लाकी भनेर पहिल्यै नै त्यसप्रति सचेत भएर साहित्यिक प्रतिभाको चक्रव्यूह रचेको भान पाइन्छ । हामीसँग भाषा, शब्द, विचार र कल्पना पनि समानान्तर रूपले आफ्ना गति कायम गरिरहेका भएपनि जबसम्म हामी नौलो भविष्यको इतिहास बनाउने दृढ सङ्कल्प र त्यसप्रतिको प्रबल भावना राखिदैन तबसम्म हामीलाई पनि खोइ के लेख्ने ? भन्ने समस्या पर्न सक्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । हामीले हाम्रो

जीवनको अनुभूति, आस्था र विश्वासलाई यस धर्ती र त्यसमा पसिना चुहाई बाँच्ने सम्पूर्ण मानव जातिप्रति अगाध माया र श्रद्धा गर्न सकेमा मात्र रचना युग युगसम्म बाँचिरहन्छन् । ती लेखक जो सोच्दै नसोची लेखिरहन्छन् तिनले पनि एक अर्कालाई वा देशलाई वा आफैँलाई नै खोइ, अब के लेख्दा अब राम्रो हुन्छ ? भन्ने सोधेर लेख्नु पर्छ भन्ने धारणा व्यक्त गरेका छन् र यही नै यस निबन्धको मूल विषयवस्तु पनि हो ।

यस निबन्धको मूल उद्देश्य भनेको हामीले यस धर्तीका वासिन्दाको मर्म बुझेर नौलो भविष्यको इतिहास बनाउने दृढ सङ्कल्पन राख्यो भने मात्र हामीलाई खोइ, के लेख्नु ? को समस्याले पिरोल्ने छैन जसले गर्दा हामी मर्दा पनि हाम्रा रचना जीवित भइ गुञ्जिरहन्छन् भन्ने रहेको छ । हामीले लेख्दा एकअर्कालाई वा देशलाई वा आफैँलाई सोधेर लेखेमा यस्तो स्थितिको सामना गर्नु पर्दैन । हामीले पढ्नेहरूको थपरी र स्यावासी पाउनको लागि आफ्नो बौद्धिकता र कलात्मकताको रङले आफ्ना रचनाहरूलाई रङ्ग्याउनु पर्छ । नौलो भविष्यको इतिहास बनाउने दृढ सङ्कल्प राखेनौ भने युगको चर्को प्रवाहलाई थाम्नथेग्न नसकी आफ्नै समेत अस्तित्व जोगाउन गाह्रो पर्ने कुरा उद्देश्यका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

निबन्धकार भट्टले यस निबन्धमा बोलचालमा प्रयुक्त सरल शब्दावलीको छनोट गरी सरल भाषाको प्रयोग गरेका छन् । तत्सम तद्भव, भर्त्ता तथा आगन्तुक शब्दको यथोचित प्रयोग गरी लेखिएको प्रस्तुत निबन्ध निजात्मक शैलीमा संरचित छ । ठाउँठाउँमा पूर्णविराम प्रश्नवाचक, उद्‌रण, अल्पविराम जस्ता चिन्हहरूको पनि प्रयोग पाइन्छ । यस निबन्धमा हामीले हाम्रो इतिहासलाई ध्यानमा राखेर यस धर्तीका सम्पूर्ण वासिन्दाको धुकधुकी छाम्न सक्यौ भने हामीलाई के लेख्नु ? को समस्याले पिरोल्ने छैन भन्ने कुरा सन्देशकको रूपमा आएको छ ।

#### ४.१.१.७ समय

यो निबन्ध २०३८ श्रावण-पौषको सौरभ भन्ने पत्रिकामा प्रथम पटक प्रकाशित भएको थियो र पछि केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र सङ्कलित गरिएको देखिन्छ । यो तीन पृष्ठ र चार अनुच्छेदमा संरचित लघु आकारको निबन्ध हो । यसको शीर्षक एउटै पदले बनेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले समयलाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । समय यथार्थ हो र निरन्तर चल्ने प्रक्रिया पनि हो । कुनै पनि प्राणी गर्भमा आएदेखि फेरि आफ्नो जीवनलाई परिवर्तित गरी अर्कै रूपमा नजादासम्म समयसित उसको उस्तै जीवित सम्बन्ध रहन्छ भन्ने दृष्टिकोण निबन्धकारको रहेको छ । समय मानिसको साथी हो । यसले मानिसमा भएका असल प्रवृत्तिलाई भन्नु दरिलो हुने मौका दिन्छ । यसले सफलतामा बधाई दिन्छ र असफलतामा फेरी त्यसमा लागिपर्न उत्साहित गर्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । समयलाई गाली गर्नु, त्यसको अनादर गर्नु, उपेक्षा गर्नु भनेको आफूभित्र भएका गुणहरूलाई जानी जानी लुक्न बाध्य पार्नु हो । समय शक्ति हो यसले हामीलाई आमाबाबुले जस्तै माया गर्छ, दाजुभाइ, दिदीबहिनी, इष्टमित्र, प्रेमीप्रेमिकाले जस्तै हामीलाई आफ्नोत्व प्रदान गर्दछ । हामीले समयलाई अध्ययन चिन्तन मनन गरेर बुझ्न सकिन्छ यसले हामीलाई दुःखसुखका क्षणहरूमा परीक्षा लिइरहेको हुन्छ । समय र भाग्य एउटै कुरा होइनन् भाग्य कल्पना हो भने समय यथार्थ हो भन्ने निबन्धकारको दृष्टिकोण रहेको छ । भाग्यमा भर गरेर जे काम पनि त्यसै छाडिदिनभन्दा हामीले समयलाई चिनेर आफ्नो काम गर्दै अघि बढेमा समय अवश्यै मेहेनती मानिसको साथमा समय हुन्छ भने समयलाई खयाल नगर्ने मानिसका विरुद्ध निरन्तर सङ्घर्ष गरिरहन्छ । समयको सदुपयोग जसले गर्थ्यो ती मानिस सदा इतिहासका पानामा रहिरहनेछन् भन्ने मूल भाव यस निबन्धको रहेको छ ।

यस निबन्धमा समयलाई हामीले चिन्न सक्नु पर्छ । उचित काम उचित समयमा गर्न सकेमा त्यसले हामीलाई सफलताको सिढीमा पुऱ्याउन सहयोग गर्दछ भन्ने कुरालाई मूल उद्देश्यको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । भाग्यलाई विश्वास गरेर समयलाई लत्याउने मानिस कहिल्यै पनि अघि बढ्न सक्दैन । समयले ठूलो सानोको भावना राख्दैन यसलाई महल ऐसआरामसँग कुनै मतलब हुँदैन त्यसैले यो धनी, गरीव जो सुकैको पनि असल मित्र बन्न सक्छ । समय निरन्तर अघि बढ्छ यसले कसैलाई पनि पर्खिदैन जसले समयसँग चलन सक्दैन उसलाई समयले लात खुवाउँछ त्यसैले हामीले समयलाई बुझेर अघि बढ्यौं भने निश्चयनै सफल हुन्छौं भन्ने उद्देश्यलाई प्रस्तुत गरिएको छ ।

निबन्धको भाषा सरल खालको छ । यसमा निबन्धकारले सामान्य पाठकले बुझ्ने खालको भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । तद्भव, तत्सम र ठेट नेपाली भाषाका शब्दहरूले निबन्धमा मिठास थपेको पाइन्छ । निबन्धमा निबन्धकारले

मनमा उब्जेका भावलाई सशक्त रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । भाग्यलाई विश्वास नगरी समयलाई चिनेर आफ्नो काम गर्दै गर्यो भने हामी जहिल्यै पनि सफलताको सिढीमा उकलन सफल हुन्छौं भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.१.८ मनको एकाग्रता

यो निबन्ध पारिजात पत्रिकाको पूर्णाङ्क तेह्र, २०३८ सालमा पहिलोपटक प्रकाशित भएको थियो भने दोस्रो पटक केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा प्रकाशित भएको छ । चार पृष्ठ र पाँच अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार पाएको छ । यसमा आत्मपरक वर्णन भएको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । मनको एकाग्रता भनेर दुई पदीय शीर्षकको चयन गरिएको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले मनको एकाग्रतालाई महत्त्वपूर्ण ठानेको तर जति गरे पनि आफू एकाग्र हुन नसकेको कुरालाई देखाएका छन् । कनै सन्तसाधु एकाग्र भएर ठूलाठूला काम गरेको देख्दा आफूलाई ईष्या हुने र त्यही ईष्याले दुईचार दिन एकाग्र भएर केही काममा सफलता मिल्यो भने पनि सफलताको मात्रा भन्दा फुर्क्याइको मात्रा धेरै भएर त्यो एकाग्रता भङ्ग हुने कुरामा लेखक चिन्तित छन् । एकाग्रताको महत्त्वबारे विभिन्न विद्वान्, विदुषी र अनुभवीहरूले भनेका सूक्तिवचनहरू पढ्ने गरेको र विर्सिएला भनी टिपेर पनि राख्ने गरेका निबन्धकार आफूभन्दा नजान्ने भेटाउँदा तिनलाई त्यसको चर्चा र व्याख्यासमेत गर्ने गरेको बताउँछन् । यसो गर्दा केही प्रेरणा पाएर थोरै मात्रामा लाभ लिन सकेपनि क्रमशः फेरि त्यो विर्सदै गएर जस्ताको तस्तै अवस्थामा आएको सत्यता प्रकट गर्छन् । आफू भित्र अहङ्कार भएकोले अरू भलादमीहरूका ओजसित प्रतिस्पर्धा गर्न निकै गाह्रो परेको महसुस गरेका छन् । कुन बाटोलाई समाउने हो र कुन चाहिँ हाँगोमा टेक्ने हो भन्नेमा अन्यौल देखिएका निबन्धकार आफू अति व्यस्त जनसमूहमा मिसिने चाहना प्रकट गर्छन् । आफूभित्रको अहङ्कारलाई मनको खोरबाट हटाएर जनसमूहमा मिसिने दृढ चाहना बोकेका निबन्धकारले आफ्नो अहङ्कार सौजन्यतामा, सामाजिकतामा, समानतामा परिणत भएको कुरा प्रकट गरेका छन् । आफूले आफ्नो अति सानो क्षमता र ठूलाठूला सीमाहरूलाई चिनेको विश्वास गर्दै आफ्नो मन शान्त र एकाग्र भएको छ भन्ने भावना यहाँ अभिव्यञ्जित भएको छ ।

यस निबन्धमा हामीले हाम्रो अहङ्कारलाई त्यागेर मनमा एकाग्रता ल्याउने प्रयत्न गर्न सक्नु पर्छ । मनमा धैर्य नभइ गरिएको एकाग्रताको प्रयास केवल दुईचार दिनको लागि मात्र हुन्छ र यसलाई चिरस्थायी बनाउन हामीले भित्रै देखिबाट एकाग्रताको भावनालाई ठाउँ दिनु पर्छ । यदी मनमा एकाग्रताको भावना छैन भने त्यसबेला एकाग्रतामा बस्नु भनेको एउटा कठोर बन्धनमा बस्नु सरह हो । भलादमी व्यक्तिहरूको सङ्गतले गर्दा हामी भित्रको अहंकार त्यसै हराएर जान्छ र हामीलाई सत्मार्ग तर्फ लम्किन सहयोग पुग्छ । यस निबन्धमा मनको एकाग्रताका कारण अहङ्कारले आफ्नो शिर निहुराउन कर लाग्छ भन्ने कुरा मूल उद्देश्यको रूपमा देखापरेको छ ।

निबन्धको भाषा सरल खालको छ । यस निबन्धमा तत्सम तद्भव भर्ना र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । ठाउँ ठाउँमा 'कुकुरको पुच्छर बाह्रवर्ष ढुङ्गोमा हाले पनि बाङ्गोको बाङ्गै', 'जुन गोरुको सिङ छैन उसकै नाम तीखे' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । यस निबन्धमा पाइने चिन्हगत विविधता, शाब्दिक र आलङ्कारिक अभिव्यक्तिले निबन्धको भाषाशैलीलाई रोचक तुल्याएको छ । जीवनमा एकाग्रताको स्थान महत्त्वपूर्ण हुन्छ । सफलताको शिखरमा चुम्नको लागि हामीले मनमा एकाग्रता ल्याउनु पर्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### ४.१.१.९ आत्मसम्मान

यो निबन्ध निबन्धकार आनन्ददेव भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्कलित निबन्ध हो । यो पाँच पृष्ठ र सात अनुच्छेदमा संरचित मझौला आकारको निबन्ध हो । एक पदीय शीर्षकको यस निबन्धमा निबन्धकारको आत्मपरक वर्णन पाइन्छ ।

आत्मसम्मानलाई मुख्य विषयवस्तु बनाएर लेखिएको यस निबन्धमा आत्मसम्मानलाई व्यक्तिको ठूलो सम्पत्तिको रूपमा स्वीकार गरिएको छ । यसले मानिसलाई शक्ति प्रदान गर्दछ र गलत बाटोमा जानबाट रोक्छ । मानिस जुन क्षण आफ्नो आत्मसम्मान बिर्सन्छ त्यो बेला उसले सबैथोक बिर्सको हुन्छ । दुःखी गरिब, शिक्षित, अशिक्षित सबैमा आत्मसम्मान रहेको हुन्छ जसले उनीहरूलाई राम्रो काम तर्फ प्रेरित गरेको हुन्छ भन्ने निबन्धकारको अभिव्यक्ति रहेको छ । यसलाई राम्रो

दृष्टिले हेर्यो भने राम्रै रूपमा र नराम्रो दृष्टिले हेर्यो भने नराम्रै रूपमा पाउन सकिन्छ । आत्मसम्मानलाई हृदयको स्वच्छ आँखाबाट हेर्न सक्नु पर्छ नत्र 'अभिमान' ले यसको जस्तै अनुहार लाएर बस्छ भन्ने धारणा व्यक्त गरेका छन् । अभिमानले सौन्दर्य र शक्तिको प्रदर्शन गर्छ, धाक र वाफ लगाउँछ, जसले हाम्रा बाहिरी आँखामा धेरै प्रभाव पार्छ तर आत्मसम्मान यी सबै कुराबाट पृथक रहन्छ । मानिसका जीवनमा आत्मसम्मान र अभिमानको सम्बन्ध प्रेमको हैन मारामारको रहने गर्दछ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । आत्मसम्मान विश्वासको अविचलन धरहर हो गहन ज्ञान र दुरदृष्टिको उपज विज्ञानको वाहन भएकाले मान्छेको भित्री आगोलाई यसले नित्य बालिरहन्छ । मान्छेको नैतिकताले नदिने कामहरू यसबाट कहिल्यै पनि हुँदैनन् । यो जे भन्छ प्रष्ट भन्छ र जे गर्छ त्यो सबैको भलाइको निम्ति गर्छ । आत्मसम्मानका मूल सत्रु भनेका भोक र प्यास हुन् जोसँग यो निरन्तर सङ्घर्ष गरिरहन्छ । अरुले गरेको अन्याय अत्याचारलाई सहनु नहुने र आत्मसम्मानका साथ बाँच्नु पर्ने कुरालाई विषय वस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

यस निबन्धमा आत्मसम्मानसाथ बाँच र त्यसैमा अमर होऊ भन्ने उद्देश्य रहेको छ । आत्मसम्मान मानिसको अस्तित्व हो । यसले मानिसलाई असल काम प्रति प्रवृत्त गराउँछ, त्यसैले यसलाई जीवनमा कहिल्यै विर्सनु हुँदैन । हामीले आत्मसम्मानका साथ बाँच्न सक्नु पर्छ । अभिमानले निर्वलताबाट आफ्नो मार्ग बनाउँछ भने आत्मसम्मानले सफलताबाट आफ्नो मार्ग बनाउँछ त्यसो हुनाले हामीले हृदयको आँखाले हेरेर आत्मसम्मानलाई चिन्न सक्नु पर्छ । आत्मसम्मानले बौद्धिक क्षेत्रमा लगन, परिश्रम र उच्च आकाङ्क्षाले निर्बाध रूपमा अधि बढ्न प्रेरित गरिरहन्छ । यसले मानिसलाई अत्याचार सहन लगाउँदैन बरु अन्यायका विरुद्ध लड्न प्रेरित गर्छ भन्ने मूल उद्देश्य रहेको छ ।

सरल भाषाशैलीमा लेखिएको यो निबन्धको भाव र भाषामा निजात्मक पाइन्छ । यस्ता तत्सम, तद्भव र भर्ना नेपाली शब्दहरूका साथै केही आगन्तुक शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । आगन्तुक शब्दहरूमा विशेष अङ्ग्रेजीकै प्रयोग गरिएको छ । आवश्यकता अनुसार बीच बीचमा प्रश्नवाचक, विश्मयादिबोधक, पूर्णविराम, अल्पविराम जस्ता चिन्हहरूको प्रयोग पनि पाइन्छ । आत्मसम्मान मानिसको व्यक्तित्व हो त्यसैले यसलाई स्वीकार गरेर हामी आत्मसम्मानका साथ बाँच्नु पर्ने कुरालाई निबन्धले देखाउन खोजेको छ ।

#### ४.१.२ विचारप्रधान निबन्धहरू

खास चिन्तन, विचार वा दृष्टिकोणको प्रधानता भएका निबन्धलाई विचारात्मक निबन्ध भनिन्छ। यसमा हृदय पक्ष भन्दा बुद्धिपक्षको प्रबलता रहन्छ। यस्ता निबन्धमा लेखकका वैयक्तिक चिन्तनसमेत प्रस्तुत भएका हुन्छन्। चिन्तन र विचारलाई आकर्षक र परिष्कृत रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ। गहन र गम्भीर विषयमा बौद्धिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत गरिन्छ। यसमा निजी र मौलिक विचारको प्रस्तुति र तर्कको आधिक्य रहन्छ भने भावना र कल्पनाले कमै मात्र खेल्ने मौका पाउँछन्। विचारात्मक निबन्धको भाषाशैली कसिलो, सुगठित र आलङ्कारिक हुन्छ। भट्टका विचारप्रधान निबन्धहरू निम्न लिखित छन्।

#### ४.१.२.१ जीवनको आगो

यो निबन्ध भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र रहेको पहिलो निबन्ध हो। पाँच पृष्ठ र दश अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार पाएको छ। पाँच पृष्ठ र दश अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार पाएको छ। दुई पदीय शीर्षक रहेको यो आत्मपरक निबन्ध हो।

जीवनलाई आगोको रूपमा लिएर लेखिएको प्रस्तुत निबन्धको विषयवस्तु मानवजीवनकै समग्रतामा रहेको छ। निबन्धकारले आफ्ना विचारहरू प्रस्तुत गरेको हुँदा यसलाई विचारात्मक निबन्धको तहमा राख्न सकिन्छ। यसमा निबन्धकारले मानव जीवनलाई आगोसँग तुलना गरेका छन्। आगोलाई तुच्छ र सानो चीजको रूपमा कहिल्यै लिन नहुने कुरा प्रकट गर्दै हामीले हाम्रो जीवनको सामान्य स्थितिमा चेतनाको विकास र भौतिक वातावरणको अनुकूलता मिलाउन नसके भुङ्गो भित्र रहेको आगो निम्न सक्छ भन्ने कुरा प्रस्ट पारिएको छ। हामीले सधैं लगनशीलताको बाटोमा पाइला चाल्नुपर्छ अनि जीवनलाई गतिशील तुल्याउनको लागि मेहनत र परिश्रम गर्नु पर्छ। जीवनलाई गतिहीनतातिर डोर्‍याएर त्यो धाराशायी र क्षतविक्षत बन्न पुग्छ र जीवनको आगो निम्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ। हामीले ज्ञानको ज्योति फैलाउन सधैं तलबाट माथि चढ्न सक्नु पर्छ। हामी जति लगनशील हुन्छौ त्यति नै धेरै त्यस कुरा बारे हामीलाई ज्ञान हुन्छ र त्यसका राम्रा नराम्रा पक्षबारे थाहा हुन्छ। जीवनमा उत्साहमाथि उत्साह, गतिमाथिको गति, अनुकूल वातावरणले दिएको सुविधाहरूलाई सधैं यथावत् रहरिहने अनुकूल शक्ति

भनी ठान्नु बराबर अन्य ठूलो अज्ञान केही छैन भने उनको स्वीकारोक्ति छ । जीवन गतिशील छ त्यसकारण हामीले आफ्नो जीवन पथमा आफ्ना पाइलाहरू अगाडि बढाई राख्नु पर्छ भन्ने नै यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु हो ।

यस निबन्धको मूल उद्देश्य जीवनलाई सही दिशातिर मोड्न सक्नुपर्छ भन्ने हो । जीवन आगो हो । हामीले जीवनको आगोलाई गतिप्रदान गर्न सक्नु नै ठूलो कुरा हो । जीवन एउटा प्रयत्न भएकाले हामीले आफूलाई सफलताको चुलितीर बढाउन सक्नु महानता हो । जीवनलाई सीमित अर्थबाट नहेरी व्यापक अर्थबाट हेर्नु पर्छ । हामीले असल काम गर्दै गएपछि जीवनको आगो सजिलैसँग दन्कन सक्छ र खराब काम गर्दै गयो भने जीवनको आगो निभ्छ । चेतनाले जीवनलाई खरानी भित्रको आगोको रूपमा मात्र भएपनि जोगाइराख्छ । त्यसैले हामीले जीवनलाई सही मार्गतिर डोच्याउनु पर्छ भन्नु नै यस निबन्धको प्रमुख उद्देश्य हो ।

यस निबन्धको भाषाशैली सरल तथा रोचक छ । विचारात्मक शैलीमा लेखिएको प्रस्तुत निबन्धमा जीवनको आगोको बारेमा निबन्धकारले आफ्ना विचारहरू व्यक्त गरेका छन् । यस निबन्धको भाषाशैली विचलनशील छ । यसमा तत्सम, तद्भव, भर्त्सा शब्दहरूका साथै आगन्तुक शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । कुनै स्थानमा छोटो वाक्यदेखि लिएर कुनै स्थानमा लामा-लामा वाक्यहरूको प्रयोग गरिएको छ । यो निबन्ध सरल, मिश्र र संयुक्त वाक्यहरूको सम्मिश्रणबाट बनेको छ । यसमा अलङ्कारहरूको छनक पनि भेटिएको पाइन्छ । जीवनलाई गतिशील बनाएर आफू भित्रको आगोलाई कहिल्यै निभ्न दिनु हुँदैन भन्ने मूल सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.२.२ परिचित अपरिचित

यो निबन्ध २०३९ सालको कुन्दन पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको थियो भने पछि केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र सङ्ग्रहित भएको छ । पाँच पृष्ठ र पाँच अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार पाएको छ । यो निबन्धमा दुइपदीय शीर्षक रहेको छ ।

जीवनमा मान्छे पहिले कसैसँग परिचित नभए पनि विस्तारै सबैसँग परिचित हुन्छ । परिचय गरिसकेपछि उसले ती व्यक्तिहरूसँग एक प्रकारको साइनो गाँसेको हुन्छ र ती व्यक्तिहरूलाई आफ्नो जीवनका अभिन्न अङ्गका रूपमा लिएको हुन्छ

भन्ने कुरा नै यसको विषयवस्तुको रूपमा देखापरेको छ । मान्छेको व्यवहार र बुद्धि विवेकले गर्दा ऊ अन्य प्राणी भन्दा फरक रूपमा देखापरेको हो । उसले आफ्नो प्रतिद्वन्द्वीलाई पनि साथमा लगेर जान्छ र पछि उसलाई आफ्नो मित्रको रूपमा हेर्छ । साथीहरूबाट छुट्टिएर पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण जता गए पनि साथमा साथीत्वको मिठो सम्झना बोकेर गएको हुन्छ । समाजमा आफ्नो अस्तित्व कायम गर्नका लागि मानिसले अनेक प्रकारका प्रयत्नहरू गरेको हुन्छ । हामीले सधैंभरी एकआपसमा नाता सम्बन्ध गाँसेर बस्नु पर्छ सारा नेपालीहरूलाई भ्रातृत्व र भगिनीत्वका दृष्टिले हेर्नुपर्छ भन्ने भाव प्रकट गरेका छन् । हामी सबै नेपालीहरूका हातका नशाहरूमा विश्वास र वीरत्वका सूर्य चन्द्राङ्कित भन्डा फर्फराइ रहेको हुँदा आपसमा मित्रताको भावना कायम गर्दै देशभक्तिको मायालाई सबैले आफ्नो मुटुमा सजाउन सक्नु पर्छ भन्ने विचार यसमा प्रकट भएको छ । निबन्धमा अपरिचित व्यक्ति पछि आफ्नो निकट हुन सक्छ भने आफ्नो निकै निकटको परिचित व्यक्तिले पनि आफू माथि औला उठाउन सक्छ भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् । भविष्य हामीसित सधैं अपरिचित छ तर हाम्रो आयुसँगै त्यो हामीसित हात मिलाउन आइपुग्छ भन्ने कुरामा लेखक विश्वस्त छन् र भविष्यमा आउने सम्पूर्ण अपरिचितहरूलाई पहिलेनै स्वागत गरेका छन् । यो एउटा सन्देशात्मक विचार बोकेको विचारात्मक निबन्ध हो ।

प्रस्तुत निबन्धको उद्देश्य हामी सम्पूर्ण नेपाली आपसी वैमनस्यता त्यागेर हातमा हात मिलाउँदै अगाडि बढ्नु पर्छ भन्ने सन्देश दिनु हो । यस निबन्धमा मानिसको परिचय मानिससँगै हुने भएकाले उसले आफ्नो जीवनभर साथीहरूसँग सहिष्णुताको भाव कायम राख्नु पर्छ भन्ने कुरा प्रष्ट पारिएको छ । हाम्रो भविष्य हामीसित अपरिचित छ तर त्यो निश्चयनै भविष्यमा हामीसित हात मिलाउन आइपुग्छ त्यसैले हामीले भविष्यमा आउने अपरिचितहरूको स्वागत गर्न सक्नु पर्छ । वर्तमानमा मात्र नभई भविष्यमा पनि हामीले हाम्रा सम्पूर्ण अपरिचित मित्रहरूलाई परिचय गर्नको लागि आह्वान गर्नुपर्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ ।

भाषा अभिव्यक्तिको माध्यम हो भने शैली अभिव्यक्तिको प्रकार हो । यस निबन्धको भाषाशैली पनि सरल र रोचक छ । यसमा सरल, संयुक्त र मिश्रवाक्यको प्रयोग भएको छ । यसमा प्रयोग गरिएका ठेट नेपाली शब्दहरू र आगन्तुक स्रोतका अन्य शब्दहरूले पनि निबन्धमा मिठास भरेको छ । समग्रमा भन्नुपर्दा यसमा विचलनशील भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । परिचित व्यक्ति भनेर पूर्णतः भरोसा

गरेर अपरिचित व्यक्तिलाई वास्ता नगर्दा पनि परिचित व्यक्तिले नै आफू माथि औला उठाउन सक्छन् भन्ने देखाउन खोजिएको छ ।

### ४.१.२.३ स्मरण-शक्ति

यो निबन्ध २०३२ सालको मधुपर्क पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो र यसलाई पुनः भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र समावेश गरी प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । यो निबन्ध पाँच पृष्ठमा विस्तारित र चार अनुच्छेदमा संरचित छ । यसमा लेखकको आत्मपरक वर्णन रहेको छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको छ ।

यसको मुख्य विषयवस्तु मानिस ठूलो हुनुमा उसको स्मरण शक्तिको ज्यादै ठूलो भूमिका रहेको हुन्छ भन्ने कुरा औल्याउनु हो । यसलाई विचार चिन्तन प्रधान निबन्धका रूपमा राख्न सकिन्छ । प्रत्येक मानिसको स्मरणशक्ति फरक-फरक हुन्छ यस्तो हुनुमा उसलाई वातावरणले पनि प्रभाव पारेको हुन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । विद्यार्थीको अगाडि किताब हेरी हेरी पढाउने शिक्षक कमजोर स्मरणशक्ति भएको व्यक्तिमा गणना हुन्छ । विद्यार्थीले कक्षामा प्राध्यापकले धाराप्रवाह रूपमा सबैको स्मरणशक्ति भरिदेओस भन्ने चाहन्छ । स्मरण शक्तिका बारेमा पहिलेदेखि नै अध्ययन गर्न थालिएको हो । यसकारण वैज्ञानिक भन्दछन् मानव मस्तिष्कको धेरै विकास भैसकेको छ र हाम्रो दिमागमा कुरा राख्न सक्ने क्षमता पनि प्रशस्त बढीसकेको छ तर पनि ज्ञानको टुङ्गो कहिल्यै लाग्न नसक्ने भै स्मरण शक्तिको आर्जनको खाँचो पनि बढेर गएको कुरा व्यक्त गरिएको छ । मानिसमा दुई प्रकारको स्मरणशक्ति हुन्छ भन्ने निबन्धकारले भनेका छन् । एक प्रकारका मानिसमा आपर स्मरण शक्ति रहेको हुन्छ भने अर्को प्रकारका मानिसमा मध्यम खाले स्मरण शक्ति रहेको हुन्छ । स्मरणशक्ति नभएको मानिस चेतनहीन हुन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको मुख्य उद्देश्य कुनै पनि व्यक्ति आफूलाई महान् बनाउन खोज्नु भन्दा पहिले स्मरणशक्तिको विकास गर्नुपर्छ । स्मरणशक्तिले गर्दा नै मानिस महान् विद्वान् बन्न सक्छ । मानिसको स्मरणशक्तिको विकास भएको छैन भने उसले अध्ययन गरेको सुगा रटाईले पनि केही काम गर्दैन । स्मरणशक्तिको वृद्धि गर्नको लागि प्रत्येक व्यक्तिले शरीर र मनको सन्तुलन मिलाउन सक्नुपर्छ ।

यस निबन्धको भाषाशैली सरल भएपनि प्रतीकात्मक छ । यसमा 'म ताक्छु मुढो बञ्चरो ताक्छ घुँडो' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ भने 'थक्क' जस्ता अनुकरणात्मक शब्दहरूको पनि प्रयोग पाइन्छ । लुटफिट, टाइफिट र मिसफिट जस्ता अङ्ग्रेजी भाषा स्रोतका शब्दहरूको प्रयोग पनि यस निबन्धमा गरिएको छ । यसका साथै अन्य भाषाबाट केही आगन्तुक शब्द र भर्ना नेपाली शब्दहरूको प्रयोगले निबन्धको भाषाशैलीमा माधुर्यता थप्ने काम गरेको छ । शारीरिक तथा मानसिक दुवै खालका काम गर्नेहरूका लागि स्मरणशक्तिको आवश्यकता पर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.२.४ शिशिलता र घचघच्याइ

यो निबन्ध पहिलो पटक २०२६ सालको लहर पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो थियो भने यसलाई भट्टले पुनः केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र सङ्गृहीत गरी प्रकाशित गरेका छन् । यो निबन्ध सात पृष्ठमा विस्तारित र सात अनुच्छेदमा संरचित छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार ग्रहण गरेको छ ।

यस निबन्धमा शिशिलता र घचघच्याइ जस्ता दुईवटा कुराहरूलाई आपसमा जोडेर विश्लेषण गरिएको छ । निबन्धकार भट्टले शिशिलता एकप्रकारको रोग हो । यसले अन्तमा गएर मानिसलाई मृत्युको नजिक पुऱ्याइदिन्छ भन्ने कुरा प्रष्ट पारेका छन् । शिशिलताले मानिसलाई अल्मल्याइ राख्ने हुँदा यो प्रगतिको बाधक हो । शिशिलता भौतिक प्रतिक्रिया हो । शरीर शिशिल भयो भने त्यसले मनमा पनि प्रभाव पार्दछ । यदी शरीर नै शिथिल भयो भने यसले उसको जीवनमा ठूलो प्रश्न चिन्ह खडा गर्छ । साधारण भरियाको शरीरमा स्फूर्ति रहुञ्जेल मात्रै ठूलो बल प्राप्त हुन्छ किनभने उसले जोखिमपूर्ण काम पनि फत्ते गर्न सक्छ । यसकारण जस्तो सुकै बलियो मन भएको मान्छेलाई पनि शारीरिक फूर्ति वा स्वच्छताको आवश्यकता पर्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । देशकाल परिस्थितिले सबैकुरालाई प्रभाव पार्दछन् । हाम्रो शरीरको शिथिलता पछाडि पनि यिनै कुराहरू प्रमुख रूपमा आएका हुन्छन् । कुठाँउमा, असमयमा र विरोधी अवस्थामा कुनै काम गर्नु पर्दा स्वभावैले शिथिलता आउँछ तर त्यो शिथिलता दीगो हुन्छ भनेर किटान गर्न सकिदैन । समग्रमा भन्नु पर्दा हामीले शिथिल भएर बस्नु पर्दैन शिथिलतालाई स्फूर्तिले

घच्चच्याई प्रगतिको पथमा पाइला चाल्नु पर्छ । यदी हामी शिथिल भएर बस्यौ भने साम्राज्यवादीहरूले हाम्रो देशलाई सजिलैसँग आफ्नो अधीनमा पार्न सक्छन् भन्ने भाव नै यसको विषयवस्तुका रूपमा रहेको छ ।

यस निबन्धको मुख्य उद्देश्य शिथिल भएर बस्नु हुँदैन यसले हामीलाई पतनको बाटोतिर धकेल्छ यसकारण सधैं शिथिलतालाई पर सार्नुपर्छ भन्ने सन्देश दिनु हो । मानिस फूर्तिलो भएमा उसले असल र रचनात्मक कार्य गर्न सक्छ । शिथिलतालाई सधैं स्फूर्तिले घच्चच्याइ राख्नु पर्छ भन्ने कुरा नै यसको उद्देश्यका रूपमा देखापरेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । यसमा भारती जनताले साम्राज्यवादी अङ्ग्रेजका विरुद्ध लडेको र नेपाली जनता राणाशासनको विरुद्धमा लडेको कुरालाई स्फूर्तिसँग जोडेको पाइन्छ । यसमा अङ्ग्रेजी भाषाका शब्दहरूका साथै अन्य भाषाबाट आएका आगन्तुक शब्द र ठेट नेपाली शब्दको प्रयोग गरिएको छ भने कहीं कहीं आलङ्कारिक भाषाको पनि प्रयोग भएको छ । जस्तै : “देश काल परिस्थितिले सबै कुरालाई प्रभाव पार्छन भनेभैँ हाम्रो शिथिलता पछाडि पनि तिनै कुराहरू रहेका हुन्छन् ।” यसमा उपमा आलङ्कारको प्रयोग गरिएको छ । हामीले भित्री हृदयदेखि नै शिथिलतालाई हटाउनु पर्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धको रहेको छ ।

#### ४.१.२.४ इमानदारी

यो निबन्ध प्रथम पटक २०२६ सालको लालुपाते पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो । भट्टले २०४९ सालमा केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र सङ्कलन गरेर पुनः प्रकाशित गरेका छन् । ६ पृष्ठ र बाह्र अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार प्राप्त गरेको छ । यस निबन्धको शीर्षक एकपदीय रहेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले इमानदारीको बारेमा वर्णन गरेका छन् । इमानदार मानिसहरू सोझा भएको हुँदा उनीहरू आफ्नो इमानदारीमा पक्का हुन्छन् । त्यसैले सबैमा त्यही कुरो देख्ने कोसिस गर्दछन् । संसारमा कोही पनि बेइमान नभइदिए हुन्थ्यो भन्ने उनीहरू ठान्छन् । इमानदारको जीवनमा दुःखै दुःख हुन्छ, उनीहरूको आफ्नै अस्तित्व हरदम खतरामा हुन्छ, तर दुःख छ भन्दैमा उनीहरूले लत्रने, भुक्ने, होच्चिने, डराउने कुरा आउन्त भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । इमानदारी र बेइमानी दुई विपरीत कुराहरू हुन् । हामीले जीवनमा गति प्राप्त गर्न विरोधी कुराको सङ्घर्ष गर्नु आवश्यक छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । मानिसहरू बढी भन्दा बढी धनी हुने चाहना राख्छन् त्यही नै बेइमानीको मूलभूत कारण हो । इमानदार मानिसहरू नराम्रा कुराहरूमा आफूलाई संयमित गरी निर्दिष्ट पथमा लागिरहन्छन् र स्थितिको सामान्य अनुकूल वा प्रतिकूल परिस्थितिले उनीहरूलाई कुनै प्रभाव पार्दैन भन्ने कुरालाई यहाँ देखाइएको छ । सफलता प्राप्त गर्नको लागि इमानदारीताको साथसाथै बेइमानीलाई पछार्न सक्ने बुद्धिको पनि आवश्यकता पर्दछ । आजको इमानदार मानिस भोलि गएर बेइमान पनि हुन सक्छ र हिजोको बेइमान मानिस पर्सि गएर इमानदार पनि हुन सक्छ । प्रत्येक नेपालीहरूको नैतिकतालाई उठाउनु परेकाले आज नेपाललाई बढी इमानदार व्यक्तिहरूको आवश्यकता रहेको कुरालाई यस निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको मुख्य उद्देश्य नेपाली समाजमा अधिकार जमाएर बसेका शासक भनाउँदाहरूलाई किनारा लगाएर सोझा जनताहरूले शासन गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश दिनु हो । देशमा इमानदारको सङ्ख्या घट्दै गएको छ भने बेइमानहरूको सङ्ख्या बढ्दै गएको छ । हामीले बेइमानहरूलाई पाता कसेर तह नलगाउन्जेल देश र देशवासीको भलो हुने काम गर्न सकिदैन भन्ने नै यसको मुख्य उद्देश्य हो ।

यसमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । बीच बीचमा 'जस्तालाई त्यस्तै ढिडोलाई निस्तै', 'धनदेखेपछि महादेवका तीन नेत्र खुल्नु', 'आइलाग्ने

ब्याँसोमाथि जाइलागनु’, ‘पहरोसित कुहिनोको के डर’ जस्ता उखान टुक्काको प्रयोगले भाषामा लयात्मकता थपेको छ । यसमा प्रयोग गरिएका भर्रा नेपाली शब्दहरूका साथै तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोगले भाषामा मधुर्यता थपेको छ । वेइमानीको शक्ति भन्दा इमानदारीको शक्ति लाखौ गुणा ठूलो हुन्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.१.२.६ के हामी आशावादी पाइलो सार्न सक्छौं ?

यो निबन्ध केही आत्मपरक निबन्धहरू (२०४९) सङ्ग्रहभित्र सङ्कलन गरिएको विचार प्रधान निबन्ध हो । यो निबन्ध छ पृष्ठ र बीस अनुच्छेदमा संरचित छ । प्रश्नात्मक खालको छ, पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा निबन्धकारले निराशावादी स्वरलाई प्रखर रूपमा प्रकट गरेका छन् । आजका मानवहरू आफूभित्र भएका कमी कमजोरीहरूलाई लुकाएर बसिरहेका हुन्छन् । उनीहरूको छातिभित्र देशभक्तिको भावना नष्ट हुदै गैरहेको छ । देशका वरिष्ठ र जिम्मेवार व्यक्तिहरू स्वार्थी र नीच छन् भन्ने कुरा देखाइएको छ । बाबुबाजेले जोहो गरिदिएको धनमा पुरुषार्थ देखाउन पल्केकाहरू देश निर्माणमा क्रियाशील देखिँदैनन् । वर्तमान समयमा मानिसको जनसङ्ख्याको साथ साथै अन्य उपभोग्य वस्तुहरूको पनि भाउ बढेको छ, जसले गर्दा आर्थिक अवस्था कमजोर भएकाहरूलाई निकै मार परेको कुरालाई प्रस्तुत गरिएको छ । धनी र पूँजीपति सामन्तहरूले गरिबको पीडा र चित्कार बिसिँएकोमा निबन्धकारले चिन्ता प्रकट गरेका छन् । दिनभर काम गरेर चार पैसा कमाउनेले आफ्नो परिवार धान्न कठिन भएको समयमा हाम्रो समाजमा एकले अर्कोलाई सहयोग गर्नुपर्छ भन्ने भावनाको विकास भएको पाइँदैन । साहू महाजनले गरिब जनतामाथि गर्ने थिचोमिचो आफ्नो धनसम्पत्तिको आडमा गरिबलाई हप्काउने जस्ता कुरालाई देखाएर यस्तो स्थितिमा हामी कसरी आशावादी पाइलो सार्न सक्छौं ? भन्ने प्रश्नलाई मूल विषयवस्तुको रूपमा देखाइएको छ ।

यस निबन्धको मुख्य उद्देश्य वर्तमान विश्वमा मानवता हराउँदै गएको छ, बरु त्यसको सट्टा दानवताले आफ्नो अधिकार जमाउँदै आएको छ, भन्ने सन्देश दिनु हो । मानिस व्यक्तिगत स्वार्थ लिप्सामा डुबेको छ । ऊ आफ्नो स्वार्थपूर्तिको लागि

जस्तोसुकै अपराधिक कार्य गर्न पनि पछि हट्दैन भन्ने कुरा नै यस निबन्धको मूल उद्देश्यका रूपमा देखापरेको छ ।

निबन्धमा भाषाशैली सरल खालको हुन्छ । यस निबन्धमा पनि सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । यसमा संस्कृतका तत्सम 'ॐ शान्ति' शब्दको प्रयोगका साथै तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको अधिक प्रयोगले निबन्धको भाषाशैलीलाई सरस तुल्याएको छ । 'भैँ' 'सरी' जस्ता उपमा र रूपक अलङ्कारको प्रयोगले पनि निबन्धको भाषामा कवितात्मक थपेको छ । 'बक्सियोस' जस्ता उच्च आदरार्थी भाषाका साथै 'मोरामोरी' जस्ता निम्न आदरार्थी भाषाको पनि प्रयोग भएको यस निबन्धमा 'म ताक्छु मुढो बन्चरो ताक्छ घुँडो' जस्ता उखान टुक्काको पनि प्रयोग भएको छ । एक अर्कामा सहयोगी भावना भएन भने हामीले कहिल्यै पनि आशावादी पाइलो सार्न सक्दैनौं भन्ने सन्देश निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.२.७ सेवा र सङ्घर्ष

प्रस्तुत निबन्ध २०३५ सालको **मुक्ति** पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो भने पछि भट्टले **केही आत्मपरक निबन्धहरू** निबन्धसङ्ग्रह भित्र सङ्ग्रहित गरी दोस्रो पटक प्रकाशित गरेका छन् । तीन पृष्ठ र चार अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्ध आयामका दृष्टिले लघु खालको रहेको छ । यसको शीर्षक दुई पदीय रहेको छ ।

यसमा आध्यात्मिक विचार र भौतिक विचारको समन्वय केलाइएको हुँदा यो एउटा विचार चिन्तन प्रधान निबन्ध हो । मानिसलाई न्यूनतम रूपले भोक, आश्रय, हीनता, असमानता र घृणाबाट मुक्त बनाई प्रेम र सेवाको खुला आकाशमा ओराल्न पाए आध्यात्मवादीहरूले भनेको कुरा केही मात्रामा लागु हुन सक्थ्यो की भन्ने आशावादी भाव प्रस्तुत भएको छ । क्राइष्ट, शङ्कराचार्य, र बुद्धका कुरा कार्यरूपमा मान्नेलाई केही सन्तोषको विषय भए पनि नमान्नेलाई उनकै नाममा मनोमानी गर्न खुला छुट भएको छ । तसर्थ प्रत्येक मानिसलाई कसरी चेतनाको पाठ पढाउँदै तिनलाई ज्ञानी र विवेकशील बनाउन सकिन्छ होला भन्ने जिज्ञासा प्रकट गरेका छन् । समाजमा रहेका स्वार्थी तत्त्वहरूलाई असङ्ख्य दुःखी दरिद्रको पीडा भन्दा आफ्नै स्वार्थपूर्ति गर्न पाए हुन्थ्यो भन्ने स्वार्थी भावनाले पिरोल्न थाल्छ तब त्यहाँ सङ्घर्ष हुन थाल्छ । यस्तै स्वार्थीपनका कारण संयुक्त राज्य अमेरिकाको जन्म भयो साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद र सामाजिक साम्राज्यवादले प्रश्रय पायो अनि यही

स्वार्थीपनले प्रत्येक राष्ट्रमा घरेलु युद्धहरू भए भन्ने मूल विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ ।

भौतिकवादी दर्शन मित्थ्या कुरा हो । यसले मानिसलाई व्यक्ति स्वार्थतिर धकेल्छ, तर अध्यात्मवादी दर्शनले मानिसलाई सहयोगी निस्वार्थी र दयालु बन्न उत्प्रेरणा दिन्छ । यसकारण हामीले भौतिकवादको निन्दा गर्दै अध्यात्मवादको पक्षमा अगाडि सर्नुपर्छ भन्ने सन्देशका साथै वर्तमान विश्वपरिस्थितिको कारक तत्त्व नै भौतिकवाद हो भन्ने कुरा अगाडि सार्नु नै यस निबन्धको मूल उद्देश्य हो ।

यस निबन्धमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । यसमा तत्सम शब्दका साथै आगन्तुक र भर्रा नेपाली शब्दको प्रयोगले गर्दा निबन्ध रोचक बनेको छ । निबन्धकारको भाषिक कौशलले गर्दा यसका बीचबीचमा बिम्बात्मक भाषाको प्रयोग पनि गरिएको पाइन्छ । व्यक्ति आफ्नै मात्र स्वार्थ पूर्ति गर्न नलागि सेवा भावले ओतप्रोत होस् भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.१.२.८ एकाग्रता

प्रस्तुत निबन्ध भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र सङ्ग्रहीत निबन्ध हो । यो निबन्ध पाँच पृष्ठमा विस्तारित र सात अनुच्छेदमा संरचित छ । एक पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आयाम प्राप्त गरेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा निबन्धकारले एकाग्रताको महत्त्वलाई दर्शाएका छन् । एकाग्रता जीवनको अनिवार्यता हो । जुनसुकै व्यक्तिको सफलताको पछाडि एकाग्रताको हात रहेको हुन्छ भन्ने अभिव्यक्ति यस निबन्धमा पाइन्छ । एकाग्र भएर कुनै काममा लागिपरेको व्यक्ति तन, मन, धनले नै आफ्नो लक्ष्यमा पुग्ने कोशिस गर्छ र सफल पनि हुन्छ । तीव्र बुद्धि र क्षमता भएका व्यक्ति आफ्नो एकाग्रतालाई सजिलै एउटा विषयबाट अर्कोमा लगाउन सक्छन् भने साधारण प्रतिभाका व्यक्तिहरूलाई त्यसो गर्न निकै कठिन पर्दछ । एकाग्रता जीवनको अनिवार्यता हो । जीवनमा सफल हुनको लागि ठूलो प्रभावकारी तत्त्व एकाग्रता नै हो । व्यक्तिलाई कुनै कुराप्रति चाख भएमा त्यसमा एकाग्रता पाउन सजिलो हुन्छ तर एकाग्रतालाई कायम राख्न कुनै कुरा प्रतिको चाखको साथसाथै अभ्यास धैर्य र लगनको पनि उत्तिकै आवश्यकता पर्दछ । एकाग्रतामा पुगेर खाली दृष्टि मात्र प्रष्ट

गराई लक्ष्य ताकी हिँडेर पुग्दैन त्यसका पक्ष विपक्षमा पनि उत्तिकै ध्यान दिन सक्थो भने मात्र सफलता हात लाग्छ भन्ने भाव यस निबन्धमा रहेको छ । प्रत्येक नागरिकले आफ्नो इच्छा र योग्यता अनुकूल काम गर्न पाएमा उनीहरू बढी एकाग्र भई जिउज्यान दिई राष्ट्रको रक्षा र विकासको कार्यमा संलग्न हुन्छन् भन्ने विषयवस्तु यसमा रहेको छ ।

हामीले कुनै पनि कार्य गर्नु पर्दा त्यसमा एकाग्र भएर लगनका साथ काम गर्नु भने त्यसले हामीलाई अवश्यनै सफलताको बाटोतिर लम्काउँछ भन्ने कुरालाई उद्देश्यको रूपमा देखाइएको छ । व्यक्तिको एकाग्रतामा राष्ट्रकै एकाग्रता लुकेको हुन्छ तसर्थ हामी आफ्नो लक्ष्यमा शुरुदेखि नै एकाग्र हुनु पर्छ र जस्तोसुकै विरोधी परिस्थितिमा पनि एकाग्रतालाई भङ्ग हुन दिनु हुँदैन भन्ने यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

सरल भाषाशैलीमा आत्मदृष्टि प्रस्तुत गरिएको यो एउटा वैचारिक निबन्ध हो । यसमा तत्सम तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । ठाउँठाउँमा 'गोबर गणेश', 'म ताक्छु मुढो, बच्चरो ताक्छ घुँढो' जस्ता उखान टुककाको प्रयोग गरिएको छ । जसले गर्दा भाषामा अभि मिठास भरेको छ । एकाग्रताको अभावमा कुनै पनि कार्य सफल हुन सक्दैन त्यसैले हामीले एकाग्रतालाई जीवनमा लागू गर्नु पर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.२.९ प्रेरणाको स्रोत

यो निबन्ध पहिलो पटक २०३८ पारिजात पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो र यसलाई पुनः केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र समावेश गरी प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । यो निबन्ध पाँच पृष्ठ र पाँच अनुच्छेदमा संरचित छ । प्रथमपुरुषीय कथनढाँचामा प्रस्तुत यो निबन्ध मझौला आयामको रहेको छ । यसको शीर्षक दुई पदीय रहेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले कुनै पनि काम गर्नुको पछाडि प्रेरणाको अत्यन्त महत्त्व रहन्छ भन्ने कुरालाई मूल विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । प्रकृतिले सबै मानिसलाई कुनै न कुनै गुणले सम्पन्न तुल्याएको हुन्छ तर त्यसका लागि प्रेरणाको आवश्यकता पर्दछ । प्रेरणा मानिसको स्वभाव, गुण माथि धेरै निर्भर गर्दछ । कसैले प्रकृतिको माध्यमबाट प्रेरणा प्राप्त गर्दछन् भने कसैले सहरको गुम्सिलो

वातावरणबाटै पनि प्रेरणा प्राप्त गर्दछन् त्यसैले पनि सबै मानिसको प्रेरणाको स्रोत एकै प्रकारको हुँदैन भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । कुनै पनि काम गर्न प्रेरणाको जति महत्त्व रहन्छ सो प्रेरणाको स्रोतलाई चुम्ने कुरा भन् ठूलो महत्त्वको कुरा हो । यो जीवनको पृथकता जस्तै भिन्न र व्यापक हुन्छ यसमा कुनै सीमा लगाउन सकिन्न भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा रहेको छ । कसैका लागि प्रेम प्रेरणाको स्रोत बन्न सक्छ भने सबैका लागि प्रेम नै प्रेरणाको स्रोत बन्न सक्छ भनी भन्न सकिन्न । नारी पनि प्रेरणाकी स्रोत मध्ये एक ज्यादै प्रबल शक्ति हो तर त्यो मात्र एक शक्ति भनी भन्न सकिन्न । साथै अर्थ/धन पनि जीवनमा उत्साह, अग्रसरता र अन्तिम विजयको निम्ति एउटा प्रेरणाको स्रोत हो भन्ने कुरा निबन्धमा देखाइएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको मुख्य उद्देश्य भनेको हामीले हाम्रो जीवनमा मौका परेका कुराहरूलाई प्रेरणाका स्रोत बनाउन अघि बढ्नु पर्दछ भन्ने हो । प्रेरणाको एउटै पनि मूल स्रोत फेला पार्न सक्थौ भने हाम्रो यात्रा सफलताका साथ अघि बढ्न सक्छ । हामीले आफ्नो प्रेरणाको स्रोत पहिचान गर्दा निकै ध्यान पुऱ्याउनु पर्दछ जसले हाम्रो यात्रालाई सरलता पूर्वक अगाडि बढाउन सहयोग पुऱ्याउँछ त्यसैको माध्यमबाट आफ्नो यात्रालाई अघि बढाउँदै लैजानु पर्छ भन्ने उद्देश्य रहेको छ ।

यस निबन्धमा सरल सरस र जनजिब्रो अनुकूलको भाषाको प्रयोग गरिएको छ । तत्सम तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा हामीले जीवनमा आफ्नो प्रेरणाको स्रोतलाई चिन्न सक्नु पर्छ जसले हाम्रो भविष्यलाई सुनिश्चित बनाउन सहयोग गरोस् भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.२.१० इतिहास

यो निबन्ध २०३९ सालको **रैबारे** पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो भने दोस्रो पटक सङ्ग्रहभित्र सङ्ग्रहीत भइ २०४९ सालमा प्रकाशित भएको छ । यो चार पृष्ठमा विस्तारित र आठ अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । एक पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धमा आत्मपरक वर्णन भएको प्रथम पृष्ठ दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । यो निबन्धको आकार मझौला खालको रहेको छ ।

यस निबन्धमा कुनै पनि किसिमको अन्याय र अत्याचारको विरोध गर्न कुनै पनि दमन र दासत्वका विरुद्ध उभिन र निस्वार्थ जनशक्तिको पाइन देखाइदिन हाम्रो

विगत हाम्रो इतिहास सबभन्दा विश्वस्त साथी हुन्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा रहेको छ । इतिहास कसैको पनि एकै दिनमा बन्दैन इतिहास बनाउनको लागि ठूलो साधनाको आवश्यकता पर्दछ जो अरुको प्रेरणाको लागि हुने गर्दछ । एक जमानामा बलजपती गर्ने, मूढबल देखाउने सोभासाभा गरिब जनतालाई शोषण गर्ने व्यक्तिहरूको पूजा हुन्थ्यो तिनीहरूकै इतिहास लेखिन्थ्यो भने समयले कोल्टे फेरे पछि अहिले देशका लागि निस्वार्थ जीउ ज्यान अर्पने वीर विरङ्गनाहरूको पनि नयाँ इतिहास लेखिन थाल्यो जसले पैसाको थैलो समात्न जनतालाई लात मार्छन् तिनको जताततै थुकथुकी हुन्छ भने जो त्यसो नगरी आफ्नो सम्पूर्ण सीप र कौशल देश र जनताको सेवामा निस्वार्थ भावले अर्पण गर्छन् तिनको इतिहास सुनका अक्षरले लेखिन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । जब देशमा निराशा छाउँछ, अन्याय अत्याचारले सीमा नाघ्छ, भ्रम र शङ्काले पासो थाप्छ, त्यस बेला हामीलाई इतिहासको खाँचो पर्छ । हामीलाई हाम्रो पुर्खाको इतिहासले एउटा अज्ञात प्रेरणा दिन्छ, नौलो जोश र उत्साहले रगत ताल्छ, आत्मसमर्पण र त्यागको भावना उत्पन्न हुन्छ जसले गर्दा स्वयं हाम्रो जीवनले एउटा इतिहास बनाउने मौका पाउँछ भन्ने मूल विषयवस्तु यसमा रहेको छ ।

हामीले हाम्रा पुर्खाको इतिहासलाई देशमा आइपर्ने अन्याय, अत्याचारका विरुद्ध लड्नको लागि शक्ति बनाएर अधि बढ्नु पर्छ । मूढबलका भरमा सोभा निमुखा गरिब जनतालाई अठ्याएर आफू माथि पुग्ने सत्ताधारीको इतिहास हैन कि जनताको सेवामा निस्वार्थ भावले लाग्ने चाहे त्यो तल्लो स्तरको भरियानै किन नहोस् त्यस्ताको इतिहास लेख्नु पर्दछ जसले गर्दा हामीलाई एउटा अज्ञात प्रेरणा प्राप्त हुन्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

यस निबन्धको भाषा सरल खालको रहेको छ । यसमा 'ढुङ्गालाई आड माटाको, माटोलाई बल ढुङ्गाको' भन्ने उखानको प्रयोग गरिएको छ । तत्सम तद्भव शब्दहरूको प्रयोग निबन्धमा गरिएको छ । यस निबन्धमा कहीं कहीं कवितात्मक भाषाको पनि प्रयोग भएको छ । कुनै पनि किसिमको अन्याय र अत्याचारको विरोध गर्न हाम्रो इतिहास सबभन्दा ठूलो साथी हुन्छ भन्ने कुरालाई यस निबन्धमा देखाउन खोजिएको छ ।

#### ४.१.२.११ एउटा महत्त्वपूर्ण कुरा

प्रस्तुत निबन्ध केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो । यो तीन पृष्ठ र तीन अनुच्छेदमा संरचित छ । यसमा प्रथम पुरुषीय दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । तीन पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले लघु आयाम प्राप्त गरेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले कस्तो कुरालाई महत्त्वपूर्ण हो भनेर मान्ने भन्ने प्रश्नलाई अघि सारेका छन् । हाम्रो जीवनमा सबैक्षण सबै कार्य सबै भेटघाट र परिचयहरू उस्तै महत्त्वका हुँदैनन् त्यसैले हामीले महत्त्वपूर्ण कुराहरूलाई मात्र छानेर आत्मसाथ गर्नु पर्छ भन्ने राय निबन्धकारको रहेको छ । केलाई महत्त्वपूर्ण मान्ने भन्नेमा अलमल्ल परेका निबन्धकारले दालभात डुकु महत्त्वपूर्ण कि वेमतलवको कुरा भनेर प्रश्न गरेका छन् । छाप्रो र ओढोपैरोलाई महत्त्वपूर्ण ठान्ने हो भने ती पनि सबै मानिसका आ-आफ्नै स्तर अनुसारका रहेका छन् ती खासै गनिने कुरा पनि होइनन् भन्दै लाएको खाएको कुरालाई पनि आधार बनाएर महत्त्व दिन नसकिने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । व्यक्तिगत स्वार्थमा लिप्त भएका मानिसहरूको इतिहास लेखिदैन र लेखियो भने पनि पछि गएर त्यो महत्त्वपूर्ण हुँदैन । जसले खानु र लाउनुलाई कर्तव्यभन्दा ठूलो ठान्दैन र आफ्नो कर्तव्यलाई पूरा गर्न सधैं प्रयत्नशील रहन्छन् ती मात्र महत्त्वका विषय हुन् भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । हाम्रै इतिहास हेर्ने हो भने पनि त्यहाँ धेरै महत्त्वपूर्ण कथाहरू रहेका छन् भने धिक्कारका कथाहरू पनि रहेका छन् । हामीहरूले हाम्रा इतिहासका गौरवपूर्ण पानाहरूलाई महत्त्वका साथ हेर्नु पर्ने कुरालाई निबन्धकारले मूल विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

हामीले जीवनमा वेमतलवका मामुली कुराहरूलाई महत्त्वका साथ लिनु हुँदैन । हाम्रो इतिहासको गौरवपूर्ण पानाहरूलाई पढेर आफू पनि त्यस्तै महत्त्वपूर्ण हुने तर्फ प्रयत्नशील हुनु पर्छ । व्यक्तिगत स्वार्थमा लाग्ने मानिसले कहिल्यै पनि देश र जनताको लागि कार्य गर्न सक्दैन त्यसैले त्यस्ता स्वार्थी व्यक्तिहरूलाई हाम्रो समाजले कहिल्यै महत्त्वका साथ हेर्दैन र हाम्रो लागि महत्त्वपूर्ण कुरा हाम्रै इतिहासका गौरवपूर्ण कथाहरू हुन् भन्ने मूल उद्देश्य यसमा रहेको छ ।

यस निबन्धमा सरल, सहज र स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा 'आड

अनुसारको लुगा' भन्ने उखान टुक्काको पनि प्रयोग गरिएको छ । हामीले हाम्रो इतिहासको महत्त्वपूर्ण कुराहरूलाई आत्मसाथ गर्नु पर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

### ४.१.३ राष्ट्रियतासम्बन्धी निबन्धहरू

भट्टका राष्ट्रियता सम्बन्धी निबन्धहरू राष्ट्रिय भावनाले ओतप्रोत रहेका छन् । आफ्नो राष्ट्रप्रतिको अगाध मायालाई उनले यी निबन्धमार्फत व्यक्त गरेका छन् । भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र राष्ट्रियता सम्बन्धी निबन्धहरू तीनवटा रहेका छन् जुन निम्नानुसार छन् :

#### ४.१.३.१ देशको माया निबन्ध

यो निबन्ध केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र पहिलो पटक प्रकाशित निबन्ध हो । यो निबन्ध छ, पृष्ठ र सात अनुच्छेदमा संरचित छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यो निबन्ध प्रथम पुरुषीय कथन ढाँचामा भनिएको छ । यो निबन्ध मझौला आकारको रहेको छ ।

राष्ट्रिय भावनामा आधारित यस निबन्धमा निबन्धकारले राष्ट्रलाई अष्टयारो स्थितिमा धकेल्ने अराजक तत्त्वहरूको विरुद्धमा हामीले आवाज उठाउनु पर्छ भन्ने सन्देश दिएका छन् । यसको मुख्य विषयवस्तुका रूपमा राज्य केवल माटो र पानीको साँध नभएर जनसङ्ख्या स्वतन्त्रता र त्यसलाई कायम राख्न सक्ने जनताको शक्ति र साधना पनि हो त्यस्तै देशप्रेम भनेको खालि अमुक माटो पानीको मायामात्र नभई त्यसमा बसेका यावत् मानिसहरूको संयुक्त ममता र त्यसलाई जोगाई राख्न, बढाउन रक्षा गर्न चाहिने आवश्यक अरू भौतिक मानिसक र भावनात्मक शक्तिको संयुक्त संचालन पनि हो । देशप्रेमको सच्चा भावना भएको मान्छेले नेपालको चार किल्ला, त्यसभित्रका पहाड, जङ्गल नदीनाला र समथर जग्गा, बारी, खेत तिनमा मेहनत गर्ने परिश्रमी मानिसहरू र तिनको संयुक्त रूपमा खडा हुने शक्तिलाई माया गर्न सक्नुपर्छ । राष्ट्रप्रेमको नाम लिएर राष्ट्रका टुक्रा-टुक्रा पाउँदा पराइको हातमा सुम्पनेहरूलाई यसमा व्यङ्ग्य प्रहार गरिएको छ । एउटा शक्तिशाली शासकमा भन्दा सामान्य गरिब वर्गक जनताहरूमा राष्ट्रप्रेमको भावना

बढी रहेको पाइन्छ । सामन्त युगका सामन्तीहरू अर्को देशमा हमला गर्दा तिनका विरुद्ध लड्नेहरू बढी मात्रामा किसानहरूनै थिए भन्ने कुरा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । नेपालको सन्दर्भमा हेर्दा पृथ्वीनारायण शाह, भीमसेन थापा, अमरसिंह थापा आदि सामन्त भए पनि तिनीहरू शत्रुको विरुद्धमा लडेका थिए त्यो नै उनीहरूको राष्ट्रियताको प्रमुख पक्ष भयो । तिनीहरूको साथमा पनि सर्वसाधारण मानिसहरू बढी थिए । यसकारण समग्रमा भन्नुपर्दा राष्ट्रप्रति वफादारी राख्नु पर्छ भन्ने सन्देश नै यसको मुख्य विषयवस्तुका रूपमा खडा भएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण राष्ट्रवादी भावना भएका मानिसहरूलाई राष्ट्रियताको पक्षमा आवाज उठाउन आग्रह गर्नु हो । हामीले राष्ट्रलाई अफ्यारो भासमा भासिनबाट बचाउनु पर्छ आत्मरक्षाका लागि सङ्घर्ष गर्न सम्पूर्ण किसान र श्रमजीवीहरूबाट हामीले पनि केही कुरा सिक्नु आवश्यक छ । साम्राज्यवाद र सामन्तवादका विरुद्धमा चर्को नारा लगाउन सबै नेपालीहरूलाई आवाहन गर्नु नै यसको मूल उद्देश्य हो ।

यसमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग भएको छ । देशप्रेमको बारेमा सम्पूर्ण नेपालीहरूलाई केही कुरा जानकारी गराउनको लागि बौद्धिक पाठकदेखि लिएर सामान्य पाठकसम्मले बुझ्ने भाषाको प्रयोग गर्ने आनन्ददेव भट्टले यसमा आगन्तुक शब्दका साथै तद्भव र झर्ना नेपाली शब्दको प्रयोग गरेका छन् । यसमा प्रयोग गरिएको भाषाशैली विचलनशील र आलङ्कारिक पनि रहेको छ । व्यक्तिले मुखले मात्र देशलाई माया गर्छु भनेर हुँदैन व्यवहारले पनि देशलाई माया गर्नु पर्छ भन्ने अभिव्यक्ति यस निबन्धमा पाइन्छ ।

#### ४.१.३.२ राष्ट्र वन्दना

यो निबन्ध २०४२ फागुन-चैतको **राष्ट्र ज्योति** भन्ने पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो । यसलाई भट्टले पुनः **केही आत्मपरक निबन्धहरू** निबन्धसङ्ग्रहभित्र सङ्कलन गरी प्रकाशित गरेका छन् । यो निबन्ध छ पृष्ठ र छ अनुच्छेदमा संरचित छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धमा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा लेखकले आफू राष्ट्रभक्ति र राष्ट्रसेवामा तल्लिन हुन नसकेकाले राष्ट्रसँग क्षमा मागेको कुरालाई मूल विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरेका

छन् । आफूले राष्ट्रको सौन्दर्य र व्यापकताको गहिरो अनुभूतिमा कुनै वाणी ओराल्न नसकेको र प्रियतमलाई भैं देशलाई माया गरेको भए आफ्नो विश्वास र लगनशीलताको फूलहरू चढाउन सकेको भए आफूलाई आत्मसन्तोष र आनन्द हुने थियो भन्ने भाव यसमा रहेको छ । आफ्ना बाबुआमा दाजुभाइ दिदीबहिनी र साथीसंगीसँग घन्टौ घन्टा गफ गरेर बिताउनु भन्दा देशप्रतिको भक्ति र सेवामा तल्लिन हुनु पथरौ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारको रहेको छ । राष्ट्रको सम्मानमा आफूले केही लेखेको केही बोलेको र पुस्तक पत्रिकामा पढे पनि राष्ट्रप्रति श्रद्धा भाव नभईकन गरिएका राष्ट्रियता सम्बन्धी कार्यमा कुनै ओज हुँदैन भन्दै आफ्नो देशप्रतिको आरधना विडम्बना मात्र भएकोमा लेखकले खेद प्रकट गरेका छन् । आफूले विभिन्न समारोहहरूमा देशको बढाइ गरे पनि देशमा खान नपाएका, लाउन नपाएका, सँधै शोषण र दमनमा परी भित्रभित्रै रोइरहेकाहरूप्रति मनसम्म नदुखाएको र देशको पुकारलाई कहिल्यै आफ्नो अन्तरछेउसम्म पनि राख्न नसकेको धारणा निबन्धकारको छ । आफूले राष्ट्रका निमित्त समर्पित हुन नसकेको भूल स्वीकार गर्दै देशसँग आफू सप्रिनको लागि एकपल्ट अभि माँका मागेका छन् र आफ्नो कर्तव्यको यात्रा थाल्न अवश्य विउँभनेछु भन्ने भाव यस निबन्धमा रहेको छ ।

हामीले क्षणिक मोजमज्जामा लागेर आफ्नो राष्ट्रलाई माया गर्न भुल्नु हुँदैन । शोषण र दमनमा परी सधै रोइरहेका गरिबहरूलाई सहयोग गर्नु पर्छ । राष्ट्रवन्दना केवल मुखले मात्र गाएर हुँदैन राष्ट्रमा व्याप्त विकृतिहरूलाई हटाएर कामले राष्ट्रप्रतिको बन्दना प्रकट गर्न सक्नु पर्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

सरल, शुद्ध र सुमधुर भाषाशैलीमा लिखित प्रस्तुत निबन्ध नवीनतम शिल्पमा संरचित छ । तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा विभिन्न चिन्हहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । यस निबन्धमा प्रश्नात्मक कथन ढाँचा समेत भेटिन्छ । हामीले हृदयभित्र देशभक्तिको भावनालाई सदैव जागृत गराइराख्नु पर्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धको रहेको छ ।

### ४.१.३.३ देश निर्माण

यो निबन्ध २०४१ सालमा मुस्कान पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो भने केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्गृहीत भई २०४९ सालमा

दोस्रो पटक प्रकाशित भएको छ । यो चार पृष्ठमा विस्तारित र सात अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । दुई पदीय शीर्षकको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको छ ।

देश निर्माण गर्नु सबै युग, सबै व्यक्तिको साभा आवश्यकता हो । रेडियो, पत्रपत्रिका, यातायात जस्ता कुराहरूले देश निर्माण बारे सहर मात्र होइन गाउँ पहाड, मदेश र तराइका निक्कै मानिसलाई थाहा भैसकेको छ । निर्माणमा सन्तोष त यसै हुने कुरा होइन विभिन्न विकसित देशहरूलाई पनि यसमा सन्तोष भएको हुँदैन भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । हाम्रो सामु मूल समस्या बनेको विकासको मूल फुटाउन वा देश निर्माण गर्नको लागि कस्तो काय गर्दा बढी प्रभावकारी हुन्छ, भन्ने रहेको छ, त्यसैले लेखकले देश निर्माणको तरिकामा तीन तरिकालाई अपनाउन सकिने जनाएका छन् । पहिलो काम अनुसारको दाम, दोस्रो कोर्दा बजाई काम र तेस्रो काम अनुसार माम । काम अनुसारको दाम दिने तरिका अनुसार समाजलाई सञ्चालन गर्दा पैसा र काम जान्ने मान्छेको खाँचो पर्ने र यी दुवै कुराको हाम्रो मुलुकमा कमी भएको हुनाले हामीले विदेशी पूँजी र जनशक्तिमा भर गर्नुपर्ने हुन्छ र हाम्रो राष्ट्रिय व्यक्तित्व र स्वाभिमानको हत्या हुन्छ । त्यस्तै दोस्रो तरिका कोर्दा बजाई काम गराउँदा मालिकले जनताको प्रेम र विश्वास कमाउन सक्दैन त्यसैले तिनका हातमा कोर्दा सुम्पिएर देशको विकास गर्छु भन्नु उपर्युक्त मानिदैन । तेस्रो तरिका काम अनुसार माम दिने तरिकामा मानिसलाई काम र मामसित सम्बन्धित गराई बाँकी सम्पूर्ण कार्य देश र देशवासीको विश्वास भलाइका निमित्त लगाउने हुनाले उपरोक्त तीन तरिकामध्ये हाम्रो देशलाई तेस्रो तरिका उपर्युक्त हुने कुरालाई मूल विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

यस निबन्धमा हाम्रो जस्तो अविकसित कम पूँजी भएको मुलुकमा काम अनुसार मामको नीतिलाई अबलम्बन गर्नु पर्छ जसमा कोर्दा भौतिकवादी अहङ्कार, लालसा लोभ र संकुचितता हुँदैन र हामी देशको घाँटी हेरी विकास र निर्माणको कार्य गर्न सक्छौ । राष्ट्रमा विकास र निर्माणको कार्य गर्न प्रत्येक गाउँ र सहरमा निर्माणका क्षेत्रहरूमा संलग्न व्यक्तिहरूलाई स्पष्ट जिम्मेवारी दिनुपर्ने र सो अनुसार काम भए नभएको मूल्याङ्कन गरेमा काम गर्ने कूशल व्यक्तिहरूले मौका पाउँछन् भन्ने उद्देश्यका साथ यो निबन्ध देखापरेको छ ।

सामान्य पाठकले पनि बुझ्न सक्ने सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा तद्भव, तत्सम र केही आगन्तुक शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । यस निबन्धमा विभिन्न चिन्हहरूको प्रयोग गरिएको छ । विकास र निर्माणको प्रत्यक्ष नतिजाको आधारमा कार्यकर्ता र बुद्धिजीवीको मूल्याङ्कन गरियो भने मात्र देश निर्माण गर्न सकिन्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.१.४ व्यङ्ग्यात्मक निबन्धहरू

यस्ता निबन्धहरूमा जीवन र जगत्मा भएका सम्पूर्ण विकृति र विसङ्गतिका पक्षहरूका कमी कमजोरी खोतल्ने काम गरिन्छ । सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिकका साथै विभिन्न असमानता-भिन्नताले जन्माएका विकृत पक्षलाई व्यङ्ग्य गरिएको हुन्छ । भट्टका केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र दुई वटा व्यङ्ग्यात्मक निबन्धहरू रहेका छन् जुन यसप्रकार छन् :

##### ४.१.४.१ गोमन सर्प किन दूलोभिन्न बस्छ ?

प्रस्तुत निबन्ध आनन्ददेव भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहभित्र सङ्गृहीत व्यङ्ग्यप्रधान निबन्ध हो । यो चारपृष्ठ लामो र आठ अनुच्छेदमा संरचित छ । प्रश्नात्मक खालको पाँच पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मभौला आकार पाएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा व्यङ्ग्यात्मक विषयवस्तु रहेको छ । यसको मुख्य विषयवस्तु सर्पहरू संहारकारी भएर दूलोभिन्न बसे जस्तै अरु संहारकारी व्यक्ति, प्राणीहरू पनि सबै आ-आफ्नो प्रकारको दूलोमा पस्छन् भन्ने रहेको छ । दूलो पस्नुको कारण असत्य, अज्ञान, धोकेजाल, शोषण तथा अपराध हो त्यसैले संसारका इतिहासमा भएका षड्यन्त्रहरू पनि सबै पर्दा पछाडिनै भए भन्ने व्यङ्ग्य यस निबन्धमा रहेको छ । गोमन सर्पहरू विषालु हुन्छन् तिनीहरूलाई बाटामा हिँड्ने बटुवा केटाकेटी देखि लिएर मानवत्तर प्राणी मयूर, बिरालो र न्याउरीमुसाको डर हुन्छ त्यसकारण सर्पहरू आत्मसुरक्षाको निम्ति दूलोमा लुकेर बस्छन् र आफ्नो आहारको लागि मात्र बाहिर निस्कन्छन् । उसमा दयामायाको भावना केही हुँदैन । त्यस्तै यो देशका नेताहरू पनि सधैं जनताका माँझमा आएर हातेमालो गर्दै

उनीहरूलाई अँगालोमा बाध्छन् । आफू पटक पटक गल्ती गर्छन् । जनताको माझमा आफ्नो गल्ती सच्याउने बाचा बोल्छन् तर त्यो गल्ती कहिल्यै सच्याउँदैनन् भन्ने भाव नै यसको मूल विषयवस्तुका रूपमा देखापरेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको मूल उद्देश्य जनतालाई धोका दिनेहरू सधैँ दुलोभिन्न लुकेर बस्छन् तर तिनलाई हामी सपेराले सर्पलाई अनेक प्रकारको जादु देखाई दुलोबाट बाहिर निकालेर नचाए जस्तै गरी नचाउनुपर्छ भन्ने रहेको छ । यदि हामीले सर्परूपी नेता र समाजमा मानसम्मान खोज्ने ठूलाबडा भनाउँदाहरूलाई बचाएर राख्यौ भने तिनीहरू एक न एक चोटी हाम्रो लागि घातक बन्न पुग्छन् । यसकारण हामीले विशालु गोमन सर्परूपी नेताहरूबाट सचेत भई बस्नुपर्छ र तिनीहरूले आत्मरक्षाको लागि पस्ने दुलाहरू सदाका लागि बन्द गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश दिनु नै यसको मुख्य उद्देश्य हो ।

प्रस्तुत निबन्धमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिए पनि यसको पूरै विषयवस्तु, व्यङ्ग्यात्मक पारामा अगाडि बढेका पाइन्छ । यसमा प्रयोग गरिएका विभिन्न स्रोतका भाषाबाट आएका आगन्तुक शब्द र भर्रा नेपाली शब्दका साथै कतिपय स्थानमा प्रयुक्त तद्भव शब्दले निबन्धमा रोचकता थपेको छ । यसमा 'लाटो देशमा गाँडो तन्देरी', 'जो होचो उसको मुखमा घोचो' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.१.४.२ आलु

प्रस्तुत निबन्ध पहिलो पटक वि.सं. २०३६ आश्विन-कार्तिकको मदानी पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो र यसलाई पुनः केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र समावेश गरी प्रकाशित गरेको देखिन्छ । यो चार पृष्ठमा विस्तारित तथा चार अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । यसमा आत्मपरक वर्णन भएको प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिएको छ । एकपदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले लघु आकार प्राप्त गरेको छ ।

आलुलाई निबन्धको मूल विषयवस्तु बनाइएको प्रस्तुत निबन्धमा हाम्रो देश, समाजमा रहेको सामन्ती प्रवृत्ति माथि व्यङ्ग्य गरिएको छ । समाजमा व्याप्त बाहिर बाहिर ठिक्क र भित्र भित्र मरोस् भन्ने प्रवृत्तिको खुलासा गरिएको छ । जसरी महाशक्ति राष्ट्रहरूले संसारका अरू शक्तिहीन राष्ट्रहरूप्रति हृदयदेखि नै समानताको

भावना देखाउन मन गर्दै नन् तर बाहिर बाहिर भने बडो सहानुभूति प्रकट गर्ने प्रयत्न गर्छन् त्यसप्रति निबन्धमा व्यङ्ग्य प्रहार गरिएको छ । यस निबन्धमा पनि निबन्धकारले आलु प्रति बाहिरी सहानुभूति प्रकट गर्न खोजेका छन् तर आलुलाई मन देखिनै स्वीकार गरेका छैनन् । बाहिर बाहिर हजुर हजुर गर्ने छद्मभेषी प्रकृतिले ग्रसित हाम्रो समाज दाउ परेको बेला बुढी औला देखाउन र ओठ लेब्राउन पछि पर्दैन । हिजोको राक्षसी प्रवृत्ति आजको वर्तमानमा पनि आफ्नो रजाइँ चलाउने इच्छा राख्छ । यस्तो सामन्ती मानसिकताबाट निर्दिष्ट समाजमा देखाइने सहानुभूति बाहिरी ढवाङ् मात्रै हो भन्ने विषयवस्तुलाई मूल रूपमा यस निबन्धमा देखाइएको छ ।

कसैप्रति समानताको भाव भित्रैदेखि प्रकट गर्नको लागि पहिले व्यक्ति स्वयम् नै सुधिएको, उजेलिएको अनि गतिशील हुनु पर्दछ । सबैको एक न एक दिन पालो आउँछ जमानाको हेरफेरले उसको अवश्य उदय हुन्छ । आफ्नो कमीकमजोरीलाई व्यक्तिले स्वीकारेर हिजोको राक्षसी प्रवृत्तिबाट मुक्त भएर सबैलाई समानताको भाव देखाउन सक्नु पर्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको भाषा सरल खालको रहेको छ । बीच बीचमा 'काँडाले नघोची कति थोपा आँसु रसाउँछ भन्ने थाहा हुँदैन' भन्ने जस्ता कवितात्मक भाषाको प्रयोग गरिएको छ । केही आगन्तुक र भर्रा नेपाली शब्दहरूको प्रयोगले भाषामा रोचकता थपेको छ । छोटो सरल वाक्य र अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धमा भाषिक माधुर्यता भेटिन्छ ।

#### ४.१.५ प्रकृति चित्रण सम्बन्धी निबन्धहरू

निबन्धकार भट्टले प्रकृतिलाई नै निबन्धको मूल विषय बनाएर निबन्धको रचना गरेका छन् । उनको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र प्रकृति चित्रण सम्बन्धी निबन्धहरू दुईवटा रहेका छन् जुन निम्न लिखित छन् :

##### ४.१.५.१ सिमेन्ट

यो निबन्ध प्रथम पटक २०४१ मार्गको गरिमा पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो । भट्टले दोस्रो पटक यसलाई केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र समावेश गरी प्रकाशित गरेका छन् । यो सात पृष्ठमा विस्तारित र पाँच अनुच्छेदमा संरचित

निबन्ध हो । एक पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मभौला आकार ग्रहण गरेको छ ।

यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु सिमेन्ट रहेता पनि यसमा प्रकृतिको चित्रण उत्कृष्ट तरिकाले गरिएको छ । काठमाडौँ उपत्यकाको दक्षिण चोभार भन्ने ठाउँमा बन्न लागेको हिमालय सिमेन्ट कारखानाको प्रसङ्ग ल्याएर लेखकले ढुङ्गा र सिमेन्ट मध्ये कुनले घर बनाउने भन्नु भन्दा बरू सिमेन्टको भाउ दोब्बर महङ्गो भएर कालोबजारको ढोकाबाट निस्की सर्वसाधारणको अगाडि आउँदा तेब्बर हुने सम्भावना भएकोमा चिन्ता व्यक्त गरेका छन् । मङ्सिर महिनामा आफू र दाजु काठमाडौँ टौदह घुम्न जाँदा त्यहाँको प्राकृतिक वर्णन निबन्धकारले यस निबन्धमा गरेका छन् । बाटोमा कीर्तिपुरको त्रिभुवन विश्वविद्यालय र बागवानीको मनोरम दृश्यका साथै हरियो वन जङ्गलले आफूमात्रै होइन त्यहाँ पुग्ने हरेकलाई मोहित पार्ने कुरा बताएका छन् । तीनै सहरको भव्यता र त्यस माथि आकाशको किनारमा बसेका हिमालयका उज्याला शिखरहरूले लेखकलाई मोहित पारेका छन् । बाटोमा पर्ने चोभारको गल्छी जसको मुखैमा गणेशस्थान छ त्यसभित्र कताकता पुगिने सुरुङ्ग भएकाले सर्वसाधारणका निम्ति एउटा रहस्य र समर्पणको स्रोत बनिरहेको छ । जब निबन्धकार टौदह पुग्छन् त्यहाँको वातावरणले उनलाई निकै मोहित तुल्याएको देखिन्छ । टौदहमा खेल्ने पानीहासहरूको चुलबुलताले उत्सुक भएका लेखकले गोर्खाका राजा पृथ्वीनारायण पनि नेपालभरका राजा भए पछि यहाँ आई जलविहार गरे होलान् र उनका सिपाही र रैतीले पनि यस दहको आनन्द लिए होलान् भनि जिज्ञासा व्यक्त गरेका छन् ।

हाम्रो देशका त्यत्रा दरबार देवल र धरहराहरू बिना सिमेन्ट बने भने सिमेन्टको भाउ आकाशिएर तेब्बर हुने सम्भावनामा हामीले पनि हाम्रो सानोतिनो वास बनाउनको लागि सिमेन्टलाई प्राथमिकता दिन नहुने कुरालाई उद्देश्यका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

सरल, सुमधुर भाषाशैलीमा लिखित प्रस्तुत निबन्ध नवीनतम शिल्पमा संरचित छ । तत्सम, तद्भव शब्दहरूका साथै ठाउँठाउँमा आगन्तुक शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । निबन्धमा 'दैव दाहिना होऊन', 'छोरो पाउनु कहाँ छ कहाँ न्वारन गर्न हतार', 'हतपतको काम लतपत', 'पण्डितजीका हातबाट सुचिकारी' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । आफ्नै खुट्टामा उभिएर देश र

देशवासीका निमित्त तन, मन, धन दिने हो भने धेरै ठूला ठूला कामहरू गर्न सकिन्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धको रहेको छ ।

#### ४.१.५.२ भरी

यो निबन्ध निबन्धकार भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्कलित निबन्ध हो । तीन पृष्ठ र छ अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्ध लघु आयामको रहेको छ । निबन्धकारको आत्मपरक वर्णन रहेको यस निबन्धको शीर्षक एक पदीय रहेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले भरीलाई मुख्य विषयवस्तु बनाएका छन् । साउन महिनामा भरीले आफ्नो सौन्दर्य र आकर्षणलाई देखाउँछ, यो सर्वमान्य सत्य हो । भरी आफ्नो तालमा भन्दा हाम्रो अनुकूल वातावरणमा यस धर्तीमा अवतरण गरिदिए हुन्थ्यो भन्ने कामना गर्छौं तर भरीको आउने जाने आफ्नै नियम छ यसलाई मानिसले कुनै फेरवदल गर्न सक्दैन भन्ने प्रस्तुति निबन्धकारले दिएका छन् । भरी वर्षाकालमा बर्सिन्छ प्रकृतिले आदेश दिएन भने ऊ बर्सिदैन पनि । भरी मान्छेबाट स्वतन्त्र छ । ऊ धरतीमा बस्ने मान्छेले गरेको अनुरोधबाट आउने र नआउने हुँदैन भन्ने भाव यस निबन्धमा रहेको छ । जहाँ जहाँ भरी जान्छ त्यहाँ त्यहाँ मानिसले खेत र बारी बगैँचामा बीजहरू छरिदिन्छन् र त्यहीबाट उसले नयाँ नयाँ मुना र टुसा उमान्नु पर्छ । आजको मान्छे बुद्धिमान भैसकेको छ उसले प्रकृतिलाई पीठ फर्काएर होइन उसको नियमलाई बुझेर बसमा पारेको छ । मूढेवलको भरमा प्रकृति कसैको बसमा पर्दैन भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा रहेको छ । भरीले आफ्नो अन्तिम शक्तिसम्म आकाश र पृथ्वीका बीच निरन्तर यात्रा गरिरहन्छ । जो मान्छे ज्ञानी छन् बुझ्की छन् उनीहरूले भरीको नियमलाई बुझेर त्यसमा प्रेमले नुहाउछन् भने जो अविवेकी छन् तिनले भरीको नियमलाई आफ्नो अनुकूल पार्न नसक्नाले मूर्खतावश सराफ्छन् भन्ने मूल विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ ।

भरी एउटा प्राकृतिक कुरा हो । हामीले प्रकृतिको नियमलाई बुझेर कार्य गर्दा त्यो हाम्रो लागि वरदान सावित हुन्छ । मान्छेले प्रकृतिमा जति जति ज्ञान र त्यस अनुकूल व्यवहारको पासा फ्याक्दै गयो उति उति नै उसले आफ्नो सफलता हासिल गर्दछ । यदी प्रकृतिको नियमलाई बुझिएन भने हामीले त्यही भरीलाई

सरापुन पछि भने भरीलाई हाम्रो अनुकूल बनाउन सकेमा त्यसले हाम्रो हृदयमा शीतलता र कोमलता प्रदान गर्दछ भन्ने मूल उद्देश्य यसमा रहेको छ ।

निबन्धकार भट्टले यस निबन्धमा बोलचालमा प्रयुक्त सरल शब्दावलीको छनोट गरी सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । तत्सम तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । हामीले प्रकृतिको नियमलाई आत्मसाथ गरी त्यसै अनुसार चलन सक्नु पर्छ भन्ने कुरालाई देखाउन खोजिएको छ ।

#### ४.१.६ प्रेम विषयक निबन्धहरू

प्रेमलाई मूल विषय बनाएर लेखिएका निबन्धहरू प्रेम विषयक निबन्धहरू हुन् । भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र दुईवटा प्रेम विषयक निबन्धहरू छन् जुन निम्न रहेका छन् :

##### ४.१.६.१ बासनाको भेल

यो निबन्ध सर्वप्रथम वि.सं. २०३९ फागुनमा मधुपर्क पत्रिकामा प्रकाशित र पछि केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र सङ्कलित निबन्ध हो । चार पृष्ठ र पाँच अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धमा प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले लघु आयाम पाएको छ ।

निबन्धकारले यस निबन्धमा मनभित्र बग्ने बासनाको भेललाई मुख्य विषयवस्तु बनाएका छन् । मनभित्रको बासनाको भेल अजस्र मुहान बनेर बौलाउँछ, जसले हामीलाई शान्त धीर बन्न बाधा हालिरहन्छ, यस्तो भेलले जो सुकैलाई पनि खल्बल्याउन सक्छ भन्ने भाव निबन्धमा रहेको छ । त्यस्तै यो बासनाको भेलले निबन्धकारलाई पनि हुत्याएको छ यो भेलले च्याप्प समाउनासाथ आफू सुकेको मूढोभैँ उसको इसारामा बगेको, उसको दास हुन पुगेको र त्यो वेग आफ्नो मालिक भै मनलाग्दो खेलहरू खेलाउने कुरालाई निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । हाम्रा कैयन् साहित्यकारहरूले कतै यही बाढीको वेग थाम्न नसकेर हुनमुनिदै फोहोर फोहोर कल्पनाको शब्दचित्र नेपालीहरूलाई प्रदर्शन गर्न थालेको त होइनन् ? भनेर त्यस्ता साहित्यकारहरूप्रति शङ्का गरेका छन् । मूढेबल र नोटका गड्डी देखाइ आफ्नो मान प्रतिष्ठा कायम गर्न सकिने राणाकालीन समयका वीर, जुद्धजस्ता

राणाहरूको तिर्खामार्न कामको र वासनाको ठूलै आँधीबेरी र बाढी आउनुपथ्यो होला भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । वासनाको भेलले हाम्रो जीवनको बाटोलाई नै चिप्लाइदिन सक्छ भन्ने विषयवस्तुलाई निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

हामीले हाम्रो मन भित्रको वासनाको भेललाई अन्य बाँझा क्षेत्रहरूमा रसाउन सक्नु पर्छ । यो भेल थाम्न नसकेर हामी फोहोरी वृत्ति प्रति नलागि बरु यसलाई हामी हाम्रो जीवनको साथी मानेर अधि बढ्न सकेमा त्यसले हामीलाई कुनै हानी पुऱ्याउँदैन । त्यसैले हामीले वासनाको भेललाई अन्य राम्रा कार्यहरू गर्न लगाउनप्रति अग्रसर गराउनु पर्छ भन्ने उद्देश्य रहेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । तद्भव र केही आगन्तुकको शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । ठाउँठाउँमा 'मनको लड्डु घिउसित खाने', 'नजानेपछि आँगनै बाडगो' जस्ता उखान टुक्काहरूको प्रयोग गरिएको छ । हामीले आफूलाई वासनाको भेलले जता लैजान्छ त्यतै मात्र नगई त्यसमा केही नियन्त्रण गरेर हाम्रो काम गर्न प्रति अग्रसर हुनु पर्छ भन्ने अभिप्राय यसमा रहेको छ ।

#### ४.१.६.२ प्रेम

प्रस्तुत निबन्ध २०३३ साल मंसिर-पुषको विदेह पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको थियो भने पछि यसलाई पुनः केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र सङ्ग्रहीत गरी प्रकाशित गरिएको छ । यो निबन्ध आठ पृष्ठ र एघार अनुच्छेदमा संरचित छ । एक पदीय शीर्षक रहेको यो निबन्ध लामो आकारको रहेको छ ।

प्रेम एउटा मानवीय गुण हो, स्वभाव हो । प्रेम भन्ने बित्तिकै भट्ट हामी नर र नारीको सम्बन्धसित सम्बन्धित प्रेम हो भन्ने बुझ्छौं तर प्रेम यी दुईका बीचमा मात्र सीमित नभै व्यक्तिको हरेक सम्बन्ध र नातामा फलन फुलन थाल्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । नर र नारीको प्रेमको एउटा प्रमुख तत्त्व आकर्षण र प्रभाव हो । आमा बाबु र सन्तानको प्रेमलाई हेर्दा सन्तानप्रतिको प्रेम आमाबाबुको आफ्नै भित्री हृदयको प्रेम हो त्यहाँ कुनै विरोध उत्पन्न भएको हुँदैन । आमाले आफ्ना बालबच्चामा बाबुले भन्दा धेरै श्रम गरेकी हुन्छिन् त्यसैले हाम्रो समाजमा आमाले जति बाबुले सन्तानलाई प्रेम गर्दैनन् भने वच्चाहरू पनि आमालाई बढी प्रेम

गर्छन् त्यसकारण प्रेम पनि श्रमको उत्पादन हो भन्ने भाव यस निबन्धमा पाइन्छ । प्रेममा जसले जति इमानदारीपूर्वक श्रम गर्छ उसलाई उतिनै धेरै माया दिइन्छ । दाजुभाइ र दिदी बहिनीको प्रेमको पक्ष विपक्ष उनीहरूको सामाजिक सम्बन्ध र आफैँभित्रको अर्न्तद्वन्द्वको विकासमा भर पर्छ । हामीले समाजलाई प्रेम गर्नु पर्छ । समाजप्रतिको उत्तरदायित्वमा हामीले वृद्धाहरूप्रति सहानुभूति र प्रेम प्रकट गर्नुपर्छ । प्रेम ठूलो समझ, श्रम, त्याग, लगन सन्तुलित र वैज्ञानिक व्यवहारको श्रेष्ठतम परिणाम हो भन्ने विषयवस्तु यसमा रहेको छ ।

प्रेम देखावटी आकर्षण मात्र होइन यसलाई हेर्ने आँखा भिन्न हुन्छन् । प्रेमलाई हामीले वैज्ञानिक आँखाले हेर्नु पर्छ । निश्चार्थ प्रेम भएमा सबैसित गाढा प्रेम कायम हुनुका साथै त्यो प्रेम धेरै दिन समेत टिक्न सक्छ । त्यसैले साँचो मित्रतामा जति ठूलो प्रेम अरु कहीं पाइन्न । प्रेमलाई परिश्रम र खुबीबाट अलग राख्न सकिदैन भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ ।

यस निबन्धको भाषा सहज, स्वाभाविक, रागात्मक रहेको छ । तत्सम, तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा 'पानीले आफ्नो तह आफैँ खोज्छ', 'घाँटीको हाड निल्लु न फ्याक्नु' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । हामीले जोसुकै प्रति पनि निस्वार्थ रूपले प्रेम प्रकट गर्नुपर्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.१.७ शिक्षामूलक निबन्ध

निबन्धका आनन्ददेव भट्ट आफ्ना निबन्धहरू मार्फत् शिक्षा सम्बन्धी अबधारणाहरू राख्दै आएको पाइन्छ । जीवनमा शिक्षाको निकै महत्त्व हुन्छ भन्ने भट्टका शिक्षाका विषयमा लेखिएका निबन्धहरू त्यति धेरै छैनन् तापनि ती महत्त्वपूर्ण छन् । ती शिक्षासम्बन्धी निबन्ध निम्नलिखित छन् ।

##### ४.१.७.१ अध्ययन

प्रस्तुत निबन्ध सर्वप्रथम २०२८ साल पौषमा प्रकाशपुञ्ज मा प्रकाशित भएको हो र पछि केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र सङ्कलित निबन्ध हो । यो निबन्ध पाँच पृष्ठमा विस्तारित र सात अनुच्छेदमा संरचित छ । एक पदीय

शीर्षक रहेको यो निबन्ध मभौला आयामको रहेको छ । यो निबन्ध प्रथमपुरुषीय कथनढाँचामा भनिएको छ ।

अध्ययन भनेको कुनै ठूलो शिक्षालयमा गएर पढ्नु मात्र नभएर शिक्षालयमा भर्ना भएर वा बाहिरै बसी जसरी पढे पनि कुनै पत्रपत्रिका तथा पुस्तकहरू पढ्नु नै अध्ययन हो भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा पाइन्छ । प्राचीनकालमा गुरुकुलमा बसेर अध्ययन गर्ने परिपाटी थियो । ब्राह्मणलाई वेद पढ्ने अधिकार भए पनि शुद्र जातिलाई वेद पढ्ने अधिकार थिएन । त्यसपछि दरबारियाहरूको पालामा जनताहरू गरिब भएकाले समाजका धनी, कुलीन, दासप्रति र दरवारिया परिवारमा मात्र शिक्षा सीमित थियो भन्ने कुरा निबन्धमा देखाइएको छ । माक्स र एङ्गल्स जस्ताहरूले पनि कुनै न कुनै प्रकारको शिक्षा ग्रहण गरेका थिए । चार्ल्स डिकेन्स, वाल्ट्हीटम्यान, मार्कट्वेन जस्ता लेखकहरू मार्क्सवादी विचारधाराभन्दा फरक भए पनि उनले आफ्नो देशका श्रमजीवी जनताको पक्षमा वकालत गरेका थिए । यसको मूल विषयवस्तु शिक्षित व्यक्तिहरूले शिक्षाको सीमित अर्थ नलगाएर व्यापक रूपमा लगाउनु पर्छ अनि स्कूल कलेजकै पढाइलाई अध्ययन ठान्ने हो भने न त्यहाँ पूर्ण रूपमा केही जानिन्छ, न त केही सिक्न र सिकाउन सकिन्छ । साह्रै उन्नत शिक्षा पद्धति र व्यवस्था भएका मुलुकमा पनि शिक्षालयहरूमा अध्ययन कसरी गरिनु पर्छ भनी सिकाउने एकप्रकारको प्रशिक्षण केन्द्रहरू हुन्छन् तर अध्ययन त वास्तवमा इच्छुक व्यक्तिले पुस्तकालय धाएर र जीवनमा घोटिएर अनुभव भिकी गर्ने कुरा हो भन्ने विषयवस्तु प्रस्तुत गरिएको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको मुख्य उद्देश्य समाजमा वर्ग विभाजन नगरी सबैलाई समानरूपमा राखेर उपयुक्त शिक्षा दिनुपर्छ भन्ने हो । समाजमा रहेका सबै मानिसहरूलाई शिक्षा दिएपछि तिनीहरू शिक्षित हुन्छन् र देशको विकास सजिलै हुन सक्छ । सभ्यताले कुनै पनि राष्ट्रको विकासमा टेवा पुऱ्याउँछ तर त्यसमा प्रचलित रूढीवादीहरूलाई हटाउँदै सही र सभ्य समाजको निर्माण गर्नुपर्छ अनि मात्र हामीले प्रगति गर्न सक्छौ । आजको युगका मान्छे अल्छी बनेको कारण पाठ्यक्रममा आधारित पाठ्यपुस्तकको अध्ययन गर्न पनि अप्ठ्यारो मान्छन् तर अध्ययनलाई जारी राख्ने हो भने हामीले निरन्तर रूपमा नयाँ नयाँ कुराहरूको खोजी गर्नु पर्छ भन्नु नै यस निबन्धको मूल उद्देश्य हो ।

सरल भाषामा अध्ययनको परम्परालाई औल्याइएको यस निबन्धमा भर्रा नेपाली शब्दहरूका साथै तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोगले अझ माधुर्यता थपेको छ । लगातारको अध्ययनले मानिसको बौद्धिक क्षमतालाई बढाउँछ त्यसैले हामी अध्ययनमा क्रियाशिल हुनुपर्छ भन्ने सन्देश यसमा दिन खोजिएको हो ।

#### ४.१.८ नारी समस्या प्रधान निबन्ध

नारीको समस्यालाई मुख्य विषय बनाएर लेखिएका निबन्धहरू यस्ता निबन्धका कोटिमा पर्दछन् । भट्टले पनि नारी समस्यालाई आफ्ना निबन्धमा प्रस्तुत गरेका छन् । उनको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रह भित्र एउटा मात्र नारी समस्याप्रधान निबन्ध छ जुन यसप्रकार रहेको छ :

#### ४.१.८.१ लोने मान्छे स्वास्नी मान्छे

यो निबन्ध भट्टको केही आत्मपरक निबन्धहरू निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्कलन गरिएको निबन्ध हो । यो निबन्ध छ, पृष्ठमा विस्तारित र सात अनुच्छेदमा संरचित छ । चार पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्ध मझौला आयाममा निर्मित छ । यो आत्मपरक शैलीमा लेखिएको निबन्ध हो ।

यसको प्रमुख विषयवस्तु पुरुष प्रधान नेपाली समाजमा दबेर रहेका नारीहरूको समस्यालाई सार्वजनिक रूपमा अगाडि बढाई त्यसको उचित प्रकारले समाधान गर्नु हो । यसमा हाम्रो समाजमा नारी जातिले भोग्नु परेका दुःख पीडा र अपमानको चर्चा गर्दै छोरी बहारीले हाँस्नु, खेल्नु र ठट्टा गर्नु जस्ता कार्यलाई अपराधिक प्रवृत्तिको रूपमा हेर्ने कुसंस्कारको आलोचना गरिएको छ । नारीहरूले बच्चा जन्माउनुपर्ने र त्यसको बारेमा कुनै चासो नहुने उल्टै लोने स्वास्नीलाई बच्चा पाएपछि पनि पूर्वावस्थकै स्थितिमा पाउन खोज्छ जसले गर्दा आपसी कलह शुरू हुन्छ भन्ने देखाइएको छ । नेपाली समाजमा रहेका विभिन्न वर्गका र क्षेत्रका नारीहरूका समस्याहरू पनि फरक फरक हुन्छन् । धनीहरूका घरका नारीहरूले राणाकालीन शासकहरूका गोठका भैसीको जस्तो अवस्था भोग्नु पर्ने र सहरीया नारीहरूले यौन पिपासु लोनेबाट विभिन्न प्रकारका पीडाहरू भोग्नु पर्ने अवस्थाको चित्रण गरिएको छ ।

यस निबन्धको मूल उद्देश्य पुरुषप्रधान समाजमा नारीजाति एकदमै अपमानित र उपेक्षित हुन्छन् भन्दै दैवले ठगेको वा छोरीको हारेको कर्म हुन्छ भन्ने कुरामा विश्वास गर्नु भनेको नारी जातिको कमजोरी हो । समाजमा नारी र पुरुष जातिको समान अस्तित्व र महत्त्व छ भन्दै नारी पुरुष एक अर्काका परिपूरक हुन् र यिनका चाहना तथा आकाङ्क्षा समान हुन्छन् भन्ने सन्देश दिनु यसको मुख्य प्रयोजन हो । नारी र पुरुष एउटा सिक्काका दुईवटा पाटा भएकाले पुरुषले नारीमाथि दमन गर्नु हुँदैन र यदी यस्तो नराम्रो काम कुनै पुरुषबाट भयो भने त्यसको विरोधमा सम्पूर्ण नारीहरूले आवाज उठाउनु पर्छ भन्ने उद्देश्य रहेको छ ।

यस निबन्धको भाषाशैली सरल र रोचक छ । निबन्ध पढ्दा पाठकलाई आनन्दानुभूति प्राप्त हुने किसिमको भाषाशैलीयुक्त यस निबन्धमा समाजमा अपहेलित र उपेक्षित हुनुपर्दा नारीजातिले कतिसम्म कष्टकर र दयनीय जीवनयापन गर्छन् भन्ने कुरालाई सजीव तथा मार्मिक ढङ्गले प्रस्तुत गरिएको छ । यसमा

भावात्मक र विचारात्मक शैलीको सम्मिश्रण पाइन्छ । यस निबन्धमा पाइने चिन्हगत विविधता शाब्दिक र आलङ्कारिक अभिव्यक्तिले निबन्धको भाषाशैलीलाई रोचक तुल्याएको छ ।

## ४.२ दृष्टिबिन्दु पुस्तक भित्रका निबन्धहरूको विश्लेषण

दृष्टिबिन्दु २०४८ सालमा प्रकाशित आनन्ददेव भट्टको निबन्धको पुस्तक हो । यसमा विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित निबन्धहरूलाई सङ्कलन गरी प्रकाशन गरिएको छ । यहाँ सङ्ग्रहीत निबन्धहरू २०२९ सालदेखि २०४६ सालसम्मको अवधिमा बालक, हातेमालो, अन्तर्राष्ट्रियमञ्च, प्रकाशपुञ्ज र बौद्धिक संसार पत्रिकामा छापिएका रचनाहरू हुन् । यसमा सङ्कलन भएका लेख रचनाहरू बालबालिकाका रुचि अनुसारका छन् र कुनै न कुनै हिसाबले बालबालिकाको लागि उपयोगी हुने किसिमका छन् । यस पुस्तक भित्रका निबन्धहरूलाई उच्च, मध्यम र सामान्यकोटीमा छुट्टाएर निबन्ध तत्वका आधारमा विश्लेषण गरिएको छ । यस पुस्तक भित्र जम्मा पैतीस वटा लेख निबन्धहरू सङ्कलन गरिएको छ । यसमा ३४ वटा निबन्धहरूका साथै हातेमालो पत्रिकाको कृति समीक्षात्मक लेख र बाल साहित्य सम्बन्धी लेख गरी दुईवटा लेखहरू पनि समावेश गरिएको छ । यहाँ उच्चकोटिका तीनवटा, मध्यमकोटिका तीनवटा र सामान्यकोटिका तीनवटा निबन्धहरूको विस्तृत रूपमा विश्लेषण गरिएको छ भने अरूको सामान्य रूपमा विश्लेषण गरिएको छ ।

### ४.२.१ वास्तविक ज्ञानको स्रोत

यो निबन्ध पहिलोपटक २०४४ सालमा हातेमालो पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो र यसलाई पुनः २०४८ सालमा भट्टको दृष्टिबिन्दु भन्ने पुस्तकभित्र समावेश गरी प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । यो निबन्ध पाँच पृष्ठ र सात अनुच्छेदमा संरचित छ । यो निबन्ध 'म' को प्रथम पुरुषीय कथन ढाँचामा भनिएको छ र 'म' र 'हामी' जस्ता दुईवटा प्रथम पुरुष एकवचन र बहुवचन सर्वनामको प्रयोग गरिएको छ । तीन पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार ग्रहण गरेको छ ।

हाम्रो जीवनमा ज्ञानको अत्यन्तै ठूलो भूमिका रहने गर्दछ । जसले ज्ञान र व्यवहारलाई जोडेर सँगसँगै लैजान सक्छ ऊ आफ्नो हरेक कार्यमा सफल हुँदै जान्छ । यदी आफूले हासिल गरेको ज्ञानबाट जीवनमा कुनै फाइदा हुँदैन भने त्यसको कुनै सार हुँदैन । हामीले जीवनमा त्यस्तो ज्ञानको आर्जन गर्न सक्नु पर्छ जसले हामीलाई सफलतातिर डोच्याउन सकोस् भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । आजका प्रत्येक सचेत किशोर किशोरीहरूले आफ्नो पेशा विशेषको ज्ञान र व्यवहारबारे मात्रै होइन, आफ्नो बौद्धिक चाखको विषयमा पनि ध्यान दिनुपर्दछ । पाठ्यक्रमलाई मात्र ध्यान दिएर अध्ययन गर्नु पर्छ भन्ने परम्परावादी धारणाको विपरीत आजका विद्यार्थीवर्गले आफ्नो ज्ञानलाई चौतर्फी रूपमा विकसित हुन दिनुपर्छ भन्ने मान्यता यस निबन्धमा रहेको छ । राम्रो शिक्षा हासिल गर्नको लागि पानी बारबारको सिद्धान्त होइन एकीकृत सिद्धान्त अँगाल्नु पर्छ । एकीकृत सिद्धान्त अनुसार ज्ञान हासिल गर्दा आफूसित चासो रहने बढी भन्दा बढी कुरा सित सम्बन्ध राख्ने आवश्यकता अनुभव गरिन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । आजका किशोर किशोरीहरूले ज्ञान आर्जन गर्ने क्रममा पढ्ने सामग्रीहरूको पनि महत्त्वपूर्ण भूमिका रहन्छ । हामीले विदेशी स्वार्थी आँखाले हेरेको नेपाललाई नपढीकन आफ्नो चाख अनुसार सबभन्दा पहिले नेपालीहरूले लेखेका लेख, किताब र गरेका कार्यहरू हेर्ने बानी बसाउनु पर्छ भन्ने मूल भाव यस निबन्धले ओगटेको छ । वस्तुको वस्तुतालाई आत्मसात् गर्दै त्यसलाई कल्पनाको रागमा मुछ्छी वस्तुतालाई नवीनताका साथ प्रस्तुत गर्दा उत्कृष्ट निबन्धको रचना हुने भएकाले वास्तविक तथ्य र कल्पनाको उचित सन्तुलनले गर्दा यो निबन्ध उत्कृष्ट रहेको पाइन्छ ।

जुन ज्ञान हाम्रो राष्ट्रिय जीवनमा हुर्कदै र विकसित हुँदै गएको हुन्छ र जसलाई विदेशी प्रभावले दूषित पारेको हुँदैन त्यही ज्ञान नै वास्तविक रूपमा काम लाग्ने ज्ञान हुन्छ । जीवनमा हामीले ज्ञान र व्यवहारलाई जोडेर लैजानु पर्दछ । आजका सचेत किशोर किशोरीहरूले देशदेखि विदेससम्मका विभिन्न ज्ञानका स्रोतहरूलाई पत्ता लगाउन आवश्यक छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धले ओगटेको छ ।

सरल, सुमधुर भाषाशैलीमा लिखित प्रस्तुत निबन्ध नवीनतम शिल्पमा संरचित छ । तत्सम, तद्भव, भर्ना नेपाली शब्दहरूको प्रयोगका साथै ठाउँठाउँमा अङ्ग्रेजी शब्दहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । विभिन्न चिन्हहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा हामीले जीवनमा वास्तविक ज्ञानको स्रोतलाई चिनेर राम्रो ज्ञान

आर्जन गर्न सक्यौ भने मात्र त्यसले उचित उपलब्धि दिन्छ, भन्ने अभिप्राय रहेको छ ।

#### ४.२.२ *व्यक्तित्व विकास*

यो निबन्ध पहिलो पटक २०४२ सालमा **अन्तर्राष्ट्रिय मञ्च** पत्रिकामा प्रकाशित भएको थियो भने पछि २०४८ सालमा दृष्टिबिन्दु पुस्तकमा पुनः सङ्कलन गरी प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । आठ पृष्ठ र पाँच अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्ध आकारको दृष्टिले केही लामो रहेको छ । यसमा आत्मपरक वर्णन भएको प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग छ साथै यसको शीर्षक दुई पदीय रहेको छ ।

व्यक्तित्व विकास भन्नाले भ्रष्ट हामीलाई बाहिरी शारीरिक गठनको ज्ञान हुन्छ तर व्यक्तित्व शारीरिक मात्र नभई मानसिक, वैचारिक, अध्यात्मिक वा भावनात्मक गरी चार प्रकारका हुने र व्यक्तित्व विकास भन्नाले यी सबै व्यक्तित्व विकासको गुणात्मक अभिव्यक्ति हो भन्ने दृष्टिकोण निबन्धकारको रहेको छ । कुनै पनि व्यक्तिको शारीरिक व्यक्तित्व उसको सम्पूर्ण व्यक्तित्वको एउटा अंश मात्रै हो यसैको आधारमा समाजमा उसको चर्चा भैरहेको हुन्छ तर व्यवहारमा नजिकिदै जाँदा उसको मानसिक व्यक्तित्व जति प्रभावकारी छ त्यसैको आधारमा उसको बढी चर्चा परिचर्चा भएको पाइन्छ । मानसिक व्यक्तित्वबाट बाहिरी व्यक्तित्वलाई अझ बढी ओज र आकर्षण प्राप्त हुन्छ । शारीरिक र मानसिक पछि व्यक्तित्वको अर्को पाटो वैचारिक व्यक्तित्व पनि हो । वर्तमानदेखि भविष्यसम्म यात्रा गराउने मानव व्यक्तित्वको मूल पक्ष विचार हो । इतिहासले कसैको व्यक्तित्वको हिसाव लगाउँदा उसको वैचारिक व्यक्तित्वको दूरगामी वा क्षणिक प्रभावलाई नकेलाई छोड्दैन । मान्छेको विचारबाट नै ऊ कस्तो प्रकारको मान्छे हो भन्ने कुराको निर्धारण गर्न सक्ने हुनाले व्यक्तित्वको वैचारिक पाटो पनि हाम्रो जीवनमा महत्त्वका साथ उभिन्छ । अध्यात्मिक वा भावनात्मक व्यक्तित्व व्यक्तिले साह्रै कठोर परिश्रम गरेर मनका अनेक कमजोरीहरूलाई हटाएर मात्र प्राप्त गर्न सक्दछ । हार्दिक विकासको यो अवस्था प्राप्त गर्नु ज्यादै सौभाग्यको कुरा हो भन्ने मूल विषयवस्तुलाई यस निबन्धले अँगालेको छ । यस निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नो स्वतन्त्र अभिव्यक्ति दिएका छन् र उनको यो निबन्धले पाठकसँग तादात्म्य राख्न सफल भएकाले यो उच्च कोटिको निबन्ध हो ।

हामीले व्यक्तित्व विकास गर्नका लागि शारीरिक व्यक्तित्वको मात्र विकास गरेर पुग्दैन मानसिक, वैचारिक र हार्दिक व्यक्तित्वको पनि विकास गर्नु पर्छ । बाहिर देख्दा बडो आकर्षक लाग्ने सबै व्यक्ति प्रतिभाशाली हुँदैनन् । धेरै जसो व्यक्तिमा शारीरिक, मानसिक र वैचारिक तीनै गुण पाउन सकिन्छ तर आध्यात्मिक गुण समेत भएको सर्वाङ्ग राम्रो व्यक्ति पाउन अत्यन्त गाह्रो हुन्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

निबन्धकार भट्टले यस निबन्धमा बोलचालमा प्रयुक्त सरल शब्दावलीको छनोट गरी सरल भाषाको प्रयोग गरेका छन् । विभिन्न स्रोतका शब्दहरूको यथोचित प्रयोग गरिएको छ । 'आफ्नो गोरुको बाह्रै रुपैयाँ' जस्तो उखानको प्रयोग गरिएको छ । कुनै पनि व्यक्तिको चौतर्फी रूपमा विकास भयो भने मात्र व्यक्तित्वको विकास हुन्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

### ४.२.३ चरित्र निर्माणको आवश्यकता

यो निबन्ध २०४६ सालको **बौद्धिक संसार** पत्रिकामा प्रथम पटक प्रकाशित भएको थियो र पछि २०४८ सालमा **दृष्टिबिन्दु** पुस्तकभित्र सङ्कलन गरी प्रकाशित गरिएको देखिन्छ । यो छ पृष्ठमा विस्तारित तथा आठ अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । तीन पदीय शीर्षकको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको छ ।

चरित्र निर्माण सबैले मानेको स्वीकार गरेको र सम्बर्द्धन गर्न चाहेको कुरा हो । चरित्र निर्माणको आवश्यकता सधैंको र सबैको आवश्यकता हो भन्ने धारणा निबन्धकारको पाइन्छ । हामी जहिले पनि संयमित, सर्तक रहनुपर्ने हुन्छ जसले गर्दा राम्रो चरित्रको विकास हुन्छ । आजका हाम्रा युवा पुस्ताहरू लागूपदार्थको दुर्व्यसनिमा फसेर आफ्नो चरित्रलाई भ्रष्ट पारिराखेका छन् तसर्थ हामीले यस्ता लागूपदार्थका मालिकहरूको जरो समात्न तिर ध्यान दिएनौ भने चरित्र निर्माणको कार्य सधैं अधूरे अपूरे रहन्छ भन्ने प्रस्तुति यस निबन्धमा पाइन्छ । मानिसहरूमा भन्ने र गर्ने कामका बीचमा योग भएन भने पनि चरित्रको विकास गर्न सकिँदैन । व्यक्तिको सजगता, आत्मानुशासन, संयम, नियम आदि साधनहरूको माध्यमबाट चरित्र निर्माण गर्न र विग्रनबाट बच्न सघाउ पुग्दछ । चरित्र निर्माणको आवश्यकता व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवम् विश्वकै आवश्यकताको प्रेरित भएको हुन्छ । सम्पूर्ण क्षेत्रमा कमीकमजोरीहरू हटाउन व्यक्ति चरित्रवान हुनुपर्दछ जसमा सहानुभूति,

माया र करुणा हुन्नु उ कदापि चरित्रवान हुन सक्दैन । यसलाई आन्तरिक भावना र स्फुरणको अनुभव हुनु पर्दछ त्यसैले यो देखावटी अभ्यासले विकसित गर्न सकिन्न भन्ने मूल विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । यस निबन्धमा लेखकको विचारपक्ष सशक्त रूपमा आएको छ र लेखकको चिन्तन विराट रूपमा निबन्धमा पोखिएकोले यो उच्चकोटिको निबन्धको दर्जामा पर्न सफल भएको छ ।

चरित्र निर्माण भित्री जागरण हो जसको निम्ति प्रत्येक मानिसमा भित्री देखिको क्रियाशिलता हुनु पर्दछ । देखावटी रूपमा गरेको कार्यले राम्रो सफलता दिन सक्दैन त्यसैले हामी जीवनमा जहिले पनि आफ्नो चरित्रको निर्माण गर्न प्रयत्नशील हुनु पर्छ । नराम्रो चरित्रबाट व्यक्ति भ्रष्ट बन्दै जान्छ भने राम्रो चरित्रको निर्माणले गर्दा व्यक्ति, समाज राष्ट्र र विश्वलाई नै फाइदा पुग्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

विचार र भावको सुन्दर सन्तुलन पाइने यस निबन्धमा सहज, स्वभाविक, रागात्मक भाषाको प्रयोग पाइन्छ । तत्सम, तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा ठाउँठाउँमा पूर्णविराम, प्रश्नवाचक अल्पविराम जस्ता चिन्हहरूको पनि प्रयोग पाइन्छ । हामीले हाम्रो चरित्र सधैं राम्रो बनाउनु पर्छ र चरित्र निर्माणको आवश्यकतालाई गहिरोगरी अनुभव गर्न सक्नु पर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिन खोजेको छ ।

#### ४.२.४ आमा

यो निबन्ध बालक पत्रिकामा २०३५ सालमा पहिलो पटक प्रकाशित भएको थियो भने दोस्रो पटक २०४८ सालमा दृष्टिबिन्दु पुस्तकमा प्रकाशित भएको छ । तीन पृष्ठ र तीन अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले लघु आयाम प्राप्त गरेको छ । यसमा एक पदीय ममतामयी 'आमा' भन्ने शीर्षकको चयन गरिएको छ ।

आमा भन्ने शब्द सुन्नासाथ हामीमा श्रद्धाको भाव उत्पन्न हुन्छ । प्रत्येक भाषामा आमालाई जनाउने शब्द फरक फरक भएपनि ती उत्तिकै आदरणीय रहेको पाइन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । प्रत्येक छोराछोरीले आफ्नी आमालाई र प्रत्येक आमाले पनि आफ्ना छोराछोरीलाई भित्री हृदयदेखिनै माया गर्छन् त्यहाँ कुनै स्वार्थ लुकेको हुँदैन । आमाले आफ्ना सन्तानहरूको पीर मर्का बुझ्न सकिन्छन् त्यसैले जोसुकैले पनि आमाको महत्त्वलाई बुझ्नु पर्दछ । आमाको हृदय

कमलो र मायालु हुन्छ । जब कुनै सन्तान आमाबाट टाढा हुन पुग्छ उसलाई मात्र थाहा हुन्छ आमाको महत्त्व । जन्मैदेखि बच्चाहरू आमाको काखमा हुर्कने हुनाले उनीहरूमा आमाको ज्यादै ठूलो प्रभाव पर्छ । यदी आमाहरू शिक्षित छन् भने उनीहरूले आफ्ना सन्तानहरूलाई राम्रो शिक्षा दिन सक्छन् । आफ्ना बालबच्चाहरूलाई सत्मार्गमा डोऱ्याउन सक्छन् तसर्थ प्रत्येक आमाले बुद्धिमती हुनु पर्छ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा रहेको छ । पढेलेखेका आमाहरू सन्तानका लागि आदर्श हुन्छन् । नारीहरूलाई पढाउनु हुँदैन भन्ने परम्परावादी धारणाको विरोध गर्दै आजका समाजका व्यक्तिहरूले नारीलाई पनि शिक्षाको अवसर दिनु पर्छ जसले गर्दा उनीहरू आफूहरूमात्र शिक्षित नभै आफ्ना सन्तानहरूलाई पनि शिक्षा दिन सक्नु भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । यसमा स्वतःस्फूर्त रूपमा आएका भावहरूलाई संगतिमूलक बनाई निबन्धात्मक स्वरूप प्रदान गरिएको छ । यो मध्यम कोटिको निबन्ध हो ।

आमा भन्ने शब्द निकै आत्मीय शब्द हो । प्रत्येक छोराछोरीले आफ्नी आमालाई हृदयदेखि नै ढोग्नु पर्छ । आमाको हृदयमा प्रत्येक छोराछोरीको लागि निस्वार्थ माया रहेको हुन्छ जसमा कुनै सीमा हुँदैन । आमामा आफ्ना सन्तानलाई सत्मार्गमा डोऱ्याउन सक्ने शक्ति हुन्छ त्यसैले उनीहरू जति राम्ररी शिक्षित भई आफ्नो बुद्धिको विकास गर्न सक्छन् उति नै धेरै आफ्ना सन्तानलाई बढी क्षमतावान् बन्न सघाउँछन् भन्ने मूल उद्देश्य यसमा रहेको छ ।

यस निबन्धको भाषा सरल खालको छ । यसमा विभिन्न स्रोतबाट आएका शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । 'नपाउन्जेल कस्तो पाएपछि सस्तो', 'कुपुत्र जन्मन सक्छ तर कुमाता कुनै आमा पनि हुन्न', 'मणि हराएको सर्प भैँ', 'पढ्नु गुथ्नुको नै काम हलोजोती खायो माम', जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । ठाउँठाउँमा विभिन्न चिन्हहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । आजका प्रत्येक आमाहरू शिक्षित हुनु पर्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.२.५ बाहिरी किताब पढ्ने बानी

यो निबन्ध २०३६ सालको बालक पत्रिकामा पहिलो पटक प्रकाशित भएको हो । यसलाई भट्टले पुनः २०४८ सालमा दृष्टिबिन्दु भित्र सङ्कलन गरी प्रकाशित गरेका छन् । यो निबन्ध तीन पृष्ठमा विस्तारित र चार अनुच्छेदमा संरचित छ । यो

निबन्धले लघु आकार प्राप्त गरेको छ । चार पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धमा लेखकको आत्मपरक वर्णन पाइन्छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले विद्यार्थीहरूले पाठ्यक्रम अनुसारका पाठ्यपुस्तकहरूको अध्ययनको साथसाथै बाहिरी किताब पनि पढ्नु पर्दा विद्यार्थीहरूमा किताब देख्दै रीस उठ्ने, दिक्क लाग्ने जस्ता प्रवृत्तिहरू देखा पर्न सक्छन् भन्ने कुरा देखाएका छन् । यस्तो प्रवृत्तिबाट मुक्ति पाउनको लागि विद्यार्थीहरूले आफ्ना पाठ्यपुस्तकका साथसाथै बाहिरी किताबहरूपनि पढ्ने बानी गर्नु पर्दछ । बाहिरी किताब पढ्ने बानी नबसेका धेरैजसो विद्यार्थीहरू ठूलो भएर पढ्ने बानीका हुँदैनन् जसले गर्दा उनीहरूको ज्ञान चौतर्फी रूपमा विस्तार हुन पाउँदैन भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा रहेको छ । अहिलेको परिप्रेक्ष्यमा हेर्दा हाम्रा विद्यार्थीहरूले पढ्ने बाहिरी किताबहरूको संख्या निकै कम रहेकोमा गुनासो प्रकट गर्दै विभिन्न पत्रपत्रिकामा छरिएका लेख रचनाहरूलाई राम्रो सङ्कलन र सम्पादन गरी छपाउनु पर्ने र त्यस्ता लेखकहरूलाई लेख्नको लागि उत्साहित गर्नुपर्ने आवश्यकताको महसुस लेखकले गरेका छन् । विद्यार्थीहरूलाई बाल साहित्यको माध्यमबाट अरू बाहिरी किताब पढ्ने बानी बसाउन सजिलो हुन्छ । सानैदेखि यस्ता बालसाहित्य पढ्ने स्वभावका विद्यार्थीहरूलाई पछि गएर बाहिरी किताब पढ्न कुनै अभ्यास गर्न पर्दैन भन्ने विषयवस्तु यसमा रहेको छ । यस निबन्धमा भाव र विचारको पूर्ण सन्तुलन रहेको छ भने चिन्तन र सम्वेदनको अभिव्यक्ति पाइन्छ त्यसैले यो निबन्ध मध्यम कोटिको निबन्धमा परेको छ ।

आजका विद्यार्थी वर्ग भनेको देशका भविष्य हुन् । उनीहरूको भविष्य सुनिश्चित भयो भने सबैको भलाइ हुन्छ त्यसैले विभिन्न सम्बन्धित क्षेत्रहरूबाट बालबालिकाहरूलाई बाहिरी किताब पढ्नको लागि प्रेरित र उचित वातावरण बनाइदिनु पर्छ । प्रत्येक विद्यार्थीहरूलाई बाहिरी किताब पढ्न लगाएर त्यस्ता किताबहरूको संख्य बढाउन लेखकहरूलाई उत्साहित गर्नुपर्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धले बोकेको छ ।

निबन्धकारले सामान्य पाठकले पनि बुझ्न सक्ने भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । तद्भव, तत्सम आगन्तुक भाषाका शब्दहरूले निबन्धमा मिठास थपेको छ । यस निबन्धमा विभिन्न चिन्हहरूको प्रयोग गरिएको छ । विद्यार्थीहरूले पाठ्यक्रमका

पुस्तकहरू मात्र होइन बाहिरी किताब पनि पढ्ने बानी बसाल्नु पर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

#### ४.२.६ परीक्षा र चोरी

यो निबन्ध २०२९ सालको प्रकाशपुञ्ज पत्रिकामा पहिलोपटक प्रकाशित भएको थियो भने पछि दृष्टिबिन्दु भित्र यसलाई सङ्कलन गरिएको छ । छ पृष्ठ र आठ अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले मझौला आकार पाएको छ । यसमा दुई पदीय शीर्षक रहेको छ ।

विद्यार्थीहरूलाई परीक्षा भन्नासाथ निकै उत्सुकता कौतुहलता र आनन्दको विषय हुने गर्दछ । परीक्षाले विद्यार्थीलाई मात्र प्रभावित नगरी शिक्षकदेखि राष्ट्रलाई समेत गम्भीर रूपले प्रभावित गर्ने गर्दछ तर हाम्रो जस्तो अविकसित देशले यसबारे गम्भीर किसिमले विचार नगरेकोमा निबन्धकारले चिन्ता व्यक्त गरेका छन् र अहिलेको परिप्रेक्ष्यमा परीक्षा र चोरी एक अर्काका पुरकको रूपमा आएको छ भनेका छन् । स्कूलस्तरदेखि उच्च शिक्षामा समेत चोर्न सिपालु देखिएका विद्यार्थी जब आफ्नो पढाइ सकी जीवनमा प्रवेश गर्छन् उनीहरू आफूमा खोक्रोपन देख्छन् र आफूलाई ढाकीराख्न अनेक गलत बाटो अपनाउन पुग्छन् भन्ने प्रस्तुति रहेको छ । चोरेर पास भएको विद्यार्थीले जीवनमा आउने बाधा व्यवधानका विरुद्ध सङ्घर्ष गर्न सक्दैन । आजका कैयन व्यक्तिहरू परीक्षामा चोर्नु कुनै नराम्रो कुरा ठान्दैनन् साथै चोराउन जानु भन्नु ठूलो वीरताको काम सम्भन्ध्यन् भनेका छन् । परीक्षामा हुने चोरी रोक्नको लागि परीक्षामा उपस्थित हुने विद्यार्थीहरूको ठूलो हात रहने गर्दछ भने विद्यार्थीहरूलाई खुब मेहनत गर्न प्रोत्साहन दिएर नयाँ छिटो र छरितो पद्धतिबाट ज्ञान आर्जन गर्न सिकाएमा केही मात्रामा भएपनि परीक्षामा हुने चोरीलाई रोक्न सकिन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । आजको समाजले यस्ता कुप्रवृत्तिलाई रोक्न उचित कदम चाल्नु पर्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । यस निबन्धको प्रस्तुति मध्यम खालको रहेको छ । विषयवस्तुलाई तार्किक ढङ्गले विस्तार गरिएको छ भने विचार र भावलाई कलात्मक ढङ्गले प्रस्तुत गरिएको छ ।

चोर्दा पास हुने सम्भावना भए पनि त्यसले हाम्रो जीवनलाई उपलब्धिहीन बाटोतिर डोच्याइरहेको हुन्छ । चोर्दा एकछिनको लागि सन्तोष भएपनि त्यसले हाम्रो

जीवनमा नकारात्मक प्रभाव पार्दछ । जीवनको परीक्षामा चोर्न पाइन्न त्यहाँ साह्रै चर्को प्रतिस्पर्धा हुन्छ । विद्यार्थीहरूले क्षणिक सफलतालाई मध्यनजर गरी परीक्षामा चोरी गरेमा त्यसले उनीहरूको जीवनलाई अन्धकारमय बनाइरहेको हुन्छ, भन्ने मूल उद्देश्य यसमा छ ।

यस निबन्धको भाषा सरल खालको रहेको छ । सरल, मिश्र र संयुक्त वाक्यहरूको प्रयोग गरिएको छ । यसमा तत्सम, तद्भव, भर्त्ता र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ साथै ठाउँ ठाउँमा विभिन्न चिन्हहरूको पनि प्रयोग देख्न सकिन्छ । परीक्षामा चोरी गर्नेले कहिल्यै विद्या आर्जन गर्ने चाहना बोकेको हुँदैन र परीक्षामा चोरी गर्नु आफ्नो भविष्य अन्धकारमा पार्नु हो भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.२.७ विद्यार्थीकालको सम्झना

यो निबन्ध बालक पत्रिकामा २०३४ सालमा प्रथम पटक प्रकाशित भएको थियो । यसलाई भट्टले पुनः दृष्टिबिन्दु भित्र सङ्कलन गरी प्रकाशन गरेका छन् । यो निबन्ध पाँच पृष्ठमा विस्तारित र पाँच अनुच्छेदमा संरचित छ । यसमा प्रथम पुरुषीय दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको छ । तीन पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नो विद्यार्थीकालको सम्झना गर्दै त्यति बेला आफ्ना धेरै दोषहरू रहेका थिए भनेका छन् । आफूलाई पढ्न भने पछि निकै गाह्रो हुने तर आफ्ना सहपाठीहरूले परीक्षामा उच्च सफलता पाउँदा, पुरस्कार र स्यावासी पाउँदा आफ्नो मन सारै चिसिने र पढ्नै छोडिदिनु पथ्यो क्यारे भन्ने भावना पैदा हुन्थ्यो भन्ने कुरा व्यक्त गरेका छन् तर अहिलेका विद्यार्थी भाइबहिनीहरूमा आफूमा भन्दा धेरै दोषहरू हट्दै गएको होला भन्ने आशा व्यक्त गरेका छन् । गुरुहरूको पिटाइ र कडा अनुशासनमा बस्नुपर्ने बाध्यता, मान्द्रो, गुन्त्री र सुकुलमा बसेर पढ्नु पर्ने स्थिति आफ्नो समयमा थियो भने अहिले विद्यार्थीहरूले निर्धक्क गुरुहरूलाई आफूले नजानेका कुराहरू सिक्न सोध्न पाउने स्थितिको सिर्जना भएकोमा खुशी व्यक्त गरेका छन् । सानै देखिका मेहनती विद्यार्थीहरू पछि गएर प्रतिभाशाली बन्दछन् । हामीले पनि प्राथमिक विद्यालयमा प्रवेश पाएदेखि पढाइ नछोडुन्जेलसम्म आफू कसरी प्रतिभाशाली बन्न सकिन्छ भनेर कोशिस गर्नु पर्छ । प्रत्येक गुरुवा

गुरुआमाले पनि विद्यार्थीहरूलाई कसरी प्रतिभाशाली बनाउन सकिन्छ भनी सधैं प्रयत्नशील हुनु पर्छ भन्ने निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ । निबन्धले आफ्नो जीवन भोगाइलाई वा आफ्ना जीवनका अनुभूतिलाई संवेदनात्मक रूपमा सरल तरिकाले प्रस्तुत गरेका छन् । यो निबन्ध सामान्य कोटिको निबन्ध हो ।

गुरुवर्गले विद्यार्थीहरूलाई राम्रो शिक्षा दिनु पर्छ जसले उनीहरूको भविष्य निर्धारण गर्न सकोस् । विद्यार्थीहरूलाई पढ्नको लागि अभिभावकहरूले उत्साह थपिदिनु पर्दछ । बुझ्न गाह्रो परेको विषयवस्तुलाई कसरी बढी सजिलो र छयाङ्ग हुने गरी बुझाउन सकिन्छ भनी शिक्षकहरू प्रयत्नरत हुनु पर्छ । लौरी देखाएर कडा अनुशासनमा राखेर पढाउनु भन्दा उनीहरूप्रति मायाको भाव देखाएर पढाएमा विद्यार्थीहरूले पढाएको कुरा छिटो सिक्छन् भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

यो निबन्ध सरल भाषाशैलीमा लेखिएको छ । ठाउँठाउँमा 'जो शिकारी हो उसले भयाङ्गमा लुकेर बसेको चरोलाई पनि देख्न सक्छ', 'हुने बिरुवाको चिल्लो पात नहुनेको फुस्रै' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । तत्सम, तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा विभिन्न चिन्हहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । विद्यार्थी प्रतिभाशाली हुन शिक्षक अभिभावक र विद्यार्थी स्वयम्कै भूमिका महत्त्वपूर्ण हुन्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.२.८ पढ्ने बानी

यो निबन्ध २०३७ सालको बालक पत्रिकामा पहिलोपटक प्रकाशित भएको हो । यसलाई पुनः २०४८ सालमा दृष्टिबिन्दु भित्र समावेश गरी प्रकाशित गरिएको छ । तीन पृष्ठ र छ अनुच्छेदमा संरचित यो निबन्धले लघु आकार पाएको छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धमा निबन्धकारको आत्मपरक वर्णन पाइन्छ ।

हाम्रो जीवनमा पढाइको महत्त्व ज्यादै ठूलो रहने गर्दछ । पढेका मान्छेले जुनसुकै काम पनि अभि कुशलतापूर्वक गर्न सक्छन् । निबन्धकारले यस निबन्धमा पढ्न जान्ने हुनु र पढ्ने बानी हुनु धेरै लाभकारी हो भन्ने कुरा व्यक्त गरेका छन् । पढ्ने बानी भएका मानिसहरूले जीवनमा निकै ठूलो उपलब्धि हासिल गर्छन् । पढ्ने बानीले व्यक्तिलाई खराब विचारबाट असल विचारतिर लैजान सक्छ । निबन्धकारले पढ्न जानिएन भने आफ्ना कुरा धेरै राम्ररी व्यक्त गर्न सकिदैन भनेका छन् । एउटा शिक्षित व्यक्तिको लागि पढ्ने बानी भएन भने उ न त राम्ररी पढ्न नै सक्छ न त

आफ्नो ज्ञान बुद्धि विचार र सीपकै विकास गर्न सक्छ भन्ने प्रस्तुति यस निबन्धमा रहेको छ । कोही व्यक्ति पढेको कुरा छिटो समात्न सक्छन् भने कोही मुख्य कुरा नसम्झिइ सामान्य कुरामात्र सम्भन्छन् । राम्ररी पढ्न खोज्ने व्यक्तिले सिलसिलाबद्ध किसिमले पढ्ने गर्नु पर्दछ जसले गर्दा उसमा विचार पनि सिलसिलाबद्ध रूपमा आउँछ भन्ने भाव यस निबन्धमा रहेको छ । विभिन्न पुस्तकालयमा जाँदा आफूलाई उपयोगी हुने पुस्तक छानेर पढ्ने बानी गर्नु पर्दछ जसले हाम्रो जीवनलाई अध्यारो पक्षबाट उज्यालो पक्षतिर लैजान सहयोग पुऱ्याउँदछ भन्ने विषयवस्तु यसमा छ । यो सामान्य खालको निबन्धको कोटिमा परेको छ ।

हामीले पढ्ने बानी बसाल्नु पर्छ । पढ्न मन लाग्यो भनेर लथालिङ्ग रूपमा पढ्न बस्दा त्यसले कुनै उपलब्धि हासिल गर्दैन त्यसैले पढ्दा जहिले पनि सिलसिलाबद्ध रूपमा पढ्नु पर्दछ जसले गर्दा पढेका महत्त्वपूर्ण र राम्रा कुराहरू लामो समयसम्म सम्भिराख्न सकिन्छ । हामीले राम्रा राम्रा पुस्तकहरू मात्र छानेर पढ्ने बानी गर्नु पर्दछ । निम्न कोटिका पुस्तकहरू पढेर कुनै उपलब्धि हुँदैन भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

निबन्धमा सरल भाषाको प्रयोग गरिएको छ । तत्सम, तद्भव, भर्त्ता र आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । ठाउँठाउँमा पढ्नु गुन्नु के काम हलो जोत्यो मामै माम, 'जो हात सो पात' जस्ता उखान टुक्काको प्रयोगले भाषामा अझ मीठास थपेको छ । ठाउँठाउँमा विभिन्न चिन्हहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ । पढ्नु सबैका लागि अत्यावश्यक हुन्छ त्यसैले हामीले सिलसिलाबद्ध रूपमा पढ्ने बानीको विकास गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धमा रहेको छ ।

#### ४.२.९ खाजा

यो निबन्ध २०२७ सालको बालक पत्रिकामा प्रकाशित भएको थियो । त्यस पछि यस निबन्धलाई दोस्रो पटक दृष्टिबिन्दु पुस्तकभित्र सङ्कलन गरी प्रकाशित गरिएको छ । यो निबन्ध तीन पृष्ठमा विस्तारित र पन्ध्र अनुच्छेदमा संरचित छ । एक पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार प्राप्त गरेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा निबन्धकारले मूल रूपमा तीनजना मित्रहरूको गाढा मित्रतालाई देखाएका छन् । उनीहरूको मित्रता देखेर विद्यालयका गुरुवर्ग पनि अत्यन्त खुशी भई प्रशंसा गरेको प्रसङ्ग रहेको छ । ती तीनजना साथीहरू स्कूलको

खाजाखाने छुट्टि भएको बेलामा नजीकैको बगैचामा बसेर खाजा खाने तरखर गर्दा त्यतिकैमा दुईओटा माग्ने केटीहरू त्यहाँ आइपुग्छन् । साह्रै भोक लाग्दा छ अलिकति खाजा देउन भन्ने सानी माग्ने केटीको अनुरोधलाई स्वीकार गर्दै ती तीनजनाले उसले गीत गाएमा मात्र खाजा दिन्छौं भन्ने सर्त राख्छन् । सर्त अनुसार त्यो सानी केटीले आफ्ना हात र खुट्टाको तालमा उज्याला आँखा चम्काइ गाउन थालेको कुरा निबन्धकारले प्रस्तुत गरेका छन् । उसको गायनबाट ती तीनजना साथीहरूमात्रै होइन बगैचाभित्र भएका सारा दर्शकहरू पनि उनीहरूतिरै मन्त्रमुग्ध भएको प्रसङ्गलाई मूल विषयवस्तु बनाइएको छ । यस निबन्धमा कथातत्त्व निबन्धकारको वैयक्तिक अनुभूतिको पुष्टिको लागि होइन आदि देखि अन्त्यसम्ममै कथातत्त्वको प्रबलता रहेको छ त्यसैले यो निबन्ध सामान्य कोटिमा परेको छ ।

गरीबहरूलाई मुखले मात्र सहानुभूति प्रकट गर्न भन्दा आफ्नो तर्फबाट जति सकिन्छ त्यतिनै सहयोग गर्न पछि हट्नु हुँदैन । आर्थिक अवस्थाले उनीहरू विपन्न भएपनि उनीहरूमा भित्री प्रतिभा हुन सक्छ जसलाई उचित ठाउँ दिन सबै प्रयत्नरत हुनु पर्दछ । हामीले सबैलाई मित्रवत् भावनाले सहयोग गर्नु पर्दछ । अरूलाई ढाँटेर प्रलोभन देखाउनु हुँदैन भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् । तत्सम, तद्भव तथा आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । यस निबन्धमा ठाउँठाउँमा विभिन्न चिन्हहरूको प्रयोग गरिएको छ । हामीले आफ्नो मात्र स्वार्थ नहेरी गरिब असहाय व्यक्तिहरू प्रति पनि सहानुभूति प्रकट गर्नु पर्छ भन्ने कुरालाई देखाउन खोजिएको छ ।

#### ४.२.१० हामी बालक बालिकाहरू

यस निबन्धमा निबन्धकारले मूल विषयवस्तुको रूपमा बालबालिकाहरूको स्वभावलाई प्रस्तुत गरेका छन् । कसैको करकापमा पर्न नरुचाउने उनीहरू आफूलाई जे गर्न मन लाग्यो त्यही मात्र गर्ने प्रकृतिका हुन्छन् । अरूले पढ्-पढ् मात्र भनेर होइन आफूलाई मन लागे मात्र पढ्ने खालका हुन्छन् भनेका छन् । आफ्नो विद्यालयमा कहिले पुग्नुजस्तो लाग्ने उनीहरू राष्ट्रिय गान गाउन पाउँदा अत्यन्त खुशी देखिन्छन् । गुरु वर्गले राम्रोसँग पढाएमा समय बितेको थाहै नहुने उनीहरू बताउँछन् । विद्यालयमा भैरहने हरेक कार्यक्रममा भागलिन पाउँदा अत्यन्तै उत्सुक

देखिन्छन् भने रमाइलोसित जुनसुकै कुरा सिक्न परे पनि अत्यन्त आनन्द मान्ने उनीहरूको स्वभाव हुन्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । आफूलाई जसले माया गर्थ्यो उनीहरूप्रति अत्यन्त कृतज्ञ हुने बालबालिकाहरूलाई धेरै बन्धनमा नराखी स्वतन्त्र छोडिदिनु पर्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ भने निबन्धको भाषाशैली सरल सम्प्रेष्य र हृदयग्राही बनेको छ ।

#### ४.२.११ नयाँवर्ष

यो निबन्ध विषयवस्तुको रूपमा निबन्धकारले नयाँ वर्षको महत्त्वलाई दर्शाएका छन् । नयाँ वर्षको आगमनले हामीमा नौलोपनको आभास ल्याइदिन्छ, संसारभरिका मुलुकमा नयाँवर्ष एकैदिन मनाइने गरिन्न तर प्रत्येक मुलुकको आ-आफ्नै नयाँ वर्ष हुन्छ भन्ने कुरा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । प्रत्येक नयाँ वर्षमा हामीले गएको ठाउँमा आफूले गर्न सकेका असल काम र गर्न नसकेका कामहरूको लखोजोखा गरी नगरिएका काम सम्पन्न गर्ने प्रतिज्ञा गर्छौं । हामी समाजमा बसेर दैनिक आर्जन गरी पेट पाल्नु पर्ने र विकासको बाटोमा हिड्न अग्रसर हुने मानिस भएकाले हामीले दिन, बार, महिना, वर्षको ख्याल गर्नु पर्छ । हरेक कुराको जन्म, विकास र मृत्यु हुन्छ यो कुरा थाहा पाउन पनि नयाँवर्षको ज्ञान राख्नु पर्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । हामीले नयाँ वर्षमा नयाँ काम गर्ने प्रतिज्ञा गरेर नयाँ वर्ष मनाउनु पर्छ भन्ने उद्देश्य यसमा रहेको छ । यस निबन्धमा सहज, सरल प्रवाहपूर्ण भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.२.१२ भन्नु र गर्नु

यस निबन्धमा निबन्धकारले भन्न जति सजिलो हुन्छ गर्न त्यतिनै गाह्रो हुन्छ भन्ने विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गरेका छन् भन्नलाई त जसले जे पनि भनिदिन सक्छ तर त्यसलाई व्यवहारमा उतार्न निकै गाह्रो हुने गर्दछ । जसले जति व्यापक काम गर्छु भनेर कुरा गर्छ उसलाई सो कुरा पूरा गर्न उत्तिकै तपस्या गर्नुपर्ने हुन्छ त्यसैले भन्न सजिलो हुन्छ तर गर्न गाह्रो हुन्छ भनेका छन् । सफलता पाउनको लागि जो कोही व्यक्तिले पनि काम गर्नु पर्छ । आफ्नो मात्र हितको लागि काम नगरी सारा संसारकै हितको लागि काम गर्नु पर्छ भन्ने विषयवस्तु यसमा रहेको छ । भन्नु र गर्नुमा निकै भिन्नता हुन्छ हामीले मुखले मात्र गर्छु भनेर होइनकी व्यवहारले नै त्यो

काम गरेर देखाउन सक्नु पर्छ भन्ने मूल उद्देश्य यसमा रहेको छ । सरल र सुबोध भाषाशैलीमा संरचित यो एउटा निजात्मक निबन्ध हो ।

#### ४.२.१३ प्रजातन्त्र

यस निबन्धमा निबन्धकारले फागुन सात गते मनाइने प्रजातन्त्र दिवसको बारेमा चर्चा गरेका छन् । राजा त्रिभुवन र प्रजा मिलेर राणा विरुद्धकोसङ्घर्षमा उत्रेर विजय प्राप्त गरेको दिन हो फागुन सात गतेको दिन । फागुन सात गते नआउन्जेल नेपालमा राणाशासनको जगजगी थियो । गरिब निमुखा जनताले आफ्नो स्वेच्छाले कुनै काम गर्न पाउने थिएनन् भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । जनताले इच्छा गरे बमोजिमको शासन वा जनताले अह्नाएको शासन नै सक्कली प्रजातन्त्रको अर्थ हो भन्ने निबन्धकारले २००७ सालको फागुन ७ गतेदेखि नेपालमा प्रजातन्त्र आएको कुरालाई प्रस्ट पारेका छन् । निमुखा जनतालाई अन्याय अत्याचारमा राख्न खोज्ने अत्याचारी शासकहरूको जरुर अन्त्य हुन्छ भन्ने देखाउनु नै यस निबन्धको मूल उद्देश्य हो । निबन्धको भाषाशैली सरल खालको छ भने ठाउँठाउँमा उखान टुक्काको प्रयोगले भाषामा रोचकता थपेको छ ।

#### ४.२.१४ स्वागत छ नयाँ युगलाई

यस निबन्धमा नयाँ युगलाई निबन्धकारले भित्री हृदयदेखिनै स्वागत गरेको छन् । नयाँ युगलाई स्वागत गर्न प्रत्यक्ष, असल र स्वच्छ हृदय भएको मान्छे चाहिन्छ भन्ने विषयवस्तु यसमा रहेको छ । नयाँ युग नयाँ घुम्ती दिने घटना वा कार्यले शोभाएको हुन्छ । जबसम्म हामीले पुरानो प्रतिको माया मोहलाई त्यागदैनौ तबसम्म नयाँ युगलाई स्वागत गर्न सकिँदैन भन्ने धारणा निबन्धकारले राखेका छन् । हाम्रा वीर पुर्खाहरूले नयाँ युगलाई ल्याउनको निमित्त निकै तपस्या गरे आफ्नो मेहनत, बुद्धि, जुक्ति र रगत पसिनाले नयाँ युगलाई फस्टाउन मद्दत गरे त्यसरी नै हामीले पनि हृदयदेखिनै नयाँ युगलाई स्वागत गर्न सक्नु पर्छ भन्ने भाव यस निबन्धमा पाइन्छ । हामीमा नयाँ युगसँग नयाँ विचार भावना आउनु पर्छ आफ्नो मात्र स्वार्थ नहेरी सबैको भलाइको निमित्त कार्य गर्नुपर्छ भन्ने यस निबन्धको मूल उद्देश्य रहेको छ । सरल, सहज र स्वाभाविक भाषाशैली यस निबन्धको वैशिष्ट्य हो ।

#### ४.२.१५ मेरो देश

यस निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नो देशप्रतिको मोहलाई मूल विषयवस्तुका रूपमा प्रकट गरेका छन् । प्रत्येक मान्छेको देश आफ्नै जस्तो सुन्दर होला र देश प्रतिको माया पनि उस्तै होला भन्ने जिज्ञासा प्रकट गरेका छन् । आफूलाई देशको मायाले कताकता नदेखिने गरेर तानेजस्तो हुने र आफ्नो शिर हरेक विहान र साँझ देशको हिमाललाई नमस्कार गर्दै भुक्छ भन्ने कुरा निबन्धमा व्यक्त गरेका छन् । आफ्नो देश संसारजस्तै प्यारो लाग्ने र मन मुटु भित्र देशको माया सधैं रहिरहने कुरा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । विभिन्न प्राकृतिक छटाहरूले भरिपूर्ण भएको देशमा आफू जन्मिन पाउनु सौभाग्यको कुरा हो भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । निबन्धकारले आफूभित्र भएको देशभक्तिको भावलाई देखाउनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ । विभिन्न उखान टुक्काको प्रयोग रिएको यस निबन्धमा सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.२.१६ संयम, सच्चरित्रता र विवेक

निबन्धकार एकजना ओजश्री नामक युवकका साथमा कुनै अपरिचित व्यक्ति कहाँ जाँदाको अनुभवलाई विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । त्यस अपरिचित व्यक्तिले संसारका मान्छे, लोभ र भयका बसमा परी दुराचारी, दुःखी र दरिद्र भएको छ, अचेल मानिसमा धर्म छैन भन्ने प्रसङ्गलाई निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । मान्छेको विवेक नखुली धर्म गर्ने बुद्धिको ढोका खुल्दैन । प्रत्येक मान्छेको जीवन सुखी र आनन्दी हुन सर्वप्रथम उसमा संयम हुनुपर्दछ, सच्चरित्रताको बाटो नसमातेसम्म संसारमा सुख शान्ति र आनन्द प्राप्त हुँदैन भन्ने भाव यस निबन्धमा प्रकट भएको छ । हामीले आफूमा शान्ति र आनन्द ल्याउन आफ्ना खराब स्वभाव र चरित्रलाई त्याग्दै जानु पर्छ भन्ने उद्देश्य प्रस्तुत गरिएको यो निबन्ध सहज, स्वाभाविक र सुबोध भाषाशैलीमा विभिन्न उखान टुक्काको प्रयोग गरी लेखिएको छ ।

#### ४.२.१७ विद्यार्थीको हृदय

यस निबन्धमा निबन्धकारले जुन विद्यार्थीको हृदय सफा हुन्छ त्यो सक्कली विद्यार्थी ठहरिन्छ भन्ने विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गरेका छन् । आहार विहारको शुद्धता र अध्ययन, चिन्तन, मननको शुद्धताले मान्छेको हृदय सफा देखिन्छ । खाने घुम्ने, सुत्ने उठ्ने जस्ता आहार विहारको शुद्धताले हाम्रो हृदयलाई शुद्ध राख्न सकिन्छ भने अध्ययन चिन्तन र मननको शुद्धताले अरू कसैलाई मर्का नपर्ने गरी अझ थप राष्ट्र र विश्वका मानवजातिलाई नै फाइदा हुने गरी आफ्नो उन्नति गर्न सकिन्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । कुनै पनि विद्यार्थीले आफ्नो हृदयलाई सफा राख्न आहार विहारको शुद्धता र अध्ययन, चिन्तन मननको शुद्धताजस्ता दुवैमार्ग अपनाउनु पर्ने हुन्छ जसले गर्दा शारीरिक र मानसिक दुबै अनुशासन कायम हुन्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ । यो सरल र सुबोध भाषाशैली र लघु आयाममा संरचित निबन्ध हो ।

#### ४.२.१८ प्यारा मुनाहरूलाई

बालबालिकाहरूलाई मुख्य विषयवस्तु बनाइएको यस निबन्धमा उनीहरूलाई कहिल्यै काही पनि पीर बाधा, अड्चन नआइलागोस् भन्ने भाव निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । आफूमा भएका दुर्गुण कमीकमजोरी, अभाव आदिले गर्दा अरु धेरै साथीहरू भन्दा आफू पछाडि परेको कुरा प्रस्तुत गरेका छन् । आफूले कुनै असल काम नगरी अरूलाई असल बन्नु पर्छ भनी दिएको उपदेश निरर्थक हुन्छ त्यसैले हामीले सबभन्दा पहिले आफ्नो चरित्रलाई सुधार्नु पर्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा पाइन्छ । अरूले मेहनत गरी उन्नति गरेकोलाई आदर्श मानी आफूले पनि उन्नति गर्न तमिसनु पर्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । लघु आयाममा सरल र सुबोध भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको यस निबन्धमा उखान र टुक्काको प्रयोग पनि सहज र स्वाभाविक रूपमा गरिएको छ ।

#### ४.२.१९ पुरानो नीति

पाँच वर्षको उमेरसम्मकालाई माया गर्नु पर्ने सोह्र वर्षसम्मका केटाकेटीलाई उनीहरूको इच्छातिर मात्रै लम्कन नदिएर त्यसबेला डर, त्रासको पनि सहारा लिएर

भविष्यको निमित्त काम लाग्ने बाटो तिर जान प्रेरित गर्नु पर्छ भने सोह्र वर्ष नाघेका युवायुवती आफ्नै खुट्टामा उभिन सक्ने हुँदा उनीहरूलाई साथीसरहको व्यवहार गर्नुपर्छ भन्ने संस्कृत श्लोकको नीति सम्बन्धी भनाइलाई यहाँ विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । उक्त श्लोकमा छोराको मात्र उल्लेख गरिएको छ भनेर निबन्धकारले मनोविज्ञानले छोरा मान्छे भन्दा छोरी मान्छेको बुद्धि जाँगर, उत्साहका साथै धैर्य र ग्रहण गर्न सक्ने क्षमता छोराको भन्दा बढ्ता हुन्छ भन्ने प्रमाणित कुरालाई अगाडि ल्याएका छन् । यस निबन्धको उद्देश्य अभिभावकलाई आफ्ना सन्तानसित कुन-कुन उमेरका के कस्तो व्यवहार गर्नुपर्छ र गुरुवर्गलाई पनि शिशु कक्षादेखि माध्यमिक तहसम्मका विद्यार्थीहरूलाई कसरी व्यवहार गर्ने भन्ने शिक्षा दिनु रहेको छ । यो निबन्ध सरल, सहज, सुबोध भाषाशैलीमा लेखिएको छ ।

#### ४.२.२० अनुशासन

अनुशासनलाई मूल विषयवस्तु बनाइएको यस निबन्धमा वामन शिवराम आप्टेको संस्कृत हिन्दी कोशमा अनुशासनको अर्थ आदेश, प्रोत्साहन, पढाई सम्बन्धी नियमहरू बनाउनु, शिक्षा सम्बन्धी शब्द भन्ने रहेको कुरालाई निबन्धकारले प्रस्तुत गरेका छन् । कसैको आदेश वा शिक्षालाई मान्नु अनुशासन हो भन्दै आफैँले पालना गर्नुपर्ने र अर्काको आशा अनुसार गर्नु पर्ने गरी अनुशासन दुई प्रकारका छन् भन्ने निबन्धकारको धारणा रहेको छ । आफैँले पालना गर्नुपर्ने अनुशासन आफ्नो इच्छामा भर पर्छ भने दोस्रो किसिमको अनुशासन अर्काले आफूलाई नियम कानुनमा राख्ने खालको हुन्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । हामीले कुनै पनि उपलब्धि हासिल गर्नका साथै आफ्नो लक्ष्य हासिल गर्नको लागि अनुशासनको बाटोमा हिड्नुपर्छ भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । निबन्धको भाषाशैली सरल र सम्प्रेष्य रहेको छ ।

#### ४.२.२१ नानी शोभालाई पत्र

यो निबन्ध पत्रात्मक खालको रहेको छ । नानी शोभालाई लेखिएको पत्रमा निबन्धकारले शोभाको दुःखद दिनको चर्चा गरेका छन् यो नै निबन्धको मूल विषयवस्तु हो । दुईओटा साडी चोरेको भुट्टो अभियोगमा शोभालाई अत्यन्तै यातना दिँदा पनि हाम्रो समाज मुक बसेकोमा निबन्धकारले दुखेसो प्रकट गरेका छन् । तर

अहिले शोभालाई उसकी मालिकिनको पञ्जाबाट फुत्काएर कसैले बाल मन्दिरमा राखिदिएको छ । उसलाई बालमन्दिरमा लगाएकै दिन सम्पूर्ण जीउको रङ्गीन फोटो लिइएको थियो जसमा नीला डामहरू देखा मोटा मोटा सर्पहरू जीउभरी सल्बलाइरहेको होकी भने जस्तो भान हुन्थ्यो भन्दै निबन्धकारले अहिले त बालमन्दिरमा स्वस्थ शान्त वातावरणमा सुखसाथ बसेकी होली भन्ने आशा व्यक्त गरेको कुरालाई पत्रमा उल्लेख गरेका छन् । बाल अधिकारको ख्यालै नगरी बालबालिकाहरूलाई आफ्नो घरमा काममा लडाउने र भुठा आरोप लगाएर यातना दिने व्यक्तिहरूमाथि हाम्रो समाजले पनि प्रतिकार गर्नु पर्छ र अरुको बेदनालाई आफ्नै सम्झिएर सबै एकजुट भएर अत्याचारको विरुद्ध लड्न सक्नु पर्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । पत्रात्मक शैलीमा लेखिएको यस निबन्धमा सरल किसिमको भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.२.२२ बालक

बालबालिकाको हुकाईमा अभिभावकको अहम् भूमिका हुन्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । बालबालिकाहरूमा सरलता, कोमलता, सुमधुरता निश्चल बानी बेहोरा, बालसुलभ चञ्चलता रहने गर्दछ । असल अभिभावकत्वमा हुर्किएका बालबालिकाहरूले देश र समाजलाई राम्रो दिशा दिन सक्छन् । अभिभावकहरूले बालबालिकाको स्याहारसुसारको भन्कट अनुभव गरी त्यसबाट मुक्ति पाउन तिनलाई बोडिड/छात्रावासमा राखिदिने गर्दछन् जसले गर्दा उनीहरू समग्रतावादी नभई एकाङ्की हुन पुग्छन् भन्ने भाव यस निबन्धमा रहेको छ । हरेक बाबुआमाले आफ्ना बालबालिकाको स्याहार सुसारलाई ध्यान दिएर आफ्नै अँगालोमुनि हुर्काउनु जति श्रेयकर हुन्छ त्यति अर्काको पोल्टामा फ्याँकेर कदापि हुँदैन भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । सरल, सरस, भाषाशैलीको प्रयोगले यो निबन्ध हृदय ग्राह्य बनेको छ ।

### ४.२.२३ मचाहिँ के बन्ने ?

जीवनमा हामीले भोगनुपर्ने विभिन्न अवस्थालाई निबन्धको मूल विषयवस्तु बनाइएको छ । बाह्रवर्षको उमेरदेखि नै विद्यार्थीहरूले भविष्यप्रति विचार गर्नुपर्ने कुरामा निबन्धकारले जोड दिएका छन् । आफूले आर्जन गर्न सक्नेसम्मको विद्या हासिल गरेपछि मात्र बिहे गरेर घर व्यवहार सम्हाल्नु पर्छ भन्ने कुरा निबन्धमा देखाइएको छ । बिहे गरेपछि घरको सदस्यसंख्या थपिन्छ, त्यसैले यो अवस्था पूरा काममा तल्लीन हुनुपर्ने अवस्था हो । जबसम्म आफ्ना छोराछोरी ठूला हुँदैनन् तबसम्म घर गृहस्थीको बोझ थाम्नु पर्ने हुँदा यसैमा हाम्रो आधाभन्दा बढी उमेर समाप्त भैसकेको हुन्छ, र त्यसपछि हामी क्रमशः आफ्नै अस्तित्व गहुँगो लागि बिदा पर्खिरहेको बुढ्यौलीतिर प्रवेश गर्छौं भन्ने कुरा निबन्धमा व्यक्त गरिएको छ । आजका किशोर किशोरीहरूले जीवनको यस यात्रामा आफू चाहिँ के बन्ने ? भन्ने कुरा आजै देखि मनन गर्नुपर्छ, भन्ने सन्देश दिनु नै यस निबन्धको उद्देश्यको रूपमा रहेको छ । यस निबन्धमा सरल र हृदयग्राही भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

### ४.२.२४ विनय वा नम्रता

विनय रूपी गुणले मान्छेलाई सबैको प्यारो बनाइदिन्छ, जो मान्छे घमण्डी र अहंकारी हुन्छ, उसले विनय वा नम्रताको वास्ता कहिल्यै अनुभव गर्न पाएको हुँदैन भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । परम्परावादीहरू मान्छेमा विनय वा नम्रता हुनुपर्छ भन्छन्, तर उनीहरू आफ्नो धर्मलाई नाघ्न दिँदैनन् । अर्का थरी यस्ता मान्छे हुन्छन्, जो हरेक पुरानो कुरा काम नलाग्ने हुन्छ, भन्दै खालि नयाँ कुराको पछाडि मात्र लाग्छन्, जसले उनीहरूलाई विनय वा नम्रताको बगैचाबाट स्वतः धपाउँदै व्यक्तिवादी छाडापनतिर डोर्‍याउँछ, भन्ने मूल भाव यस निबन्धमा रहेको छ । हामीले दैनिक जीवनमा पुरातनवादी तथा व्यक्तिवादी चिन्तनशैलीका दोषहरूबाट मुक्त भएर विनय वा नम्रतालाई ग्रहण गर्नु पर्छ, भन्ने उद्देश्य रहेको छ । यसको भाषाशैली सरल खालको छ, भने ठाउँठाउँमा उखान टुक्काको पनि प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.२.२५ प्रतिभाको खानीले पनि परिश्रमको बाइसै धारा खोज्छ

यस निबन्धको विषयवस्तुका रूपमा प्रतिभाशाली व्यक्ति जो पनि हुन सक्छ तर उसले चाहिए जति परिश्रम गर्न सक्नु पर्छ र समाजका अनेक अवरोधका बीचमा पनि आफ्नो लगनलाई देखाउन सक्नु पर्छ भन्ने रहेको छ । सामान्य भन्दा विशेष किसिमका मानिस प्रतिभाशाली मानिस हुन् जसलाई हाम्रो समाजले गर्वका साथ हेर्छ । यस्तो हेराइमा पनि यथार्थवादी र आदर्शवादी दृष्टिकोण पाइन्छ । हाम्रो जस्तो समाजमा प्रतिभाशाली व्यक्तिलाई आदर्शवादी दृष्टिबाट हेरिन्छ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा रहेको छ । पूँजीवादी, समाजवादी र विकासोन्मुख मुलुकमा पनि कसैले प्रतिभाशाली बन्न प्रतिभा प्राप्त गर्ने अवसर पाउनु पर्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । जन्मदैं प्रतिभाको खानी नै लिएर आएको व्यक्ति भए पनि उसले परिश्रमको बाइसै धारा बगाउन सकेन भने कुनै उपलब्धि हासिल हुँदैन भन्ने भाव प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसैले जो व्यक्ति प्रतिभाशाली हुन चाहन्छ उसले व्यक्तिगत रूपमा असाधारण परिश्रम गर्ने बानी बसाउनु पर्छ साथै प्रतिभा प्राप्त गर्ने अवसर पाउनु पर्छ भन्ने उद्देश्यद्वारा अभिप्रेरित यो निबन्ध सहज, स्वाभाविक र सुबोध भाषाशैलीमा लेखिएको छ ।

#### ४.२.२६ ठूलो मान्छे

प्रस्तुत निबन्धको विषयवस्तुमा जुनसुकै मानिसको हृदयमा पनि ठूलो मान्छे बन्ने प्रेरणाले वास गरेको हुन्छ । कठोर परिश्रम ठूलो मान्छे बन्न चाहिने अनिवार्य कुरा हो । सामान्य मेहनत गरेर कोही पनि ठूलो मान्छे बन्न सक्दैन । सामान्य मेहनतको फल पनि सामान्यनै हुन्छ भन्ने रहेको छ । कसैले आफूमात्र ठूलो हुन खोजेर अरूलाई सानो हुन बाध्य पार्छ भने त्यसरी ठूलो हुने प्रवृत्तिको विरोध गर्नुपर्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । धेरैजनाको हितका निमित्त कोही ठूलो हुने लक्ष्य लिएर हिड्छ भने मात्र उसलाई आदर प्रेम गर्न सकिन्छ भन्ने मूल भाव यस निबन्धको रहेको छ । आफ्नो कारणबाट अरूलाई भएको वेफाइदालाई नहेरी आफूमात्र ठूलो हुने होडमा लाग्यौ भने त्यो कदापि स्वागत योग्य हुन सक्दैन भन्ने उद्देश्य रहेको छ । यो निबन्ध सरल भाषाशैलीको प्रयोगले सम्प्रेष्य र हृदयग्राही बनेको छ ।

#### ४.२.२७ दृष्टिबिन्दु

आजको प्रत्येक किशोर किशोरीहरूले तर्क दृष्टिदिनु पर्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । कैयौं किशोर किशोरीहरूलाई भोलिका संसारका कैयन कुरामा उत्सुकता हुन सक्छ भने कतिलाई त्यस्ता कुराप्रति पटककै ध्यान नगएको हुन सक्छ तर उनीहरूले भविष्यमा जीवनमाथि आइपरेका अनेक समस्यालाई समाधान गर्न सक्नु पर्छ त्यसैले किशोर किशोरीहरूले आफ्नो दृष्टिलाई खुलाउनु पर्छ भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा रहेको छ । आफ्नो देशको परिस्थितिका बारेमा सोचविचार गर्ने आफू बसेको समाज कस्तो छ, यहाँका मानिसहरूको जीवनचर्या कस्तो रहेको छ, यस प्रति आफ्ना अग्रज बुद्धिजीविहरूको धारणा के कस्तो रहेको छ, जस्ता कुरामा आजका किशोर किशोरीहरूले दृष्टि पुऱ्याउनु पर्छ भन्ने भाव यसमा रहेको छ । जसको दृष्टि खुल्छ ऊ भविष्यको बाटो तर्फ अग्रसर हुन्छ भने देश प्रतिको आफ्नो उत्तरदायित्वलाई वास्ता नगरी जसले आफू स्वयम् प्रकाशबाट थुनिने काम गर्छ ऊ आजीवन ठक्कर खाएर भासमा गाडिने गर्छ भन्ने मूल उद्देश्य निबन्धले बोकेको छ । ठाउँठाउँमा उखान टुक्काहरूको प्रयोग गरिएको यस निबन्धको भाषाशैली सरल खालको रहेको छ ।

#### ४.२.२८ योग्यताको जग हाल्नु

प्रस्तुत निबन्धमा विद्यार्थीहरूको योग्यताको जग बलियो भयो भने भविष्यमा उनीहरू त्यो कार्य क्षेत्रमा सफल हुन पुग्छन् भन्ने विषयवस्तु रहेको छ । विद्यार्थीहरू अध्ययन समाप्त गरी राष्ट्रकै विभिन्न क्षेत्रमा सङ्लग्न भई काम गर्न थाल्छन् । वैज्ञानिक अध्ययन र साधनबाट मात्र सक्कली योग्यताको जग बस्छ भन्ने धारणा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । संसारका बहुसंख्याक विद्यार्थीहरू जति योग्य हुनु पर्ने हो त्यति योग्य नभएको र उनीहरूले बेलैमा योग्यताको जग बसाउन नसकेकोमा निबन्धकारले खेद प्रकट गरेका छन् । जुन विद्यार्थी सानैदेखि आफूमाथि आइपर्ने काममा र आफूले चाख राखेका कुरामा कम्मर कसेर लाग्छ त्यति बेला देखिनै उसले आफ्नो योग्यताको जग खन्न शुरु गर्छ भन्ने भाव प्रस्तुत गरिएको छ । प्रत्येक विद्यार्थीले योग्यताको जग हाल्ने कुरामा शुरुदेखिनै विचार पुऱ्याउनु पर्छ भन्ने उद्देश्य निबन्धमा रहेको छ । सरल भाषामा लेखिएको यस निबन्धमा उखानहरूको पनि प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.२.२९ वीरत्व र सच्चरित्रता

यस निबन्धमा निबन्धकारले देशको समसामयिक वस्तुस्थितिलाई मूल विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । विगत उनन्तीस वर्षदेखि पञ्चहरूको शासन चलिरहेको प्रसङ्गलाई ल्याएर पञ्चायतका स्तम्भहरू र पञ्च इतर शक्तिका नेताहरूलाई जनताले खेप्नु परेको मार प्रति कुनै मतलब नभएको कुरामाथि व्यङ्ग्य प्रहार गरेका छन् । विदेशी भूमिमा नेपाली जनता वीरको नाउँले चिनिन्छ तर आफ्नै घरमा कसैको ज्यानै जान लागेको छ भने पनि काँध थाप्न नजाने प्रवृत्तिलाई प्रस्तुत गरिएको छ । देश सञ्चालन गर्ने नेताहरूको लापरवाहीको कारणले देश लथालिङ्ग हुने अवस्थामा नेपाली जनता मूकदर्शक भएर बस्नु हुँदैन भन्ने मूल उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । यो निबन्ध सरल, सरस र प्रतीकात्मक भाषाशैलीमा लेखिएको छ ।

#### ४.२.३० असल मानिस

कुनै पनि कार्य सम्पन्न गर्नको लागि शक्ति, योग्यता, सीप र साधनको आवश्यकता पर्दछ । असल मानिस हुनको लागि यी र यस्तै गुणहरू हासिल गरेर मात्र पुग्दैन । तिनको प्रयोग वा उपयोग माहनता तर्फ समर्पित गर्न समेत सक्नु पर्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । असल मानिसको क्रियाकलापले कुनै पनि युगमा देश र जनताले हच्किनु दच्किनु पर्दैन, उल्टै उनीहरूप्रति श्रद्धाभाव जागृत हुन्छ । वास्तविक असल मानिसप्रति अरू सर्वसाधारण त्यसै तानिन्छन् । जसले आफूमात्र होइन अरूलाई पनि सफलताको गोरेटोमा डोऱ्याउने काम गरिराखेको हुन्छ भन्ने दृष्टिकोण निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । असल मानिस हुनु भनेको महानताको बाटोतिर उन्मुख हुनु हो जसको लागि इच्छाशक्तिको आवश्यकता हुन्छ भन्ने मूल भाव यस निबन्धमा पाइन्छ । हामीले भित्री हृदयदेखिनै असल मान्छे बन्छु भन्ने इच्छाशक्तिको निर्माण गर्नु भन्ने त्यसले हाम्रो जीवनमा अत्यन्त ठूलो उपलब्धि दिन्छ भन्ने मूल उद्देश्य निबन्धमा रहेको छ । यो निबन्ध सरल र सुबोध भाषाशैलीमा संरचित छ ।

#### ४.२.३१ विद्यार्थी वर्ग र व्यक्तित्व विकास

कुनै पनि मानिसको व्यक्तित्व विकासका निम्ति उसको विद्यार्थी अवस्थाको विकास अत्यन्तै महत्त्वपूर्ण रहने गर्दछ, भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा पाइन्छ । विद्यार्थीवर्गलाई विद्यार्थी जीवनको आफ्नो स्वतन्त्र दृष्टि धेरै प्रिय र विश्वसनीय लाग्छ । उनीहरूको न्यायप्रियता, चिन्तनको स्वच्छन्दता, सत्यप्रतिको व्यापकता आस्थालाई अति ठूलो प्रशंसा प्राप्त भएको हुन्छ, भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । विद्यार्थी अवस्थाबाटैदेखि उनीहरूले आफ्नो व्यक्तित्वको विकास गर्दै लैजान्नु पर्छ । भूत, वर्तमान र भविष्य तीनैतिर दृष्टिदिन सक्ने त्रिकालदर्शी विद्यार्थी हुनुपर्छ, भन्ने भाव यस निबन्धमा रहेको पाइन्छ । विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमिबाट आएका विद्यार्थी वर्गमा अनेकथरी मत भिन्नतारहेको हालको परिप्रेक्ष्यमा विद्यार्थीहरूले देशको शैक्षिक दशालाई सुधार्दै स्वस्थ प्रतिस्पर्धा र आफूहरूबीच अझ बढी नजिक आउने वातावरण तयार गर्न अग्रसर हुनुपर्छ, भन्ने मूल उद्देश्य यसमा पाइन्छ । यस निबन्धको भाषाशैली सरल र हृदयग्राही रहेको छ ।

#### ४.२.३२ व्यक्तित्व विकास

व्यक्तित्व विकास भन्ने कुरा नेतृत्व विकाससँग सम्बन्धित कुरा हो भने नेतृत्व प्रत्येक काम सित सम्बन्धित कुरा हो । जब व्यक्तिले आफूमा नेतृत्वदायी शक्तिको विकास गर्छ, तब मात्र उसमा राम्रो व्यक्तित्वको विकास हुन्छ, भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । व्यक्ति र समाजको सम्बन्ध अत्यन्त धनिष्ट र अविभाज्य समेत भएकाले व्यक्तित्व विकास पनि केवल व्यक्तिको प्रयासको परिणामले मात्र प्राप्त हुन सक्दैन यसलाई समाज र राष्ट्रको समेत सहयोगको आवश्यकता रहने गर्दछ, भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा रहेको छ । जबसम्म राष्ट्र र समाजले उचित वातावरण तयार गर्दैन तबसम्म व्यक्तित्व विकास निरर्थक रहन्छ । त्यसैले यो व्यक्ति स्वयम्को मात्रै विकास नभई पूरै राष्ट्रको विकास हो भन्ने भाव रहेको छ । हामीले व्यक्तित्व विकासलाई अति व्यक्तिवादी दृष्टिबाट मात्र हेर्नु हुँदैन भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ । यो निबन्ध सरल, सहज सुबोध भाषाशैलीमा लेखिएको छ ।

### ४.२.३३ जातीय एकता र राष्ट्रिय विकास

नेपाल सानो मूलुक भएपनि यसमा बस्ने मानिसहरू नेपाली हुन पाएकोमा गर्वित महसुस गर्छन् भन्ने विषयवस्तु रहेको छ । यहाँ धेरै किसिमका जातका मानिसहरू बसोबास गर्छन् । यहाँको कला र संस्कृतिले सबैलाई मोहित पारेको हुन्छ, भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । हिमाल पहाड र तराइका बासिन्दाहरूमा एक आपसमा मित्रवत् भावना रहेको पाइन्छ । भाषामा भिन्नता भएपनि उनीहरूको भोगाइ एउटै छ, गरीवीको पीडा एउटै छ भन्ने भाव निबन्धमा पाइन्छ । नेपाल जति राम्रो छ त्यति नै नराम्रा मान्छेहरू विभिन्न जातजातिमा छरिएर रहेका छन् । जसले राष्ट्रिय विकासमा अवरोध उत्पन्न गराउँछन् तर नेपाल र नेपाली दुई भिन्न कुरा हुनै सक्दैनन् भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । नेपालमा विभिन्न किसिमका जातजाति, भाषाभाषि भएतापनि तिनीहरूको आपसी एकताले राष्ट्रिय विकासमा सहयोग पुग्दछ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ । सरल, सहज र स्वाभाविक शैली र प्रस्तुति यस निबन्धको वैशिष्ट्य हो ।

### ४.३ फुटकर निबन्धहरूको अध्ययन

आनन्ददेव भट्टको विभिन्न पत्रपत्रिकामा गरेर हालसम्म जम्मा तेइसओटा फुटकर निबन्धहरू प्रकाशित भएका छन् । उनका तेइसओटा निबन्धहरू मध्ये तीनओटा उच्चकोटिका निबन्धहरूलाई वस्तु, उद्देश्य र शैली अनुसार विस्तृत रूपमा विश्लेषण गरिएको छ भने बाँकी बीसओटा निबन्धहरूलाई सामान्य किसिमले विश्लेषण गरिएको छ ।

#### ४.३.१ नमस्कार

प्रस्तुत निबन्ध २०२० सालको रूपरेखा पत्रिकाको वर्ष ४, अङ्क ८, पूर्णाङ्क ३२ मा प्रकाशित भएको छ । यो निबन्धलाई भैरव अर्यालको साभग निबन्ध (२०२५) र खगेन्द्रप्रसाद लुइटेल् र डा.देवीप्रसाद गौतमको नेपाली निबन्ध (२०५४) भन्ने पुस्तकमा पनि समावेश गरिएको देखिन्छ । यो सात पृष्ठ र सात अनुच्छेदमा संरचित निबन्ध हो । एक पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मझौला आकार पाएको छ ।

यस निबन्धमा आदर र सम्मान जनाउने नमस्कार शब्दले विभिन्न सन्दर्भ र परिवेशमा विभिन्न अर्थहरू ग्रहण गर्दै विकृत रूपसमेत लिन सक्ने कुरालाई मूल विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । नमस्कार दिलैदेखि उत्पन्न हुने श्रद्धा र प्रेमको भावना बोकेको शब्द हो । तर अहिले त्यो अर्थ विकृत हुन थालेको छ र यसले प्रयत्न, अभ्यास देखावटीपन, बाध्यताका रूपमा प्रस्तुत हुन थालेको छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धकारले दिएका छन् । आफूलाई केही कामको आवश्यकता पर्‍यो भने नमस्कार गर्ने र आवश्यकता महसूस गरिएन भने चूप लागेर बस्ने स्वार्थी प्रवृत्तिका कारण नमस्कारको मर्म सही ढङ्गमा प्रस्तुत नभएको कुरा यहाँ औल्याइएको छ । नमस्कार बाध्यतावश ठूलावडालाई गरिने चाकडीका रूपमा प्रकट हुँदै गएको अभिव्यक्ति यस निबन्धमा पाइन्छ । जनताका हजारौं लाख नमस्कारले अभिवादन गरिएन भने आफ्नो अपमानै भइहाल्यो भन्ने ठान्ने मन्त्री, नेता तथा उच्च ओहोदामा बस्ने व्यक्तिहरूमाथि प्रहार गरिएको छ । नमस्कार गराइमा मात्र होइन नमस्कारको फर्काइमा पनि विभिन्न अर्थहरू रहने गर्दछन् भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ ।

यस निबन्धमा पदलोलुपता, चाकडीवाजी र पराश्रित नेपाली मानसिकतालाई देखाइएको छ । विकृतिका रूपमा विकसित हुँदै गरेको सामाजिक व्यवहारको प्रस्तुति गरिएको छ साथै नमस्कारका विभिन्न रूप ढाँचा शैली र तिनमा अन्तर्निहित विभिन्न आशयबारे टिप्पणी गर्नु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धको भाषाशैली सरल सरस खालको रहेको छ । तत्सम, तद्भव र केही आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरिएको छ । यसमा 'जसले मह काढ्छ, उसले हात चाट्छ' 'मुखमा रामराम बगलीमा छुरा' जस्ता उखान टुक्काहरूको प्रयोग गरिएको छ । सम्मान सूचक शब्द नमस्कार बाध्यता विवशताका रूपमा नभएर श्रद्धा र प्रेमका अर्थमा प्रस्तुत हुनु पर्छ भन्ने सन्देश यस निबन्धले दिएको छ ।

### ४.३.३ अध्यात्म

अध्यात्म निबन्धकार आनन्ददेव भट्टको वि.सं. २०३५ सालमा सुमन (पुष्प २, पल्लव १०) पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध हो । यो निबन्ध पाँच पृष्ठमा विस्तारित र दश अनुच्छेदमा संरचित छ । एक पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले मभौला आकार ग्रहण गरेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले अध्यात्मलाई कुनै व्यक्तिले आफ्नो जीवनको अनुशासन, ध्यान, धारणा र समाधिबाट प्राप्त गर्ने उपलब्धिका रूपमा लिएका छन् । अध्यात्मप्रेमीहरूले खाली ईश्वरलाई मात्र महत्त्व दिँदैनन् उनीहरू निष्पक्ष चिन्तन, मनन र विचारमा विश्वास गर्छन् त्यसैले मन, मस्तिष्क, चिन्तन शक्ति र दूरदृष्टिको विकास भई उनीहरूमा आत्मबल भन्नु बढ्ता हुन्छ । त्यसकारण अध्यात्मप्रेमीहरू ईश्वरवादीनै हुन्छन् भन्ने केही छैन भन्ने धारणा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । भौतिक पक्ष र आध्यात्मिक पक्ष एक अर्काका पूरक हुन् । भौतिकपक्षको जगमा आध्यात्मिक पक्षको विकास हुन्छ र आध्यात्मिक पक्षको अभिवृद्धिमा भौतिक पक्षले ज्यादै ठूलो आनन्द, शान्ति, एकाग्रता र इच्छाशक्तिको बल प्राप्त गर्दछ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । जीवनलाई उठाउन, साधारणबाट असाधारण तिर लैजान अध्यात्मकै मद्दत चाहिन्छ । अध्यात्मतिर नलागेको भौतिकवादीले खालि आफ्नो भौतिकशक्तिको बलमा लक्ष्य पूरा गर्न खोज्दछ जुन क्रियाकलाप क्षणिक हुन्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ ।

मान्छेको भाग्य निर्माता मान्छे आफै हो । मान्छेकै प्रतापले ईश्वर, भूतप्रेत, आत्मा र पुर्नजन्मको नाम सुनिएको हो त्यसैले हामी यस्ता अविस्वासिला कुराहरूतिर लागेर अन्यौल र अन्धकारमा डुब्नु हुँदैन । कैयन शोषक जाली फटाहाहरूले यस्ता कुराहरूको तारिफ गरेर फाइदा उठाएका छन् तर यस्ता भ्रम अज्ञान, कल्पना र भावुकतालाई छोडी यथार्थमा आउनु पर्छ र भौतिक कार्यहरूलाई सन्तुलित राखी बौद्धिक र भावनात्मक क्षेत्रलाई बढाएर मानवतालाई फुकाउँदै लैजानु पर्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ ।

प्रस्तुत निबन्धमा सरल, सरस र रोचक भाषाशैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । यसमा प्रयोग गरिएका विभिन्न स्रोतका भाषाबाट आएका आगन्तुक शब्द र भर्रा नेपाली शब्दका साथै कतिपय स्थानमा प्रयुक्त तत्सम शब्दले निबन्धमा रोचकता थपेको छ । हामीले जीवनमा अध्यात्मलाई स्वीकार गर्नुपर्छ तर त्यो अध्यात्म भित्र अन्धविश्वास हुनु हुँदैन भन्ने अभिप्राय यस निबन्धमा पाइन्छ ।

### ४.३.३ गतिशीलता र चञ्चलता

प्रस्तुत निबन्ध २०६५ सालको गरिमा (वर्ष २६, अङ्क, पूर्णाङ्क ३०९ भदौ) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यो निबन्ध चार पृष्ठमा विस्तारित र सात

अनुच्छेदमा संरचित छ । दुई पदीय शीर्षक रहेको यस निबन्धले लघु आयाम ग्रहण गरेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले समसामयिक विषयवस्तुलाई मूल रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । गतिशीलताले व्यापक अर्थ ग्रहण गर्छ भने चञ्चलताले सीमित अर्थ बोकेको हुन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । गतिशीलतामा 'प्र' र 'अ' जस्ता उपसर्ग लागेमा त्यसले भिन्दा भिन्दै अर्थ दिन्छ भन्ने कुरा निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । प्रगतिशीलताले गतिशीलतालाई मात्र नबुझाएर अग्रगामी धारणालाई बुझाउँछ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । हाम्रो समाजमा गतिशील शक्तिका साथै अगतिशील शक्तिहरू पनि क्रियाशिल रहेको पाइन्छ र त्यस्ता अगतिशील शासकहरूले गरिब जनताका आवाज नसुनेर कानमा तेल हालेर बसेको स्थितिलाई निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । बहुसङ्ख्यक शोषित जनताको गतिशील शक्ति आफ्नो माग पुरा नगराउन्जेल चूप नलाग्ने दृढताकासाथ अधि बढ्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा पाइन्छ ।

यस निबन्धको मुख्य उद्देश्यको रूपमा समाजका र जनताका सेवक शासकहरूले जनताको प्रशासनलाई निष्पक्ष र दरिलो किसिमले देश र जनताको पक्षमा हाँकनसके पसिनाप्रेमी जनताको गतिशीलताले प्रगतिशीलताको बाटो समाती पूर्ण समानताको वातावरण पैदा हुन्छ भन्ने रहेको छ ।

यस निबन्धमा सरल र सरस भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ । निबन्धकारको भाषिक प्रयोगको क्षमतालाई किटान गर्नको लागि यसमा प्रयोग गरिएको भाषाशैलीले सहयोग गरेको छ । यसमा तत्सम शब्दका साथै आगन्तुक र भर्ना नेपाली शब्दहरूको प्रयोगले गर्दा निबन्ध रोचक बनेको छ । निबन्धकारको भाषिक कौशलले गर्दा यसका बीचबीचमा बिम्बात्मक भाषाको पनि प्रयोग पाइन्छ । हामीले गतिशील शक्तिको माध्यमबाट अगतिशील शक्तिलाई परास्त गर्न पर्छ भन्ने सन्देश दिनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ ।

#### ४.३.४ ब्रतबन्ध

प्रस्तुत निबन्ध २०१५ सालको धरती मासिक पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो । यसमा भट्टले नेपाली समाजमा रहेको परम्परालाई झल्काउन खोजेका छन् । तत्कालीन समयमा मानिसहरू धर्मप्रति बढी आस्थावान भएको हुँदा सानै उमेरमा

ब्रतबन्ध गरिन्थ्यो र यो ब्राह्मण समाजमा सबैभन्दा बढी प्रचलित थियो भन्ने कुरा यसको प्रमुख विषयवस्तु रहेको छ । प्रस्तुत निबन्धको मुख्य उद्देश्य हामीले आधुनिकताको नक्कल गरेर परम्परागत मान्यतालाई भत्काउनु हुँदैन बरु यसमा केही सुधार ल्याएर वर्तमान समाजमा आफ्नो धर्म परम्परा र रीतिरिवाजलाई जोगाइराख्नु पर्छ भन्ने रहेको छ । यस निबन्धमा सरल, सरस र रोचक भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.३.५ कामवासना र जीवन

प्रस्तुत निबन्ध २०१९ सालको **रूपरेखा** (वर्ष ३, अङ्क ८) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यस निबन्धमा निबन्धकारले कामवासना र जीवनको सम्बन्धलाई मूल विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । जीवनका आवश्यक अरु धेरै क्रियाकलाप जस्तै कामवासना पनि जीवन सार्थक बनाउने एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व हो तर कामवासनाको तृप्ति मात्र जीवन होइन भन्ने धारणा निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । जुन मान्छेले खानु बस्नु र कामवासना तृप्त गर्नु सिवाय अरु केही गर्दैन उसले समाजमा कुनै उन्नति गर्न सक्दैन त्यसैले कामवासना सीमित र स्वस्थ हुनुपर्छ । यसको तृष्णालाई पूरा गर्नु जीवनको एउटा नभइ नहुने माग पूर्ति मात्र हो भन्ने देखाउनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ । प्रस्तुत निबन्धको भाषाशैली सरल, सरस, प्राञ्जल, सुबोध र रागात्मक किसिमको रहेको छ ।

#### ४.३.६ नदीका वारपार

यो निबन्ध २०२२ सालको **मालिङ्गो** पत्रिकामा प्रकाशित भएको निबन्ध हो । यस निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नी बिर्सिएकी मायालु प्रति पोखेको गुनासोलाई मूल विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । पहिले यथार्थलाई नस्वीकारेर अर्कै बाटो लाग्ने प्रेयसीलाई माया भन्ने कुरा एकचोटि गरिन्छ तर त्यसलाई टुक्राएपछि माया सधैं सधैं जाग्दैन भन्ने कुरा व्यक्त गरेका छन् । आफ्ना प्रत्येक अङ्गमा घमण्ड गर्ने प्रेयसी जसले प्रेम गर्न जानेकै छैन भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । आफूले उसलाई माया गर्नु भूल भएको र अहिले उसको छलको बहिष्कार गरेर अर्को जीवन र साँचो मायाको अविष्कारका निम्ति प्रयत्नरत रहेको कुरा निबन्धमा प्रस्तुत भएको छ । कसैले धोका दियो भनेर हामीले मन दुखाउनु हुँदैन सृष्टि कहिल्यै रोकिदैन

त्यसैले हामीले मनमा सन्तुलन ल्याएर श्रम गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश दिनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ । यस निबन्धको भाषाशैली सरल खालको रहेको छ ।

#### ४.३.७ एउटा प्रश्न

यो २०२३ सालको रत्नश्री (वर्ष ४, अङ्क ३) पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध हो । यस निबन्धमा निबन्धकारले आफ्नी श्रीमतीले आज केके कुरा खान दिउ ? भनेर राखेको प्रश्नलाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । आफ्नी श्रीमतीको प्रश्नले आफूलाई उत्तर खोज्न बाध्य पारेको र यो अनन्तसम्मलाई पुग्ने प्रश्न भएकाले यसको उत्तर पनि यो वा ऊ खान्छु भनेर पूर्ण हुँदैन भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । श्रीमतीको के खान दिउ ? भन्ने प्रश्नमा निबन्धकारले श्रीमतीसँग आजसम्म साँची राखेको एउटा हाँसो माग्छन् जसमा श्रीमतीको पूर्ण व्यक्तित्व होस् र उसको हाँसोको प्रकाशमा आफूले राम्रा राम्रा काम गर्न सकूँ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । यस निबन्धमा व्यक्तिलाई खानासँग भन्दा पारिवारिक सुख भयो भने आफ्नो मन मस्तिष्कलाई सम्पूर्ण मानवको हितका निम्ति सुम्पन सक्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । यो निबन्ध सरल, सहज, सुबोध भाषाशैलीमा लेखिएको छ ।

#### ४.३.८ त्यो तारा जो मेरो पोल्टोमा ओर्लिहाल्यो

प्रस्तुत निबन्ध २०२५ सालको प्रकाशपुञ्ज पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । छोरा रुपी तारा आफ्नो पोल्टोमा ओर्लिदाको रमाइलो अनुभूतिलाई निबन्धको मूल विषयवस्तु बनाइएको छ । भविष्यको एउटा अङ्ग र आफ्नो विलक्षण व्यक्तित्व भएको उसको चञ्चलता र आकर्षणमा आफू मात्रै होइन अरु व्यक्ति पनि लालायित भएको कुरा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । आफ्नो दैलोमा आएको पाहुनाको निरपराध यात्रा स्वतन्त्र रहने छ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ भने उसको आगमनमा आफू बाबु हुन पाएकोमा निबन्धकार निकै हर्षित छन् । यस निबन्धको मूल उद्देश्य बाबु आमा मार्ग निर्देशनका सक्कली अभिभावक हुने हुनाले हामीले उनीहरूको नित्य सेवा गरेर श्रद्धा र प्रेम अर्पण गर्नु पर्दछ भन्ने रहेको छ । यस निबन्धमा सरल किसिमको भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

### ४.३.९ प्रतिभा र जीवन पद्धति

प्रस्तुत निबन्ध २०३० सालको मधुपर्क (वर्ष ६, अङ्क ७) पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो । प्रतिभा र जीवनपद्धति एक आपसमा सम्बन्धित जीवनलाई चिनाउने आधारहरू हुन् भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । यदी हामीमा प्रतिभा भएन भने कुनै कुरालाई ग्रहण गर्न र त्यसलाई आत्मसात गरी प्रस्तुत गर्न सकिदैन भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । प्रतिभालाई हुर्कने र फक्रने मौका प्राप्त हुनु पर्छ नत्र त्यसले कुवाटो समाच्छ । जुन देशले जति धेरै प्रतिभाशाली व्यक्तिहरू जन्माउन सक्यो त्यो देश त्यतिनै भाग्यशाली हुन्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । एक थरी प्रतिभावान व्यक्तिले प्रत्येक कार्यलाई आफ्नो फाइदा वेफाइदाका हिसाबले हेर्ने गर्दछ भने अर्को थरी प्रतिभावान व्यक्तिले समाजलाई अहित हुने कुरा नगरीकन अर्काको फाइदालाई नै आफ्नो फाइदा सम्झी त्याग र तपस्याको बाटोमा हिड्छ भन्ने भाव यसमा पाइन्छ । जीवनमा जुन प्रतिभाले आफूलाई भोगवादी जीवन पद्धतिको सदस्य बनाउँछ त्यस्तो प्रतिभालाई त्यागेर त्यागमय जीवन पद्धतिलाई अँगाल्नु पर्छ भन्ने उद्देश्य यसमा रहेको छ । यो निबन्धको भाषाशैली सरल र सम्प्रेष्य रहेको छ ।

### ४.३.१० बन्धन र मुक्ति

प्रस्तुत निबन्ध २०३१ असोज-कार्तिकको रत्नश्री पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यस निबन्धमा बन्धनले हाम्रो उत्साह सेलाउन लगाउँछ भने मुक्तिले हामीलाई क्रियाशील बनाउन सहयोग पुऱ्याउँदछ भन्ने मूल विषयवस्तु रहेको छ । मुक्तिमा गति हुनुपर्छ अडकाउ हुनु हुँदैन हामीभित्रको चेतना र प्रयत्नले बन्धनलाई एक न एकदिन अवश्य छिनाल्छ त्यसैले बन्धन जीवनसँग बस्न सक्दैन भन्ने भाव निबन्धमा पाइन्छ । बन्धन र मुक्ति दुई विपरीत कुरा हुन् एउटा पूर्व हो भने अर्को पश्चिम तर यी दुईको केन्द्र बिन्दु भने एउटै हो जसले त्यो केन्द्रबिन्दु पहिले नाघ्छ व्यक्ति पनि त्यसैमा केन्द्रित हुन्छ भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा रहेको छ । हामीले आफूलाई गतिशील, क्रियाशील, उद्यमी र लगनशील बनाएमा हामी स्वतः बन्धनबाट मुक्तिको बाटोतर्फ अग्रसर हुन सक्छौं भन्ने उद्देश्य यस निबन्धको रहेको छ । यस निबन्धको भाषाशैली सरल र हृदयग्राही रहेको छ ।

#### ४.३.११ कुण्ठाका विरुद्ध

यो निबन्ध वि.सं. २०३२ सालमा मधुपर्क (वर्ष ७, अङ्क १२, वैशाख) पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध हो । कुण्ठा मानव सभ्यताको विकास सँगसँगै देखिने कुरा भएकाले यो व्यापक र गम्भीर कुरा हो भन्ने विषयवस्तु यस निबन्धमा पाइन्छ । मूल व्यक्तिको चरित्र र त्यसलाई निर्माण गर्ने समाजमा कुण्ठाहरू रहेका हुन्छन् । कुण्ठाको विकास भएको व्यक्ति निष्क्रिय हुन्छ तसर्थ समाजमा व्यक्तिले आफ्नो चाख र क्षमता अनुकूलको लक्ष्य निर्धारित गर्न पाउनु पर्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । शारीरिक मानसिक र बौद्धिक क्रियाकलापको गडबडीबाट कुण्ठा उत्पन्न हुन्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा पाइन्छ । यस निबन्धमा प्रत्येक व्यक्तिले समाजलाई परिवर्तन गर्ने सिलसिलामा प्रगतिशील पाइलाहरू नसारुन्जेल समाजमा रहेको कुण्ठा हट्न सक्दैन भन्ने सन्देश दिनु यसको उद्देश्य रहेको छ । यो निबन्धको भाषाशैली सरल, सुबोध किसिमको छ ।

#### ४.३.१२ काम, माम र नाम

प्रस्तुत निबन्ध २०३५ सालको श्रृङ्खला (धारा ३, पुष) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यस निबन्धमा निबन्धकारले जब कुनै मानिस जन्मन्छ त्यसपछि उसलाई काम र मामको आवश्यकता पर्दछ र काम र माम प्राप्त गरेपछि उसलाई आफू दीर्घजीवी बन्नका लागि मामको पनि जरुरी पर्छ भन्ने कुरा मूल विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । मानिसको आफ्नो भविष्य सपार्ने चाहनाले नै ऊ दीर्घायु हुन्छ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । यदि मानिसलाई भविष्यको चिन्ता हुँदैनथ्यो भने ऊ पशुजस्तै वर्तमानमा सीमित रहन्थ्यो । कामदेखि टाढा मानिसको जीवन सम्भव नहुने वा कामबिनाको जीवन जीउदै मर्नु हो भन्ने कुराको जानकारी गराउँदै काम र नामका बीच एकदमै सम्बन्ध रहेको हुन्छ र काम र नामका बीचमा मामलाई बिर्सी जीवन खराब गर्नु हुँदैन भन्ने विचार व्यक्त गरेका छन् । एउटा मानिसको जीवनमा काम र माम जतिकै नामको पनि एकदमै जरुरी हुन्छ यी सबै एक अर्काका पूरकका रूपमा रहेका हुन्छन् भन्ने जानकारी पाठकलाई दिने उद्देश्यले निबन्ध रचना गरिएको छ । यस निबन्धमा सहज, सरल र प्रवाहपूर्ण भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

### ४.३.१३ उपवास

यो निबन्ध २०४३ सालको गरिमा (वर्ष ४, अङ्क ७, पूर्णाङ्क ४३, असार) पत्रिकामा प्रकाशित भएको हो । यसमा निबन्धकारले आफू लगायतका साथीहरू जेल भित्र बस्दा राखेको उपवास कार्यक्रमलाई मूल विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । जेलको चार पर्खाल भित्र जबरजस्ती कोचेर कायल पार्दा आफूहरूले साताको एक दिन शनिवार उपवास गर्ने फैसला गरेको कुरालाई निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । भात खान बोलाउँदा आफूहरूको मुख रसाएर त्यतैतिर आँखा र कान तानिए तापनि आफ्नो सामुहिक प्रतिज्ञा फेर्न तयार नभएको कुरालाई निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । उपवास नबसेका अरू साथीहरूले भान्साको बयान गर्न थालेर आफ्नो मनोबल भग्न खोजेपनि आफूहरू आफ्नो प्रतिज्ञामा दृढ रहेर साँभ्र परेपछि मात्र फलाहार गरेको प्रसङ्गलाई निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । हाम्रो निर्णय हाम्रो सबभन्दा बलियो साथी हो । जसले तर्क र बुद्धिका बलले ज्ञान र शिक्षा दिएर हामीभित्रको अन्धकार र कमजोरीहरू हटाउँछ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । यस निबन्धमा उखान टुक्काको साथै सरल भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

### ४.३.१४ सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्

प्रस्तुत निबन्ध २०४५ सालको जनमत (वर्ष ६, अङ्क ३-४) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । साहित्यमा सत्यम्, शिवम् र सुन्दरम् जस्ता तीनै कुरा समावेश हुनु पर्छ भन्ने विषयवस्तु त्यस निबन्धमा पाइन्छ । सत्यम्, शिवम् र सुन्दरम्को प्रयोग जसले आंशिक रूपमा गरेको हुन्छ त्यो अर्द्धसत्य वा असत्य हुन्छ र जसले राम्रोसँग गर्छ त्यो साहित्य सत्य हुन्छ भन्ने दृष्टिकोण निबन्धकारको रहेको छ । साहित्यकारले आफ्नो विषयवस्तुलाई साहित्यिक रूपद्विंदा विषयवस्तुको भित्र नपसी त्यसलाई अभिव्यक्त गर्नु भन्ने त्यसले समग्रताको बोध गराउन सक्दैन भन्ने प्रस्तुति यसमा पाइन्छ । साहित्य जीवनका निमित्त हुनुपर्छ साथै श्रमजीवी मात्रको सेवामा अर्पित हुनुपर्छ भन्ने भाव यस निबन्धमा पाइन्छ । प्रत्येक साहित्य स्रष्टाले सत्यम्, शिवम् र सुन्दरम् बारे निरन्तर अध्ययन, चिन्तन मनन गरी आफ्नै सिर्जनात्मक निर्णय दिइ उत्कृष्ट साहित्यको सिर्जना गर्नुपर्छ भन्ने उद्देश्य यस

निबन्धको रहेको छ । यस निबन्धमा सरल र सुबोध भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.३.१५ मृत्यु पनि यति सरल हुन सक्तो रहेछ

प्रस्तुत निबन्ध २०४५ सालको **नियोजन** (वर्ष १८, अङ्क ३) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यो संस्मरणात्मक निबन्ध हो । यसमा निबन्धकारले सरला थापाको मृत्युलाई मार्मिक ढङ्गले प्रस्तुत गरेका छन् । एउटी मनोविज्ञान पढाउने क्याम्पसकी शिक्षिका सरला थापा स्फूर्ति र जाँगर उत्साह र उमङ्ग, आत्मविश्वास र सजगता, क्रियाशिलता र सद्भावना सबै कुराको गुणात्मक एउटा प्रेरक तत्त्व थिइन् भन्ने कुरा निबन्धमा पाइन्छ । दुई छोरा छोरीकी आमा सरला थापा छोरोले क्यानाडाबाट पठाएको चिठीको वाचन सुन्दै उहाँले कुनबेला प्राण छोड्नु भो स्वयं चिठी पढेर सुनाउनेलाई समेत थाहा भएन भनेर उहाँको सरल मृत्युलाई यहाँ देखाइएको छ । मान्छे मर्छ र पनि मान्छेसितको सम्झना मर्दैन बरु उल्टै नजीक नजीक भई सधैं भन्दै क्यान्सर पिडीत सरला थापा सधैंका निमित्त गएपनि आफ्नो सम्झनामा सधैं उहाँ रहिरहनुहुन्छ भन्ने भाव निबन्धकारले यस निबन्धमा प्रस्तुत गरेका छन् । यस निबन्धको भाषाशैली सरल र मार्मिक रहेको छ ।

#### ४.३.१६ मानव समूह

प्रस्तुत निबन्ध २०४६ सालको **मधुपर्क** (वर्ष २२, अङ्क ६, पूर्णाङ्क २४५) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यस निबन्धमा निबन्धकारले हनुमानढोका तथा वसन्तपुर जाँदा भेटिएका परिचित अपरिचित व्यक्तिहरूसँगको भेटघाटलाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । बाटोमा हिँड्दा हिँड्दै निबन्धकारको एकजना महिलासँग भेट हुन्छ । एक आपसमा घर परिवार र शिक्षादीक्षाको कुराकानी हुन्छ । त्यतिकैमा सुपरिचित मित्र, बैद्यजी र परिचित युवकसँग निबन्धकारको भेट भएको प्रसङ्गलाई निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ । आफू मानव सौन्दर्यताको अत्यन्त भोको भएको बताउने निबन्धकारले यस निबन्धमा शून्य मगज लिएर पनि जनसमूह बीचबीचबाट हिँड्न सकेमा अनेक नयाँ नयाँ सूचना र विचारले दिमाग भरिन्छ भन्ने कुरालाई प्रस्तुत गरेका छन् । कुनै पनि मानिसले मानव समूहभित्र बरोबर हेलिनु अत्यन्त

लाभकारी हुन्छ भन्ने कुरालाई मूल उद्देश्यको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । यस निबन्धको भाषाशैली सरल र सम्प्रेष्य रहेको छ ।

#### ४.३.१७ साहित्यमा चिन्तन

यो निबन्ध २०४९ सालको गोधूलि (अङ्क २२) चौमासिक पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यस निबन्धमा साहित्य र चिन्तनलाई एकअर्कबाट अलग राख्न सकिदैन यी एक अर्काका पूरकका रूपमा रहेका हुन्छन् भन्ने विषयवस्तु रहेको छ । साहित्यमा चिन्तनको अपेक्षा गरिन्छ । विना चिन्तन कुनै कुराको रहस्य पत्ता लगाउन सकिदैन । गम्भीर खालको साहित्य रचना गर्नको लागि पनि चिन्तनको आवश्यकता पर्छ भन्ने धारणा निबन्धकारको रहेको छ । चिन्तन साहित्यमा मात्रै सीमित हुँदैन कुनै पनि विषयमा चिन्तन हुन सक्छ । जुन विषयमा चिन्तन हुँदैन त्यो विषय कम महत्त्वको र कम प्रभावकारी हुन्छ भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा पाइन्छ । जुन साहित्यकारमा चिन्तनको जति बढी भुकाउ हुन्छ उसले त्यतिनै मात्रामा श्रेष्ठ साहित्यको रचना गर्न सक्छ भन्ने सन्देश दिनु यस निबन्धको उद्देश्य रहेको छ । प्रस्तुत निबन्धमा उखान टुक्काको साथै सरल र सरस भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.३.१८ रूख र जङ्गल

प्रस्तुत निबन्ध २०५२ सालको गरिमा (वर्ष १३, अङ्क १२, पूर्णाङ्क १५६, मङ्सीर) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यसमा निबन्धकारले रूख र जङ्गल बीचको सम्बन्धलाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । रूख एकलो हो र जङ्गल अनेक जङ्गल एउटा अस्तित्व हो भने रूखहरू अनेक भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । जङ्गलभित्र रूखहरू छन् रूखभित्र जङ्गल छैन तर रूखहरू विना जङ्गलको अस्तित्व छैन भन्ने धारणा निबन्धमा पाइन्छ । व्यक्तिहरू नमिली राष्ट्र हुँदैन तर राष्ट्र नै व्यक्ति होइन । व्यक्तिको मनोभावनाबाट राष्ट्रको मनोभावनाको नमूना पाउन सकिन्छ तर राष्ट्रको मनोभावना व्यक्तिको मनोभावना भन्दा ज्यादै ठूलो हुन्छ भनेर रूखलाई व्यक्तिसँग र जङ्गललाई राष्ट्रसँग तुलना गरिएको छ । आफूलाई रूख र जङ्गलको समस्याले सताउने गरेको रूखको सरलता र जङ्गलको जटिलता, मृत्युको भय, सम्पर्क सेवा र परिचयको अभावले गर्दा हो भन्ने प्रस्तुति

निबन्धमा पाइन्छ । यस निबन्धमा सिङ्गोलाई चिन्नु जति जरुरी छ टुकालाई चिन्नु त्यतिनै जरुरी हुन्छ भन्ने देखाउनु उद्देश्य रहेको छ । यो निबन्धको भाषाशैली सरल र सम्प्रेष्य रहेको छ ।

#### ४.३.१९ लेखक बन्ने इच्छा

यो निबन्ध २०५६ सालको गरिमा (वर्ष १७, अङ्क १२, पूर्णाङ्क २०४, मङ्सिर) पत्रिकामा प्रकाशित छ । यस निबन्धमा निबन्धकारले एक अपरिचित महिलासँग भएको परिचयात्मक छलफललाई मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । उक्त महिलाले १५ वर्षसम्म एउटा क्याम्पसमा पढाएको कुरालाई निकै आत्मविश्वासका साथ भन्दा लेखकलाई उक्त महिलाको आत्मविश्वास र मेहनतको कथा सुनेर आफूले त्यस्तो श्रम गर्न नसकेको त्यति ज्ञान र क्षमता आर्जन गर्न नसकेको र पढाउन जाँदा पनि आफूमा त्यति धेरै आत्मविश्वास नभएको कुरालाई निबन्धमा प्रस्तुत गरेका छन् । नारी भएर घरधन्दाका साथै आफ्नो जागिरे जीवनलाई पनि धान्नु पर्छ भन्ने धारणा भएकी उक्त महिलामा आत्मविश्वास परिश्रमशीलता, योग्यता र कुशलता भएको अनुभव निबन्धकारले गरेका छन् । आफूले केही नलेखेको बताउने उक्त महिलाले के लेखक बन्ने इच्छा गर्लिन् ? भन्ने अभिव्यक्ति निबन्धमा पाइन्छ । यस निबन्धमा छोरी मान्छे हुँ भनेर महिलाहरूले परिश्रम गर्न डराउन नहुने र हरेक काममा अग्रसर हुनुपर्छ भन्ने सन्देश दिनु निबन्धको उद्देश्य रहेको छ । प्रस्तुत निबन्धको भाषाशैली सरल, सम्प्रेष्य र हृदयग्राही रहेको छ ।

#### ४.३.२० जीवनको लक्ष्य

प्रस्तुत निबन्ध २०५९ सालको दोभान (वर्ष ३, अङ्क ३) पत्रिकामा प्रकाशित छ । हामीले जीवनको लक्ष्य के लाई मान्ने भन्ने कुरालाई विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । आजको मानिसले जीवन के हो भन्ने आफैँले बुझेको छैन । मान्छेको सूचना लिने र त्यसबारे चिन्तन मनन गर्ने शक्तिका आधारमा उसले आफू, आफ्नो वा सम्पूर्ण मानवजीवन बारेको आफ्नो धारणा बनाउन सक्छ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । विश्वमा व्याप्त युद्ध, अशान्ति र योग, भोक, शोकलाई देख्दा जीवनको लक्ष्य पनि शान्ति र समानता हो भन्ने कुरा निबन्धकारले व्यक्त गरेका छन् । मानिसलाई अविवेकको बाटोबाट विवेकको बाटोमा ओराल्न सक्थौ भने उससित

भएको जुनसुकै उर्जा, क्षमता, प्रतिभाबाट मानव समाजलाई फाइदा हुन्छ भन्ने मूल भाव यस निबन्धमा पाइन्छ । मानिसले धेरै मनोगतवादी हुनु हुँदैन उसले वस्तुवादी मर्यादावादी तथ्यबाट सत्य पत्ता लगाउने मार्गतिर हिँड्नु पर्छ भन्ने उद्देश्य निबन्धमा पाइन्छ । बौद्धिक र तार्किक अभिव्यक्तिका कारण केही क्लिष्ट बनेको यस निबन्धको भाषाशैली परिष्कृत छ ।

#### ४.३.२१ एउटा लोकतान्त्रिक छलफल

प्रस्तुत निबन्ध २०६४ सालमा शारदा (वर्ष १, अङ्क ९, असोज) र २०६५ सालमा मधुपर्क (वर्ष ४१, अङ्क ५, पूर्णाङ्क ४७२ असोज) गरी दुईवटा पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । निबन्धमा निबन्धकारले हाम्रो समाजमा हुने कुनै विषयका बारेमा राम्रो नराम्रो, काम लाग्ने नलाग्ने कुराका बारेमा गरिने छलफललाई मुख्य विषयवस्तु बनाएका छन् । मानव जीवनको इतिहासमा पक्ष विपक्षका कुराहरू, मनपर्ने र नपर्ने कुरा परापूर्व कालदेखि चल्दै आएका छन् र समाजमा जुन कुरामा साभ्का सहमति नभएर विभिन्न मत खडा हुन्छन् त्यस बेला समाजमा जुन विचारले अत्यधिक बहुमत बटुल्छ त्यसलाई समाजले तत्कालै स्वीकार्छ भन्ने प्रस्तुति पाइन्छ । समाजमा कसैले पनि आफ्नो विचार मात्र लाद्न खोजेमा त्यो निरङ्कुशतन्त्र चलाउन खोजेको ठहर्छ र त्यस्ता विरोधी विचारलाई ढाल्न समाज सधैं अग्रसर हुन्छ भन्ने धारणा निबन्धमा पाइन्छ । जुन कुरा हाम्रो ज्ञानबाट अभै टाढा छ त्यसमा हामीले यही हो भनी ठोकुवा गर्न हुँदैन त्यसैले स्पष्ट जानेका कुरामा साभ्का सहमति गरौं र प्रष्ट हुन बाँकी कुरामा हामीले भोलिका निम्ति छलफलको विषय बनाऔं भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा पाइन्छ । सरल भाषाशैलीमा लेखिएको यस निबन्धमा ठाउँ ठाउँमा उखान टुक्काको पनि प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.३.२२ काम गर तर फलको आशा नराख

प्रस्तुत निबन्ध २०६४ सालको शारदा (वर्ष २, अङ्क ३) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । यस निबन्धमा काम गरेर फलको आश राख्ने मानवीय प्रवृत्तिलाई मूल विषयवस्तुको रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । हामीले कुनै पनि कार्य गर्दा निस्वार्थ भावले गर्नुपर्छ जुन अरूको लागि पनि उपयोगी हुन्छ भन्ने प्रस्तुति निबन्धमा पाइन्छ । हामीले कुनै कार्य गर्दा त्यसले हामीलाई कुनै उपलब्धि नदिएता पनि सम्पूर्ण मानवसमाजलाई गतिशीलताको बाटोतिर अग्रसर गराउन सक्छ भने त्यस्तो

काम गर्दा हामीले फलको आशा गर्न नहुने कुरालाई निबन्धकारले पहिले आफूले राम्रा राम्रा काम गर्न सक्नु पर्छ भन्ने उद्देश्य यस निबन्धमा रहेको छ । प्रस्तुत निबन्धमा सरल, सरस, सम्प्रेष्य भाषाशैलीको प्रयोग गरिएको छ ।

#### ४.३.२३ न खाइ सक्के, न थाइ सक्के

प्रस्तुत निबन्ध २०६५ सालको मिर्मिरे (वर्ष ३७ अङ्क ४, पूर्णाङ्क २६५) पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध हो । यस निबन्धमा निबन्धकारले 'न खाइ सक्के, न थाइ सक्के' भन्ने वैतडेली वा डोट्याली भाषाको उखानलाई मुख्य विषयवस्तु बनाएका छन् । यसमा निबन्धकारले यस उखानले एकातिर मानव सभ्यताको विकासको सङ्केत भएको तथा अर्कोतिर मानव जीवनमा आउने व्यवहारलाई सङ्केत गरेको कुरालाई प्रष्ट पारेका छन् । मानव सभ्यताको विकासक्रममा भनेको बेला खानेकुरा नपाउने हुँदा भेटेको बेलामा पेटभरी खानुपर्ने अवस्था हुन सक्ने तथा पेटभरी खाई शरीर बलियो भएपछि भोली आउने गाह्रो, अष्टेरो काममा हिम्मत, आँट जुटाउन सकिने विचार व्यक्त गरेका छन् । यस उखानले वास्तवमा भन्न खोजेको कुरा मरणशील मानिसले आफूलाई दीर्घजीवि राख्ने हो भने धैर्य पनि प्राप्त गर्दै जानुपर्छ भन्ने कुरा निबन्धकारले जानकारी दिएका छन् । सरल भाषाशैलीको प्रस्तुत निबन्ध 'न खाइ सक्के, न थाइ सक्के' उखानको स्पष्ट जानकारी पाठकलाई दिनु उद्देश्य रहेको देखिन्छ ।

#### ४.४ निष्कर्ष

निबन्धकार आनन्ददेव भट्टले समसामयिक विषयवस्तुलाई आफ्ना निबन्धमा समेटेका छन् । सरल, सहज भाषाशैलीमा निबन्ध लेख्ने भट्ट निबन्धकारका रूपमा सफल देखिन्छ । उनको समग्र निबन्धहरूलाई हेर्दा उच्च, मध्यम र सामान्य गरी तीन किसिमका देखिन्छन् । भट्टको 'कामवासना र जीवन', 'नमस्कार', 'नौलो विहान', 'शिथिलता र घचघच्याई', 'के हामी आशावादी पाइलो सार्न सक्छौं?', 'प्रेरणाको स्रोत', 'व्यक्तित्व विकास', 'चरित्रनिर्माणको आवश्यकता', 'अध्यात्म', 'गतिशीलता र चञ्चलता' जस्ता निबन्धहरू उच्चकोटिका निबन्धहरू हुन् । 'जीवनको आगो', 'स्मरण-शक्ति', 'निद्रा', 'आमा', 'बाहिरी किताब पढ्ने बानी', 'परीक्षा र चोरी', 'उपवास', 'लेखक बन्ने इच्छा' जस्ता निबन्धहरू मध्यमकोटिका निबन्ध अन्तर्गत पर्दछन् भने 'आफ्नै मायाले छोएर', 'दरिद्रलेखक', 'विद्यार्थीकालको सम्भना', 'पढ्ने बानी' 'खाजा' जस्ता निबन्धहरू सामान्य कोटिका निबन्ध अन्तर्गत पर्दछन् ।

## परिच्छेद - पाँच

### उपसंहार

वि.सं. १९९३ सालमा जुम्ला जिल्लाको सदरमुकाम खलङ्गामा जन्मिएका आनन्ददेव भट्टले स्वदेश र विदेशमा समेत गएर अध्ययन गरेका छन् । उनले भारतको पटना विश्वविद्यालयबाट अङ्ग्रेजी विषयमा स्नातकोत्तर, बेलायतको लिड्स विश्वविद्यालयबाट पाठ्यक्रमबारे पोस्ट ग्राजुएट र लन्डन विश्वविद्यालयबाट पाठ्यक्रम तथा विकासोन्मुख देशमा शिक्षा विषयमा स्नातकोत्तरसम्मको औपचारिक अध्ययन गरेका छन् । भट्टको साहित्य सृजनाको आरम्भ २०१३ सालमा कविता विधाबाट भएको हो । वि.सं. २०१५ देखि २०५० सालसम्म अध्यापन क्षेत्रमा लागेका भट्टले आफ्ना गुरु कवि माधवप्रसाद देवकोटाबाट साहित्य सिर्जना गर्ने प्रेरणा प्राप्त गरेका हुन् ।

२०१५ सालमा 'व्रतबन्ध' शीर्षकको निबन्ध लिएर निबन्धयात्राको आरम्भ गर्ने भट्टका प्रकाशित निबन्धहरूको अध्ययनबाट उनको निबन्धयात्रालाई तीन चरणमा विभाजन गरिएको छ । प्रथम चरण २०१५-२०२९ का निबन्धकार भट्ट पत्र-पत्रिकामा प्रकाशित निबन्धहरूमा निबन्ध लेखनको आरम्भिक अवस्थामा देखा पर्दछन् । उनका यस चरणमा निबन्धहरू समसामयिक विषयवस्तुमा आधारित छन् । २०३०-२०५१ सालसम्मको अवधि उनको निबन्ध यात्राको द्वितीय चरण हो । यस अवधिमा उनले सर्वाधिक निबन्धहरू लेखेका छन् । कथ्यका दृष्टिले यस अवधिको निबन्धहरूमा भौतिकवादी, यथार्थवादी र जीवनवादी दृष्टिकोण पाइन्छ । सामान्य विषयलाई पनि नवीन पाराले प्रस्तुत गर्ने शैलीले उनका यस चरणका निबन्धहरू उत्कृष्ट बन्न पुगेका छन् । २०५२ देखि वर्तमानसम्मको अवधि उनको निबन्धयात्राको तृतीय चरण हो । यस अवधिको उनका निबन्धहरूमा बौद्धिक तार्किक र वैचारिक अभिव्यक्ति पाइन्छ ।

विषयगत दृष्टिबाट भट्टको निबन्धकारितालाई हेर्दा उनी विविध विषयका प्रयोक्ताका रूपमा देखा पर्दछन् । साहित्य, जीवन-जगत, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्र, प्रकृति सौन्दर्य, शिक्षा जस्ता विषयलाई आफ्ना निबन्धको विषयवस्तु बनाएको पाइन्छ । उपर्युक्त विषयवस्तुको चयन गरेर पनि भट्टले यी विविध पक्षलाई सामाजिक धरातलबाट हेर्ने प्रयास गरेका छन् । निबन्धलेखनका क्रममा विषयको चयन गरेपछि त्यसलाई वैयक्तिक आत्मरागमा मुछ्दै जीवनका सुख-दुःख र हाँसो आँशुहरू व्यक्त गर्ने कार्यमा उनको रुचि देखिन्छ र विभिन्न विषय सम्बन्धि आफ्ना निजी दृष्टिकोणहरू आत्मपरक शैलीमा प्रस्तुत

गर्नु उनको महत्त्वपूर्ण निबन्धात्मक प्रवृत्ति हो । निबन्धकार भट्टको निजी विचारहरूलाई आफ्नै जीवन र अनुभवका आधारमा पुष्टि गर्ने उनको कला निकै सशक्त बन्न पुगेको छ । समाजको यथार्थ स्थितिको चित्रण गर्ने क्रममा समाजमा देखिने भेदभाव, खिचातानी, अशिक्षा, अज्ञानता, शोषण, दमन, अन्धविश्वास, आडम्बर आदि विविध प्रसङ्गलाई प्रस्तुत गर्दै ती विकृति र विसङ्गतिले समाजमा उब्जाएका बेमेलका स्थितिलाई प्रस्तुत गरेका छन् । उनले समाजमा विद्यमान आर्थिक समस्यालाई राम्रोसँग प्रस्तुत गरेका छन् र समाजको समुन्नतिका लागि आफ्ना धारणाहरू समेत प्रस्तुत गरेका छन् । मार्क्सवादी चिन्तनका पक्षधर भट्टले समाजमा व्याप्त अन्धविश्वास आडम्बर रुढि अन्धपरम्परा आदिलाई भौतिकवादी कोणबाट प्रस्तुत गरेका छन् । प्रगतिशील चिन्तनधारामा आस्थावान निबन्धकार भट्टका निबन्धमा भौतिकवादी यथार्थवादी र जनवादी दृष्टिकोण पाइन्छ । उनले सचेत ढङ्गले वैज्ञानिक प्रक्रिया र पद्धतिका आधारमा समाज परिवर्तनको घोषणा गरेका छन् र सबै वर्गलाई यस क्रियामा सामेल हुन आह्वान गर्छन् । उनले आफ्ना निबन्धमा सामाजिक बेमेलहरूलाई पनि देखाएका छन् त्यसैले भट्ट मूलतः मार्क्सवादी चिन्तनद्वारा प्रभावित प्रगतिवादी निबन्धकार हुन् । उनका 'नौलो बिहान', 'के हामी आशावादी पाइलो सार्न सक्छौं?', 'लोग्ने मान्छे स्वास्नी मान्छे', 'व्यक्तित्व विकास', 'गतिशीलता र चञ्चलता आदिजस्ता निबन्धहरूमा प्रगतिवादी स्वर मुखरित भएको पाइन्छ । वस्तुका माध्यमबाट आफ्ना भावना र स्वयम् आफैलाई प्रस्तुत गर्ने नवीन कलाले भट्ट नेपाली साहित्यमा सफल निबन्धकारका रूपमा देखिएका छन् ।

आनन्ददेव भट्टको विचार र भावनाको सन्तुलन अर्को निबन्धात्मक प्रवृत्ति हो । भट्ट बौद्धिक तार्किक र वैचारिक अभिव्यक्ति दिने निबन्धकार हुन् । निजी विचारको पुष्टिका लागि विभिन्न तर्क, पक्ष-विपक्षका सवाल एवम् कार्यकारण सृङ्खला मिलाएका छन् । वस्तुले उब्जाएका भावना र जीवनबाट प्राप्त अनुभवका सेरोफेरोमा रहेर उनले विचारको पुष्टि गरेका छन् । वैयक्तिक जीवनमा देखे-भोगेका सामान्य कुरालाई पनि विशेष रूपमा प्रस्तुत गर्नाले र भावनाका माध्यमबाट नै गम्भीर चिन्तन दिन सक्नाले भट्ट सफल देखिएका छन् ।

सरल, सहज र स्वाभाविक भाषाशैलीमा सर्वसाधारण पाठकले बुझ्ने गरी निबन्धको सृजना गर्नु उनको भाषाशैलीगत विशेषता हो । उनको भाषाशैलीगत सरलता, सहजता र विषयगत नवीनताकै कारणले गर्दा उनका निबन्धहरू शिक्षित र साक्षार दुबै खाले पाठकले उत्तिकै रुचाउँछन् । विचारको तहसम्म पुग्नु भन्दा अघि नै उनको शैलीले पाठकलाई मोहित बनाउन सक्छ । सरल भाषाशैलीमा आफ्नो विचार अभिव्यक्त गर्न सक्ने कुशल समालोचकीय क्षमता उनको शैलीगत विशेषता हो । सामान्य विषयलाई पनि नवीन पाराले

प्रस्तुत गर्ने शैली उनमा पाइन्छ । भट्टले प्रायः लघु आयामका निबन्धहरू सिर्जना गरेका छन् । उनका निबन्धमा 'एक थुकी सुकी हजार थुकी नदी' (नौलो विहान, पृ. १६), 'म ताक्छु मुठो बञ्चरो ताक्छु घुँडो' (स्मरण शक्ति, पृ. ४०), 'जस्तालाई त्यस्तै ढिडोलाई निस्तै' (इमानदारी, पृ. ५९) जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग गरिएको छ । भाषिक प्रयोगका सन्दर्भमा उनका निबन्धलाई हेर्दा उनले लुजफिट, मिसफिट, फ्लयास लाइट, क्युविजम, एक्सट्रयाक्ट, आर्ट, पिकासो जस्ता अनेक आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग गरेका छन् । उनका निबन्धमा शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कारका साथै कुनै कुनै ठाउँमा अनुप्रासको पनि प्रयोग गरिएको पाइन्छ । त्यसैले उनको प्रयुक्त भाषाशैली निकै सजीव, मार्मिक, सरल एवम् हृदयग्राही बन्न पुगेको छ ।

निष्कर्षका रूपमा भन्नुपर्दा आधुनिक नेपाली निबन्धको तेस्रो चरणमा देखा परेका भट्ट विविध विषयवस्तुलाई सहज रूपमा प्रस्तुत गर्दै विचार र भावनालाई सन्तुलनमा राखेर अनौपचारिक वार्तालापीय शैलीमा नियन्त्रित अभिव्यक्ति दिने एक सशक्त आत्मपरक निबन्धकारका रूपमा देखा पर्दछन् । आत्माको प्रतिपादनका दृष्टिले उनका निबन्धहरू सफल देखिन्छन् । हार्दिकताभन्दा बौद्धिकताको प्रयोग गर्न रुचाउने भट्ट भाषाका दृष्टिले हेर्दा सहज, सरल र स्वाभाविक भाषाशैलीको प्रयोग गर्ने निबन्धकारका रूपमा देखिन्छन् । निबन्धहरूको स्तरगत मूल्याङ्कनका हिसावले उनलाई उच्च मध्यम खालका निबन्धकारहरूको कोटिमा राख्न सकिन्छ ।

### सम्भाव्य शोधशीर्षकहरू

- क) आनन्ददेव भट्टका निबन्धमा प्रतिबिम्बित विचार पक्ष
- ख) 'केही आत्मपरक निबन्धहरू' सङ्ग्रहको कृतिपरक अध्ययन

## सन्दर्भग्रन्थसूची

### क) पुस्तकसूची

अधिकारी, रामलाल (ई. १९७५), नेपाली निबन्धयात्रा, दार्जीलिङ : नेपाली साहित्य सञ्चयिका ।

उपाध्याय, केशवप्रसाद (२०५९), साहित्य प्रकाश, छैटौं संस्करण, काठमाडौं : रत्नपुस्तक भण्डार ।

ओझा, दशरथ (ई. १९७५), समीक्षाशास्त्र, दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्स ।

थापा, हिमांशु (२०३०), साहित्य परिचय, दोस्रो संस्करण, काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।

देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद (२०४९), लक्ष्मी निबन्धसङ्ग्रह, बाह्रौं संस्करण, काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।

द्विवेदी, हरिनाथ (ई. १९७१), निबन्ध सिद्धान्त और प्रयोग, पटना विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।

नलिन, जयनाथ (ई. ३९६४) हिन्दी निबन्धकार, दोस्रो संस्करण, दिल्ली : आत्मराम एण्ड सन्स ।

पिग्विन, रोबर्ट (ई. १९९०), द न्यू इन्साइक्लोपेडिया ब्रिटानिका भोलम ४, पन्द्रौं संस्करण, अमेरिकी युनिभर्सिटी अफ सिकागो ।

पोखरेल, बालकृष्ण (२०२७), कलेजस्तरका निबन्ध निबन्ध, काठमाडौं : सहयोगी प्रकाशन ।

प्रधान, भिक्टर (२०४४), नेपाली जीवनी र आत्मकथाको सैद्धान्तिक तथा ऐतिहासिक विवेचना, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।

प्रसाद, विश्वनाथ (ई. १९७३), कला एवं साहित्य : प्रवृत्ति और परम्परा, पटना : विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।

बराल, ईश्वर (सम्पा.) (२०३०), सयपत्री, तेस्रो संस्करण, काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।

भट्टोजिदीक्षित (२०४३), वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, छैटौं संस्करण, वाराणसी : चौखम्ब अमरभारती प्रकाशन ।

वर्मा, धीरेन्द्र (सम्पा.) (२०२०), हिन्दी शब्दकोश, दोस्रो संस्करण, दिल्ली ज्ञानमण्डल लिमिटेड ।

वैदिक, वेदवति (सम्पा.) (ई. १९९८), श्रीमद्भगवद्गीता, तेस्रो संस्करण, नयाँदिल्ली : ऋचा प्रकाशन ।

शर्मा, गोपीकृष्ण (२०४६), नेपाली निबन्ध परिचय, चौथो संस्करण, काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार  
।

शर्मा, तारानाथ (२०५१), नेपाली साहित्यको इतिहास, तेस्रो संस्करण, काठमाडौं : नवीन प्रकाशन ।

शिवाकोटी, शेषराज (सम्पा) (२०६४), आनन्ददेव भट्ट अक्षरको अभिवादन, काठमाडौं : ज्ञानगुण  
साहित्य प्रतिष्ठान ।

शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र (२०१८), हिन्दी साहित्यका इतिहास, तेह्रौं संस्करण, दिल्ली : अक्सफोर्ड  
युनिभर्सिटी प्रेस ।

श्रेष्ठ, दयाराम र मोहनराज शर्मा (२०६३), नेपाली साहित्यको संक्षिप्त इतिहास, आठौं संस्करण,  
काठमाडौं : साभ्का प्रकाशन ।

सुवेदी, राजेन्द्र (२०४९), स्रष्टा-सृष्टि : द्रष्टा-दृष्टि, द्वितीय संस्करण, काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार  
।

सुवेदी, राजेन्द्र (२०५६), स्नातकोत्तर नेपाली निबन्ध, तेस्रो संस्करण, काठमाडौं : पाठ्यसामग्री पसल  
।

स्कल्स, रवर्ट (सम्पा) (ई. १९७९) इलिमेन्ट अफ लिटरेचर, चौथो संस्करण, दिल्ली : अक्सफोर्ड  
युनिभर्सिटी प्रेस ।

ख) पत्रिकासूची

अधिकारी, रविलाल (२०४७) 'नेपाली निबन्धको विकास', गरिमा, वर्ष १३, अङ्क १२, पूर्णाङ्क १००,  
पृ. ६५ ।

भट्ट, आनन्ददेव (२०१५) 'व्रतबन्ध', धरती, वर्ष ३ अङ्क ?

\_\_\_\_\_ (२०१९) 'कामवासना र जीवन', रूपरेखा, वर्ष ३ अङ्क ८, पृ. २५-२९, ३२ ।

\_\_\_\_\_ (२०२०) 'नमस्कार' रूपरेखा, वर्ष ४, अङ्क ८, पूर्णाङ्क ३२ पृ. १७-२३ ।

\_\_\_\_\_ (२०२२) 'नदीका वारपार', मालिङ्गो, वर्ष ?, अङ्क ?, पृ. १६-१८ ।

- \_\_\_\_\_ (२०२३) 'एउटा प्रश्न', रत्नश्री, वर्ष ४, अङ्क ३, पृ. २१-२३ ।
- \_\_\_\_\_ (२०२५), 'त्यो तारा जो मेरो पोल्टोमा ओर्लिहाल्यो', प्रकाशपुञ्ज, पृ. ६०- ६६ ।
- \_\_\_\_\_ (२०३०) 'प्रतिभा र जीवन पद्धति', मधुपर्क, वर्ष ६, अङ्क ७, पृ. २५-२६ ।
- \_\_\_\_\_ (२०३१) 'बन्धन र मुक्ति', रत्नश्री, पृ. ५७-५८ ।
- \_\_\_\_\_ (२०३२), 'कृष्ठाका विरुद्ध', मधुपर्क, वर्ष ७, अङ्क १२, वैशाख, पृ. ३-६ ।
- \_\_\_\_\_ (२०३५), 'काम, माम र नाम', श्रृङ्खला, धारा ३, पुष, पृ. १-४ ।
- \_\_\_\_\_ (२०३५), 'अध्यात्म' सुमन पुष्प २ पल्लव १०, पृ. ३-७ ।
- \_\_\_\_\_ (२०४३), 'उपवास' गरिमा, वर्ष ४ अङ्क ७, पूर्णाङ्क ४३ असार, पृ. ३९- ४२ ।
- \_\_\_\_\_ (२०४५) 'सत्यम्, शिवम् सुन्दरम्' जनमत, वर्ष ६, अङ्क ३-४, पृ. ५-८ ।
- \_\_\_\_\_ (२०४५) 'मृत्यु पनि यति सरल हुन सक्तो रहेछ', नियोजन वर्ष १८, अङ्क ३, पृ. ६५-६७ ।
- \_\_\_\_\_ (२०४६), 'मानव समूह' मधुपर्क, वर्ष २२, अङ्क ६, पूर्णाङ्क २४५, पृ. ३१-३२ ।
- \_\_\_\_\_ (२०४९) 'साहित्यमा चिन्तन' गोधूलि, अङ्क २२, पृ. ६५-६८ ।
- \_\_\_\_\_ (२०५२), 'रूख र जङ्गल' गरिमा वर्ष १३, अङ्क १२, पूर्णाङ्क १५६, मङ्सिर पृ. १६-१८ ।
- \_\_\_\_\_ (२०५६) 'लेखक बन्ने इच्छा' गरिमा वर्ष १७, अङ्क १२, पूर्णाङ्क २०४ मङ्सिर पृ. २८-३० ।
- \_\_\_\_\_ (२०५९) 'जीवनको लक्ष्य', दोभान वर्ष ३, अङ्क ३, पृ. ७-१० ।
- \_\_\_\_\_ (२०६४, २०६५), एउटा लोकतान्त्रिक छलफल, शारदा, वर्ष १ अङ्क ९ असोज र मधुपर्क वर्ष ४१ अङ्क ५, पूर्णाङ्क ४७२ असोज ।
- \_\_\_\_\_ (२०६४) 'काम गर तर फलको आशा नराख' शारदा, वर्ष २, अङ्क ३, पृ. १३-१६ ।
- \_\_\_\_\_ (२०६५) 'न खाइ सके न थाइ सक्के' मिर्मिरे वर्ष ३७, अङ्क ४, पूर्णाङ्क २७५, पृ. ६-८ ।

\_\_\_\_\_ (२०६५) 'गतिशीलता र चञ्चलता' गरिमा वर्ष २६, अङ्क ९, पूर्णाङ्क ३०९, पृ.  
६५-६८ ।

ग) शोधपत्रसूची

अधिकारी, इन्दिरा (२०४६), आनन्ददेव भट्टको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व, अप्रकाशित, स्नातकोत्तर  
शोधपत्र, त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभाग ।

ओभा, रामनाथ (२०४९), शङ्कर लामिछानेको निबन्धकारिता, अप्रकाशित, स्नातकोत्तर शोधपत्र,  
त्रि.वि. नेपाली केन्द्रीय विभाग ।

तिमिल्सिना, मोहनप्रसाद (२०४१), नेपाली निबन्धको चरण निर्धारण र चरणगत वैशिष्ट्यको  
विश्लेषण, अप्रकाशित, लघुअनुसन्धान प्रतिवेदन, त्रि.वि. मानविकी तथा सामाजिक  
शास्त्र अध्ययन संस्थान ।